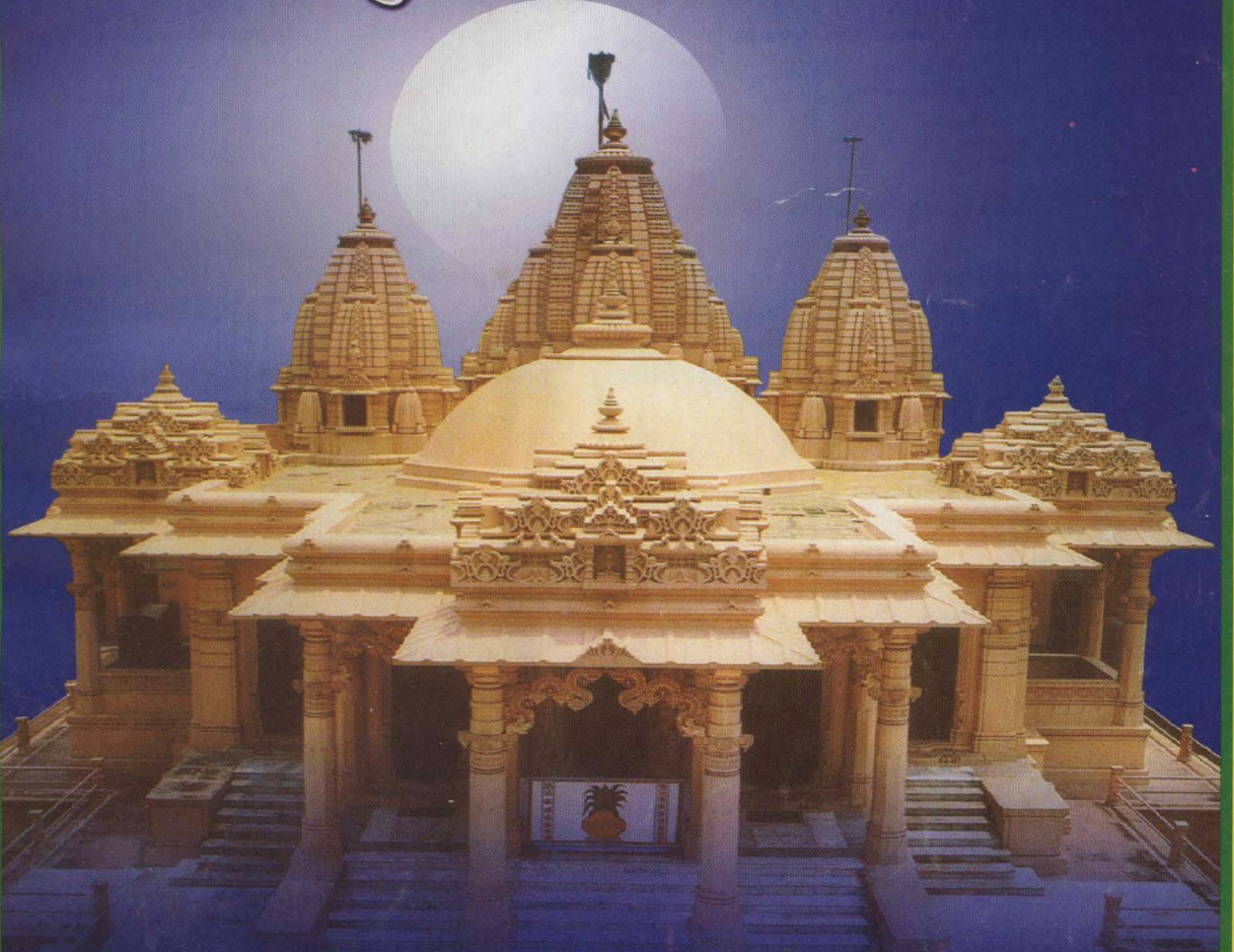


# जिनभाषित

वीर निर्वाण सं. 2528

हरिस्तनापुर तीर्थ



दोनों पूजापद्धतियाँ आगमसम्मत

पाउचों की सुन्दरता में मीठा जहर पान मसाला

वैशाख, वि. सं. 2059

मई 2002

## जिनभाषित

मई 2002

मासिक

वर्ष 1, अङ्क 4

## सम्पादक

डॉ. रतनचन्द्र जैन

## कार्यालय

137, आराधना नगर,  
भोपाल- 462003 (म.प्र.)  
फोन नं. 0755-776666

## सहयोगी सम्पादक

पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया  
पं. रतनलाल बैनाड़ा  
डॉ. शीतलचन्द्र जैन  
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन  
प्रो. वृषभ प्रसाद जैन  
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती'

## शिरोमणि संरक्षक

श्री रतनलाल कँवरीलाल पाटनी  
(मे. आर.के.मार्बल्स लि.)  
किशनगढ़ (राज.)  
श्री गणेश राणा, जयपुर

## द्रव्य-औदाय

श्री गणेशप्रसाद राणा  
जयपुर

## प्रकाशक

सर्वोदय जैन विद्यापीठ  
1/205, प्रोफेसर्स कॉलोनी,  
आगरा-282002 (उ.प्र.)  
फोन : 0562-351428, 352278

## सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक	5,00,000 रु.
परम संरक्षक	51,000 रु.
संरक्षक	5,000 रु.
आजीवन	500 रु.
वार्षिक	100 रु.
एक प्रति	10 रु.

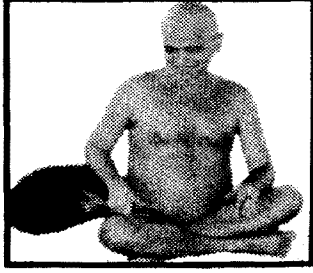
सदस्यता शुल्क प्रकाशक को भेजें।

## अन्तस्तत्त्व

पृष्ठ

◆ आपके पत्र: धन्यवाद		2
◆ सम्पादकीय : दोनों पूजापद्धतियों आगमसम्मत		4
◆ लेख		
● जैनधर्म की ऐतिहासिकता	: कैलाश मड़वैया	6
● जैन जीवनदर्शन और समाज	: डॉ. प्रेमचन्द्र रांवका	8
● पाउचों की सुन्दरता.....	: श्रीपाल जैन 'दिवा'	10
◆ जिज्ञासा समाधान	: पं. रतनलाल बैनाड़ा	14
◆ ग्रन्थ समीक्षा : महायोगी महावीर	: कपूरचन्द्र बंसल	16
◆ व्यंग्य : लो मैं आ गया	: शिखरचन्द्र जैन	17
◆ प्राकृतिक चिकित्सा :		
स्वास्थ्य-सौन्दर्य नाशक मोटापा	: डॉ. रेखा जैन	20
◆ संस्मरण : अतीत के झरोखे से	: डी.सी. जैन	22
◆ वैराग्य भावना : अर्थ	: ब्र. महेश	23
◆ कविताएँ		
● वसुधैव कुटुम्बकम्	: आचार्यश्री विद्यासागर जी	1
● नम्बर दो	: सरोजकुमार	1
● गुरुवर सुधासागर	: अशोक धानोत्या	13
● राजुल गीत	: श्रीपाल जैन 'दिवा'	13
● तुम जैसा ही बन जाऊँ	: डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर'	19
● उड़ गई सोनचिरैया	: लालचन्द्र जैन 'राकेश'	19
● सूरज की कोई परिपाटी	: अशोक शर्मा	25
◆ समाचार		9, 25-32. आवरण 3

## वसुधैव कुटुम्बकम्



आचार्य श्री विद्यासागर जी

‘वसुधैव कुटुम्बकम्’

इस व्यक्तित्व का दर्शन-

स्वाद-महसूस

इन आँखों को

सुलभ नहीं रहा अब .... !

यदि वह सुलभ भी है

तो भारत में नहीं,

महा-भारत में देखो !

भारत में दर्शन स्वारथ का होता है।

हाँ-हाँ!

इतना अवश्य परिवर्तन हुआ है

कि

“वसुधैव कुटुम्बकम्”

इसका आधुनिकीकरण हुआ है

वसु यानि धन-द्रव्य

धन ही कुटुम्ब बन गया है

धन ही मुकुट बन गया है जीवन का।

‘मूकमाटी’ महाकाव्य से साभार

नमोऽस्तु

## नम्बर दो

सरोज कुमार

नम्बर दो की कमाई से

मंदिर नहीं बनना चाहिए,

मेरे ये विचार सुन

चौधरी उत्तेजित हो गया।

बोला, भाई साहब

नम्बर दो का पैसा कमाना सरल काम नहीं है

सारी आँखों से बचाकर

सारे कानूनों से छिपाकर

गुपचुप में, चुपचुप में

करिश्में से कमा पाता है कोई नम्बर दो।

फिर वह मेरी और हिकारत से कुछ इस तरह

देखता रहा

मानो कह रहा हो-

ये दो कौड़ी का मास्टर

क्या खाक समझेगा, क्या होता है नम्बर दो।

फिर बोला-

आप तो माट्टसाब,

बस उत्तर पुस्तिकाओं में नम्बर दो.....।

‘मनोरम’

37, पत्रकार कालोनी,  
इन्दौर ( म.प्र. )-452001

# आपके पत्र, धन्यवाद : सुझाव शिरोधार्य

सामाजिक परिवेश के साथ जैन धर्म दर्शन की अनूठी छाप लिए 'जिनभाषित' पत्रिका के जनवरी तथा मार्च 2002 अंक प्राप्त हुए। दोनों ही अंक सुरुचिपूर्ण, तथ्यात्मक पाठनीय सामग्री से ओतप्रोत हैं। "शंका-समाधान" स्तम्भ एक अत्यन्त अनूठा एवं ज्ञानवर्धक प्रयास है। सम्पादकीय कथन/लेख, साहसिक, अत्यधिक रोचक एवं धार्मिक टिप्पणियों से लबालब है। आपके तथा सभी सम्पादक बन्धुओं के मार्गदर्शन से पत्रिका में निरन्तर निखार आ रहा है। साहित्यिक रचनाएँ इसमें मोती के समान प्रतिबिम्बित जान पड़ती हैं। पत्रिका की निरन्तर उन्नति में आप सभी का योगदान प्रशंसनीय है। आप सभी को बधाई।

डॉ. रश्मि जैन  
प्रवक्ता हिन्दी,

52/12, लेबर कालोनी, फिरोजाबाद-283203 (उ.प्र.)

'जिनभाषित' मुझे नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। लगभग सभी अङ्कों में सम्पादकीय लेख अत्यधिक ज्ञानवर्धक होते हैं। अन्य लेखों का भी स्तर काफी अच्छा पाया। इन सबके लिए बधाई।

डी.सी. जैन  
ई-2/162, अरेरा कॉलोनी,  
भोपाल (म.प्र.)-462016

'जिनभाषित' पत्रिका साहित्य की सभी विधाओं को अपने में समेटे हुए जनमानस तक पहुँच रही है। सभी ने सराहा फरवरी 2002 के अंक में छपी एक ऐसे अनूठे व्यक्तित्व (पूज्य क्षमासागर जी) की कविता 'एहसास' को, जिसने पूरे जैन जगत को अपनी आत्मीयता की डोर में पिरो लिया है कि-

संवेदनाओं ने मुझे जहाँ से छुआ,

मैं वहीं से

पिघलता चला गया

कोई चाहे जो सोचे पर

यह तो एक एहसास था।

सच तो यह है कि जो व्यक्ति जितना संवेदनशील होगा, आत्मीयता भी उसी की धरोहर होगी।

मेरे बारम्बार नमन इन चरणों को।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सरोजकुमार जी की कविताएँ प्रत्येक अङ्क में पढ़ रही हूँ। "मंदिर में मुनियों को वंदना करते देखकर" कविता तो पाठक को भक्ति रस में डुबो देती है कि

भक्ति और सिद्धि के रंग

आपस में मिलकर, रंगारंग

इन्द्रधनुष बन गये थे।

भाव, भक्ति और शब्दों का अद्भुत समन्वय है, इस कविता

में। कविवर को मेरा प्रणाम।

अरुणा जैन

C 2/20/2:4, Sec.16,

वाशी नगर, नवी मुम्बई (महाराष्ट्र)

'जिनभाषित' पत्रिका मुझे प्राप्त हो रही है। जिसके लिये मैं आप सबका अत्यन्त आभारी हूँ। पत्रिका में जो भी सामग्री आप प्रकाशित कर रहे हैं, वह आवश्यक एवं प्रेरणादायक होती है। इसके लिये आप सभी बधाई के पात्र हैं।

भगताराम जैन

3/50, गली मामन जमादार,

पहाडी धीरज, दिल्ली-6

जिनभाषित मार्च 2002 अंक मिला। पृष्ठ 23 पर प्रकाशित 'अहिंसा' शीर्षक श्रेष्ठ पुस्तक पर 51000/- के पुरस्कार की घोषणा के विज्ञप्ति बिन्दु 8 पर ध्यानाकर्षित करना चाहूँगा, जिसमें उल्लेखित है कि पुस्तक के प्रकाशन-वितरण व अन्य भाषाओं में अनुवाद के सम्पूर्ण अधिकार समिति के होंगे और लेखक को कोई रायल्टी नहीं दी जाएगी।

जरा सोचिए! 51000/- का यह घोषित पुरस्कार पारिश्रमिक हुआ या पुरस्कार! यह तो लेखक का शोषण है। ऐसी प्रवृत्ति के कारण ही आज तक हमारा समाज अहिंसा विषयक कोई स्तरीय कृति उपलब्ध नहीं करा सका, जिसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर तो क्या, राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त हो।

जैन समाज से अपेक्षा है कि इस प्रकार लेखक का शोषण करने की प्रवृत्ति को लगाम दे और अहिंसात्मक भावना के अनुरूप पहल करते हुए पुरस्कार दे। पुस्तक की रायल्टी प्राप्त करना लेखक का जन्मसिद्ध अधिकार है।

इसी प्रकार ब्र. महेश जैन का लेख 'आहार दान की विसंगतियाँ' संदर्भित समस्या को उजागर तो करता है, परन्तु यह आहार व्यवस्था मूलतः धन पर निर्भर है और वह धन कैसा होना चाहिए, इस पर लेखक ने टिप्पणी नहीं की। परम्परानुसार न्यायोपात धन से आहार व्यवस्था होनी चाहिए, जिसका आज प्रायः अभाव है। विसंगतियों के समाधान के प्रसंग से यह भी ध्वनित होता है कि श्रमण संघ ग्रामोन्मुखी हों, परन्तु आज तो शहरीकरण की आँधी में ग्राम भी शहर की तरह हो रहे हैं, तो क्या श्रमणों को वन-वासी होना चाहिए? ऐसी स्थिति में उनकी आहारचर्या की व्यवस्था किस प्रकार होगी? यह यक्ष प्रश्न है, जिसका समाधान होना चाहिए।

पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल है।

सुभाष जैन,

वीर सेवा मंदिर, जैन दर्शन शोध-संस्थान,

21, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

'जिनभाषित' पत्रिका का एक अङ्क अनायास देखकर आत्मा की आवाज पर मैं इसका आजीवन सदस्य बन गया। इसके प्रत्येक अङ्क में धर्ममय विषयसामग्री, ज्ञानवर्धक व उपयोगी लेख के साथ-साथ आचार्यों, मुनियों व विद्वानों के लेख पढ़ने को मिलते हैं। इसी कारण यह पत्रिका हमारे परिवार में सभी को अत्यधिक प्रिय है एवं यह आत्मकल्याण में सहायक सिद्ध हो रही है।

सि. हुकुमचन्द्र जैन 'कंचन'  
सिंघई सदन, दुबे चौक,  
मऊरानीपुर ( झाँसी )

'जिनभाषित' मार्च 2002 अङ्क बहुत अच्छा लगा। वैसे तो प्रत्येक अङ्क ही अपने आप में जिनेन्द्र भगवान् द्वारा कहे गए वचनों की गौरवगाथा के रूप में उपस्थित होता है, किन्तु इस अङ्क में प्रकाशित मुनिश्री समतासागरजी द्वारा रचित 'भक्तामर दोहानुवाद' वास्तव में एक अनुपम रचना है। युगों पूर्व पूज्य मुनिश्री मानतुंगाचार्य द्वारा रचित 'भक्तामर स्तोत्र' का सामान्यजन की भाषा व प्रचलित शैली में दोहानुवाद करना एक महान् कार्य है। जैसा कि आपने लिखा है कि दोहों में तुलसी, रहीम, भूधरदास आदि के व्यक्तित्व की झलक मिलती है और गागर में सागर भरने के समान इसमें भावों व हृदय के उद्गारों को सहज रूप में ही प्रकट किया गया है।

इस अनुपम व अनमोल रचना के लिये मुनिश्री के चरणों में वारंवार वंदन एवं प्रकाशन हेतु आपको भी अनेकानेक धन्यवाद। पत्रिका में परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी का प्रवचन 'ममकार और अहंकार छोड़ने का नाम है दीक्षा' एवं मूकमाटी के अंश 'सही पुरुषार्थ' भी पठनीय व जीवोपयोगी हैं।

पत्रिका का सम्पादकीय आज के भौतिक युग में बदलते पारिवारिक परिवेश के वातावरण में चिंता की दिशा प्रदान करता है। वास्तव में आधुनिक रहन-सहन व सामाजिक वातावरण में जिनधर्म ही हमारा सच्चा हितैषी हो सकता है। इस कार्य में 'जिनभाषित' पत्रिका ही हमारा मार्गदर्शन कर सकती है। सुन्दर प्रकाशन व उपयोगी सामग्री के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद।

रोहित कुमार जैन  
9, द्वारिका पुरी, इन्द्रा नगर,  
लखनऊ ( उ.प्र. )

पत्रिका का फरवरी 02 अङ्क पढ़ा। सामग्री पठनीय होने

के साथ-साथ विमर्श को आधार देती है। इस अंक का सम्पादकीय समाज के यथार्थ का चित्रण करता है, यह प्रयास सराहनीय है। लोग ऐसे लेख पढ़कर स्वयं का आकलन करें और सही मार्ग पर आ जाएँ तो हमारे लेखन की सार्थकता बढ़ेगी।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों की समीक्षा के रूप में पाठकों की ओर से प्रकाशित सुझावों को भी गंभीरतापूर्वक स्वीकार कर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें ऐसे विचारवान् पाठकों से यह आग्रह भी करना चाहिए कि वे न केवल चिंता प्रकट करें, अपितु एक कदम आगे बढ़ाते हुए सार्थक प्रयास भी करें। समाज सुधार की प्रक्रिया जटिल और संघर्षपूर्ण होती है। लोकमान्यता के अनुरूप चलने में कोई कष्ट नहीं होता, लेकिन धारा के विपरीत बहने में शक्ति ज्यादा लगाना स्वाभाविक है। आज का समाज सबके साथ चलने का हामी हो गया है, चाहे लोग गलत मार्ग पर ही क्यों न चल पड़े हों। संत कबीर की वाणी में इसे 'भेड़चाल' कह सकते हैं। इस प्रक्रिया का अंत यदि समझ लें, तो नये विचार की प्रक्रिया शुरु होती है।

आपने 'जिनभाषित' को बहुआयामी बनाने का प्रयास किया है। अन्य पत्रिकाओं के मुकाबले में आज एक ऐसी विचारवान् पत्रिका की आवश्यकता थी। यद्यपि अभी हम सम्यक् रूप से समाज का विश्लेषण करने और सभी को एकसूत्र में बाँधने का सार्थक तरीका खोज पाने में सफल नहीं है, फिर भी आशा की जानी चाहिए कि शनैःशनैः हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

पत्रिका में प्रकाशित आचार्यश्री के प्रवचनों को पढ़ा है। आचार्यश्री स्वयं कहते हैं- "पंचकल्याणक राग-रंग के लिए नहीं, वीतरागता के लिए होने चाहिए।" हमें यह चिंतन करना ही होगा कि क्या हम आचार्यश्री की भावना के पोषण की ओर बढ़ रहे हैं या पंचकल्याणक वाहवाही के प्रतीक बन गये हैं, राशि संग्रहण के माध्यम बन गये हैं, समाज में प्रतिष्ठा के प्रतिरूप बन गये हैं, लोकरंजन को प्रदर्शित करते हैं। यही वह बिन्दु है, जहाँ हमें पुनः कबीर वाणी को सामने रखना होगा कि- "एक गिरा ज्यों खाँड में, सबै ताहिं गिर जाएँ।" आचार्यश्री ने भ्रूणहत्या (गर्भपात) की ओर चिंता प्रकट की है-क्या हमारा ध्यान इस ओर है? असल में हम सुनते आचार्यश्री की है, पर करते मनमानी है। यही विसंगति है।

दामोदर जैन  
टीकमगढ़ ( म.प्र. )

ज्ञानदीप तपतेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।  
या विध बिन निकसें नहीं पैठे पूरब चोर ॥

धनकनकंचन राजसुख, सबहिं सुलभकर जान।  
दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान ॥

जाँचे सुरतरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।  
बिन जाचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन ॥

# दोनों पूजापद्धतियाँ आगमसम्मत

वर्तमान में जैनधर्म में दो पूजा-पद्धतियाँ प्रचलित हैं। एक में जिनप्रतिमा के समक्ष सचित्त पुष्प, सचित्त फल और पक्वान्न चढ़ाए जाते हैं, प्रतिमा पर चन्दनलेप किया जाता है, दीप प्रज्वलित कर आरती की जाती है और भगवान् के सामने सुगन्ध उत्पन्न करने के लिए अग्नि में धूप जलाई जाती है। दूसरी पूजापद्धति में सचित्त पुष्पों के स्थान पर चावल, सचित्त फलों के स्थान पर सूखे नारियल और मेवे अर्पित किये जाते हैं। पक्वान्न के स्थान में नारियल की सफेद चिटकें और दीप के स्थान में पीली चिटकें चढ़ायी जाती हैं। अग्नि में धूप जलाने का निषेध है। वह अन्य द्रव्यों के समान थाली में ही अर्पित की जाती है अथवा उसके स्थान में लौंग चढ़ाने का विधान है।

वर्तमान में पहली पूजापद्धति बीसपन्थी पूजापद्धति के नाम से प्रसिद्ध है और दूसरी तेरहपन्थी पूजापद्धति के नाम से। तेरहपन्थ और बीसपन्थ ये दोनों नाम किसी भी जैनशास्त्र में उपलब्ध नहीं हैं। ये हिन्दी भाषा के शब्द हैं और आज से चारसौ वर्ष पहले जब आगरा के प्रसिद्ध जैन विद्वान पं. बनारसीदास जी ने पहले प्रकार की पूजापद्धति का विरोध कर दूसरे प्रकार की पूजापद्धति प्रचलित की थी, तब से प्रसिद्ध हुए हैं। (देखिए-सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र जी शास्त्री-कृत 'जैनधर्म' पृष्ठ ३०४)।

आज इन पूजापद्धतियों को लेकर जैनों में गहरा मतभेद दिखाई देता है। वे दो पन्थों में विभाजित हो गये हैं और दोनों एक-दूसरे की पूजापद्धति को गलत और आगमविरुद्ध कहते हैं तथा पूजापद्धति की भिन्नता के कारण एक-दूसरे को अस्पृश्य सा समझते हैं।

यह स्थिति चिन्तनीय है और जिनतीर्थ तथा जैनसंघ के लिए शुभ संकेत देनेवाली नहीं है। वस्तुतः दोनों पूजापद्धतियाँ आगमसम्मत हैं और जिस पद्धति को बीसपन्थी नाम दिया गया है, उसी का समस्त जैनशास्त्रों (श्रावकाचारों और पुराणों) में विधान है। छठी शताब्दी ई. के तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रन्थ के पंचम महाधिकार में लिखा है कि अष्टाह्निका पर्व में देवगण नन्दीश्वर द्वीप में जाते हैं और विविध प्रकार से जिनप्रतिमाओं की पूजा करते हैं। पहले सुवर्णकलशों में भरे हुए सुगन्धित जल से उनका अभिषेक करते हैं, पश्चात् कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, कालागरु और अन्य सुगन्धित द्रव्यों से उनका विलेपन करते हैं-

कुंकुमकप्पूरेहि चंदणकालागरूहि अण्णेहिं ।

ताणं विलेवणाइं ते कुव्वंते सुगंधगंधेहिं ॥१०५

तिलोयपण्णत्ति (पंचम महाधिकार) में यह भी लिखा है कि देव सेवन्ती, चम्पक, पुन्नाग, नाग आदि के पुष्पों की सुगन्धित

मालाओं, अनेक प्रकार के रसमय भोज्य पदार्थों, दिग्मण्डल को सुगन्धित करने वाली धूपों तथा दाख, अनार, केला, नारंगी, मातुलिंग, आम आदि पके हुए फलों से जिन प्रतिमाओं को पूजते हैं। यथा-

सयवंतराय चंपय-माला पुण्णाग-णाग-पहुदीहिं ।

अच्चंति ताओ देवा, सुरहीहिं कुसुम-मालाहिं ॥१०७

बहुविहरसवंतेहिं वरभक्खेहिं विचिच्चरूवेहिं ।

अमयसरच्छेहिं सुरा जिणिंद-पडमाओ महयंति ॥१०८

वासिददियंतरेहिं कालागरुपमुह-विविधधूवेहिं ।

परिमलिदमंदिरेहिं महयंति जिणिंदबिंबाणि ॥११०

दक्खा दाडिमकदली-णांगयमाहुलिंग चूदेहिं ।

अण्णेहिं पक्केहिं फलेहिं पूजंति जिणणाहं ॥१११

आचार्य समन्तभद्र ने 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' में बतलाया है कि एक मेंढक बावड़ी से कमलपुष्प लेकर, समवशरण में विराजमान भगवान् महावीर की पूजा करने के लिए जा रहा था। रास्ते में हाथी के पैर से दब जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई, किन्तु पूजानुराग से अर्जित पुण्य के प्रभाव से वह सौधर्म स्वर्ग का महाऋद्धिधारी देव बन गया (४/३०)

गुणभद्रकृत उत्तरपुराण (९वीं शताब्दी ई.) में वर्णन है कि जीवन्धरकुमार क्षेमदेश के 'क्षेम' नामक नगर में पहुँचे। वहाँ उन्होंने जैनमन्दिर के समीपवर्ती सरोवर में स्नान किया और सरोवर में उत्पन्न हुए बहुत से फूल लेकर जिनेन्द्र भगवान् की पूजा की-

तद्विलोक्य समुत्पन्नभक्तिः स्नानविशुद्धिभाक् ।

तत्सरोवरसम्भूतप्रसवैर्बहुभिर्जिनान् ॥ ७५/४०९

अभ्यर्च्यार्थ्यैर्मुदाव्यग्रमस्तोष्ट्रेष्ट्रेरभिष्ट्वैः ।

सुता तत्र सुभद्राख्यश्रेष्ठिनो निर्वृतेश्च सा ॥ ७५/४१०

वीरसेन स्वामी ने जयधवलाटीका में कहा है कि यद्यपि चौबीसों तीर्थकर हिंसा के कारणभूत दानपूजादि श्रावकधर्म का उपदेश देते हैं, क्योंकि जिनप्रतिमा का स्नान, अवलेपन, सम्मार्जन, पुष्पारोपण, धूपदहन आदि जीववध की कारणभूत क्रियाओं के बिना पूजा संभव नहीं है, तथापि उन्हें कर्मबन्ध नहीं होता, क्योंकि उनके मिथ्यात्व, असंयम और कषाय का अभाव होता है-

“पहवणोपलेवण-संमज्जण-छुहावणा-फुल्लरोवण-धूवदहणादि-वावारेहि जीववहाविणा-भावीहि विणा पूजाकरणाणुववत्तीदो च ।”(जयधवलासहित कसायपाहुड, भाग १, पृष्ठ ९१)

सचित्त पुष्प-फलों का पूजा में प्रयोग करने से जीवहिंसा होती है, किन्तु आचार्य समन्तभद्र ने कहा है कि हिंसा अल्प होती है, पुण्यबन्ध अधिक होता है, अतः पूजा से लाभ ही है, हानि

नहीं- 'सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ' (स्वयम्भूस्तोत्र)। जैसे मेंढक भगवान् की पूजा के लिए कमलपुष्प तोड़कर ले जा रहा था, इससे उसे हिंसा का पाप लगा होगा, किन्तु पुण्यबन्ध इतना अधिक हुआ कि वह उसके प्रभाव से सौधर्म स्वर्ग का महाऋद्धि-घारी देव हो गया।

इस तरह जिस सचित्तपुष्पादि से पूजा करने को बीसपन्थी पूजापद्धति नाम दिया गया है, वह आगमोक्त है।

किन्तु आगम में यह वचन भी नहीं है कि सचित्त-पुष्पादि ही पूजा की एकमात्र सामग्री है। भक्ति की अभिव्यक्ति अचित्त द्रव्यों के अर्पण से भी हो सकती है। इससे यह लाभ है कि पुण्य तो उतना ही अर्जित होगा, जितना सचित्तपूजा से हो सकता है, किन्तु हिंसा का पाप अल्प से अल्पतम हो जायेगा। इसीलिए आज से चार सौ वर्ष पहले आगरावासी पं. बनारसीदास जी के उद्बोधन से जैनों के एक वर्ग ने सचित्तपूजा, पक्कान्नपूजा, जिन प्रतिमा पर चन्दनविलेपन, दीपप्रज्वलन, धूपदहन आदि का परित्याग कर दिया और इसके स्थान पर पीताक्षतों, सफेद एवं पीली चिटकों, गीली धूप एवं सूखे फल तथा मेवों से पूजा की जाने लगी। इस परिवर्तन के कारण पं. बनारसीदास जी का चलाया पन्थ पहले वाणारसीमत, और बाद में तेरहपन्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ('जैनधर्म', पृष्ठ ३०४, सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्रजी शास्त्री)।

तेरहपन्थी पूजापद्धति जैनधर्म के प्राणभूत अहिंसा-सिद्धान्त के अनुरूप है, अतः यह भी जिनागमसम्मत है।

किन्तु वर्तमान में तेरहपन्थी जैन, शुद्ध तेरहपन्थी पद्धति के अनुसार पूजा नहीं करते। उनकी पूजापद्धति में बीसपन्थी पूजापद्धति की मिलावट है। उदारणार्थ, वे नैवेद्य के रूप में नारियल की चिटकें भी चढ़ाते हैं और तीर्थकरों के निर्वाणदिवस पर बूँदी के लड्डू या शक्कर की बरफी बना कर भी चढ़ाते हैं। यह लड्डू या

बरफी चढ़ाने की परम्परा बीसपन्थी पूजापद्धति का अनुसरण है। तथा दीपक के रूप में नारियल की पीली चिटकें भी समर्पित करते हैं और वास्तविक दीपक भी जलाते हैं, उससे आरती भी करते हैं। वास्तविक दीपक जलाना बीसपन्थी पूजापद्धति है। इसी प्रकार धूपपूजा का सम्पादन धुली हुई धूप या लौंगों को थाली में चढ़ाकर भी करते हैं और अग्नि में घूप प्रज्वलित करके भी। अग्नि में धूप प्रज्वलित करना बीसपन्थी पूजापद्धति का अनुसरण है। यहाँ तक कि जो दानतरायजी आदि द्वारा रचित पूजाएँ पढ़ी जाती हैं, वे बीसपन्थी पद्धति की ही हैं, क्योंकि उनमें सचित्त पुष्पादि एवं मिष्टान्न आदि चढ़ाए जाने का ही वर्णन है। यथा, 'लहि कुन्द कमलादिक पहुप...', 'नैवेद्य करि घृत में पचूँ...' इत्यादि।

इस प्रकार जब तेरहपन्थी पूजापद्धति में भी बीसपन्थी का मिश्रण है, तब बीसपन्थी पूजापद्धति का अनुसरण करनेवालों को दोष कैसे दे सकते हैं? और जब उसका विधान सभी श्रावकाचारों और पुराणों में है, तब वह आगमविरुद्ध, दोषपूर्ण और हेय कैसे कहला सकती है?

निष्कर्ष यह कि बीसपन्थी और तेरहपन्थी दोनों पूजापद्धतियाँ आगमानुकूल हैं। पं. सदासुखदासजी ने भी कहा है- 'दोऊ प्रकार आगम की आज्ञा प्रमाण सनातन मार्ग हैं। अपने भावनि के अधीन पुण्यबन्ध के कारण हैं।' (रत्नकरण्डश्रावकचार, हिन्दी टीका, कारिका 119) अतः दोनों में से किसी भी पूजा पद्धति को दोषपूर्ण और आगमविरुद्ध बताना उचित नहीं है। तेरहपन्थियों का बीसपन्थी पूजा पद्धति अपनातेवालों को अस्पृश्य समझना अथवा बीसपन्थियों का तेरहपन्थियों को अच्छूत मानना और परस्पर निन्दा-आक्षेप करना तथा अमैत्रीभाव रखना जिनतीर्थ और जैनसंघ के हित के विरुद्ध है।

रतनचन्द्र जैन

- विश्वास दिलाया जा सकता है, पर रास्ता तो स्वयं को तय करना है।
- आस्था मस्तिष्क में नहीं, हृदय में जमती है। अतः हमारी आस्था का केन्द्र ज्ञान-सम्पन्न मस्तिष्क नहीं, बल्कि भावना-सम्पन्न हृदय होता है।
- स्वार्थ की बू आते ही वर्षों का जमा हुआ विश्वास खिसकने लगता है।
- किसी पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने आपको श्रद्धेय के प्रति सौंप देना ही समर्पण है।

आचार्यश्री विद्यासागर : 'सागर बूँद समाय' से साभार

# जैन धर्म की ऐतिहासिकता

कैलाश मड़वैया

आज जब इतिहास से छेड़खान विषयक विवाद गहराया हुआ है, तब कुछेक जगह तो सत्य को सिद्ध करने के लिए भी अस्मिता का संघर्ष सम्मुख आ खड़ा है। आज यदि राजनैतिक इतिहासकारों को ही इतिहास लिखने को दे दिया जाये तो यह प्रश्न सुलझने की बजाय उलझता ही जायेगा। यह सही है कि राजनीति 'ईथर' की तरह जीवन में हर जगह विद्यमान है, परन्तु कुछ जगहों पर यदि इससे नहीं बचा गया तो परिणाम गम्भीर तो हो ही गये हैं और अधिक भयावह होते जायेंगे। आज राजनीतिज्ञों ने धर्म में प्रवेश कर लिया है, साहित्य में 'वाद' का सिक्का चलता ही है, शिक्षा भी 'खेमों' में हैं। संस्कृति पृथक् होते हुए भी राजनीति ही हावी है, यह नया आक्रमण इतिहास पर हुआ है।

वस्तुतः है यह "अंधों के हाथी" की तरह स्थिति। इतिहास यदि शब्द के छपने से प्रारंभ मानेंगे तो बहुत कुछ छूट जायेगा। शब्द के गढ़ने से मानते हैं तो श्रुति पर विश्वास करना पड़ेगा, जिसमें मानवीय निजत्व जुड़ने की सम्भावनाएँ तो हैं, पर और कोई विकल्प भी नहीं है। श्रुति के ही आधार पर शास्त्रों और पुराणों की रचनाएँ हुई हैं, जिनमें वैयक्तिक निजत्व जुड़ा ही हुआ है। हाँ, पुरातत्त्व के आधार अवश्य शेष हैं, जिनको नकारा नहीं जा सकता। हालाँकि, संभावनाएँ और अनुमान तो इसमें भी रहता है, पर सत्य के पर्याप्त करीब रहता है।

जब से कथित इतिहासकारों द्वारा जैन धर्म के चौबीस में से तेईस तीर्थंकर ही काल्पनिक करार दे दिये गये, तब से सामान्यतः शान्त रहने वाले इस समाज के बुद्धिजीवियों में गम्भीर हलचल प्रारम्भ हुई है।

सत्य यह है कि तेईस तीर्थंकरों को काल्पनिक कह देने से वे इतिहासकार ही विवादित हो गये हैं, जो स्वयं अपने निष्कर्षों पर पूर्वाग्रहवश प्रश्नचिह्न लगा लेते हैं। यह ऐतिहासिक सत्य है कि यदि कृष्ण इतिहास पुरुष हैं तो तीर्थंकर नेमिनाथ (अरिष्ट जिन) को नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि वे श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे और जूनागढ़ एवं गिरनार में उनके पुरातात्विक अवशेष विद्यमान हैं। प्रसिद्ध पुरातात्विक डॉ. फूहरर, प्रो. वारनेट, कर्नल टॉड एवं डॉ. राधाकृष्णन् तीर्थंकर नेमिनाथ की ऐतिहासिकता को स्वीकारते हैं। टॉड ने तो खोज कर यह निष्कर्ष दिया था कि नेमिनाथ ही स्केण्डिनेविया की जनता में प्रथम "ओडिन" तथा चीनियों के प्रथम "फो" नाम के देवता थे। भारतीय इतिहास एवं दृष्टि (पृ. 45) में डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकर ने काठियावाड़ से प्राप्त एक प्राचीन ताम्रपत्र प्रकाशित किया था। उक्त दान पत्र पर उल्लेख है कि सुमेर जाति में उत्पन्न काबुल के खिल्बियन सम्राट नेवुचंदनज्जर ने जो रेवानगर (काठियावाड़) का अधिपति था, यदुराज की द्वारका में आकर गिरिनार के स्वामी नेमिनाथ की भक्ति की तथा दान दिया

था। दान पत्र पर पश्चिमी एशियाई नरेश की मुद्रा भी अंकित है। यह काल ईसा पूर्व 1140 अनुमाना गया है। तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ तो महावीर स्वामी से मात्र 250 वर्ष पूर्व ही हुए थे, जिनका इतिहास में कई जगह उल्लेख है। हालाँकि वर्तमान इतिहास ईसा के 500 वर्ष से आगे जाने को तैयार नहीं है। इसलिये यह महावीर तक ठहर जाता है।

प्राचीन ग्रन्थों में ही राम के काल में, तीर्थंकर मुनिसुव्रत के होने के संदर्भ मिलते हैं। परन्तु हैं ये पौराणिक प्रमाण ही, जिन्हें प्रागैतिहासिक कहा जाता है।

जहाँ तक प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का ऐतिहासिक प्रश्न है उस संबंध में विद्वानों का मत है कि तब के इतिहास मिलने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता, इसलिये कथित रूप से हैं तो ऋषभदेव भी पौराणिक तीर्थंकर ही, परन्तु पुरातत्त्व के इतने ठोस प्रमाण उपलब्ध हैं कि ऋषभदेव को काल्पनिक कहना अपने गाल पर तमाचा मारने जैसा प्रतीत होता है।

## सिन्धु घाटी सभ्यता

सन् 1922-23 में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त सिन्धु घाटी की प्राचीन सभ्यता को ऐतिहासिक मान्यता प्राप्त है। इस खुदाई में प्राप्त ईसा के 5000 वर्ष पूर्व की, दिगम्बर कायोत्सर्ग योग मुद्राओं की मूर्तियाँ जैन तीर्थंकरों के अस्तित्व की पुष्टि करती हैं और उपलब्ध वृषभ का प्रतीक, चूँकि प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का ही होता है। अतः सहज ही उक्त प्रतिमा आदि जैन तीर्थंकर होने की पुष्टि करती है। इसी आधार पर जैन धर्म को प्रागैतिक भी कहा जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन् यद्यपि इतिहासकार नहीं, दार्शनिक थे पर वे दर्शन में कल्पना को स्थान तो नहीं दे सकते थे। पुष्ट प्रमाणों के आधार पर ही उन्होंने अपनी कृति "इण्डियन फिलास्फी" के पृष्ठ 287 पर कहा है - "ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तक लोग तीर्थंकर ऋषभदेव की पूजा किया करते थे।"

इसीलिये प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ. एम.एल. शर्मा ने "भारत में संस्कृति और धर्म" पृष्ठ 62 पर मत व्यक्त किया है कि मोहन-जोदड़ो से प्राप्त मुहर पर जो चिह्न अंकित है, वह भगवान् ऋषभदेव का ही है। यह चिह्न इस बात का द्योतक है कि आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व योगसाधना भारत में प्रचलित थी और उसके प्रवर्तक जैन धर्म के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव थे। सिन्धु निवासी अन्य ग्रन्थों के साथ ऋषभदेव की पूजा करते थे।

## उदयगिरि-खण्डगिरि ( उड़ीसा ) स्थित शिलालेख

भुवनेश्वर के निकट स्थित पुरातात्विक तीर्थ उदयगिरि-खण्डगिरि स्थित हाथी गुफा का शिलालेख मूर्ति इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रमाण है। शिलालेख का प्रारंभ, शाश्वत जिन



-मंत्र "नमो अरहतानं, नमो सिद्धानं" से हुआ है। इसमें अंकित है कि ईसा के 450 वर्ष पूर्व राजवंश था और कलिङ्गाधिपति खारवेल, मगधराज पुष्यमित्र पर चढ़ाई करके तीर्थंकर ऋषभदेव (प्रथम जिन तीर्थंकर) की मूर्ति वापस लाया था। यह भी इससे प्रमाणित होता है कि 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ही अनुयायी थे और उन्हीं की पूजा अर्चना किया करते थे। (जनरल ऑफ दि बिहार एण्ड ओडिसा रिसर्च सोसा. भाग 3, पृष्ठ 465)

उपर्युक्त प्रमाणों से यह शक करने का कोई कारण नहीं बचता कि ऋषभदेव काल्पनिक चरित्र थे। यह अलग बात है कि उस इतिहास तक पहुँचने का वर्तमान इतिहासकारों के पास पुरातन शिलालेखों के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। हम न देख सकें इसलिये कुछ है ही नहीं, यह बात ही बेमानी है।

### मथुरा का कंकाली टीला

पुरातात्विक उत्खनन में मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त देव निर्मित स्तूप और 110 शिलालेख, इतिहास के उपर्युक्त तथ्यों की प्रामाणिक पुष्टि करते हैं। स्तूप का निर्माण ईसा पूर्व 800 का अनुमानित है, जिसमें ईसा पूर्व दूसरी सदी से बारहवीं सदी की अनेक तीर्थंकर मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं।

विंसेट ए स्मिथ के मतानुसार मथुरा के कंकाली टीले का स्तूप एवं शिलालेख जैन इतिहास की परम्परा की न केवल पुष्टि करते हैं, वरन् यह भी सिद्ध करते हैं कि ईसवी सन् के प्रारम्भ में जिन-इतिहास अपने विशेष चिह्नों के साथ-साथ, तीर्थंकर के इतिहास में दृढ़ आस्था रखते हैं।

### वैदिक प्रमाण

ऋग्वेद 4.58.3 में ऋषभदेव को अनन्तचतुष्टयधारी कहा गया है ऋग्वेद में ही एक अन्य जगह जिन तीर्थंकर को ज्ञान का आगार आदि बताया गया है। ऋग्वेद में जैन मुनियों का उल्लेख वातरशना मुनियों के रूप में मिलता है।

उपर्युक्त उल्लेख जैन धर्म को वैदिककालीन तो प्रमाणित करते ही हैं, यह भी सिद्ध होता है कि महावीर के बहुत पहले से तीर्थंकर होते आ रहे हैं, उन्हें काल्पनिक कहना ही कल्पना है।

### गौराणिक प्रमाण

श्रीमद्भागवत, अग्निपुराण और विष्णुपुराण एवं स्कंध पुराण में ऋषभदेव की न केवल प्रार्थना की गई है, वरन् उनके कुल का भी वर्णन मिलता है। भागवत के प्रथम स्कंध के अध्याय गीन में भी उल्लिखित है कि ऋषभदेव का जन्म राजा नाभि की रत्नी मरुदेवी से हुआ था इत्यादि। महाभारत के शान्ति पर्व में तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभदेव) को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

### भ्रम्य मत

इतिहासकार मानते हैं कि वैदिक काल के पूर्व द्रविड़ नाग प्रादि मानव जातियाँ भारत की मूल निवासी थीं और ये श्रमण संस्कृति से सम्बद्ध थीं। श्रमण धर्म का उपदेश इस युग में ऋषभदेव

ने ही सर्वप्रथम दिया भी और वे ही प्रथम जैन तीर्थंकर हुए। इसलिये पं. जवाहरलाल नेहरू ने जैसा कि "डिस्कवरी ऑफ इण्डिया" में कहा है वैसा ही माना जाता है कि भारत के मूल निवासी जैन लोग हैं। श्रमण परम्परा भारत की प्राचीन परम्परा है और इस युग के जैन तीर्थंकरों की परम्परा ऋषभदेव से प्रारंभ मानी जाती है।

श्री पी.आर. देशमुख ने "इण्डस सिविलाइजेशन ऋग्वेद एण्ड हिन्दू कल्चर" में पृष्ठ 344 में लिखा है कि जैनों के पहले तीर्थंकर सिन्धु सभ्यता से ही थे। उन्होंने सिन्धु घाटी की भाषिक संरचना के बारे में बताया कि सिंधुजनों की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत जनसामान्य की भाषा है। जैनों और हिन्दुओं में भारी भाषिक भेद है। जैनों के समस्त प्राचीन ग्रन्थ प्राकृत में हैं ... जबकि हिन्दुओं के सभी ग्रन्थ संस्कृत में हैं। प्राकृत भाषा के प्रयोग से भी यह सिद्ध होता है कि जैन प्राग्वैदिक हैं और सिंधु घाटी से उनका संबंध था।

### देश और विदेश में

कहा तो यह जाता है कि भगवान् ऋषभदेव के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ का नाम भरत था और इन्हीं के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा, पहले इस देश का नाम "अजनाभ" था।

भारत से बाहर वर्मा से दक्षिण चीन तक ऋषभदेव की ख्याति पहुँचती गई। डॉ. सिल्वा लेवी के मत से जावा-सुमात्रा आदि द्वीप समूहों के निवासियों में जैन मतालम्बी भी थे।

अलासिया में 12 वीं सदी की एक रेशेफ मूर्ति पर, खोज से प्रो. आर.जी. हर्ष ने यह प्रतिपादित किया था कि भारतीय तीर्थंकर ऋषभ का ही नाम वहाँ "रेशेफ" पड़ा। रेशेफ सींगों वाले देवता को कहते हैं और वृषभ यानी बैल भी सींगों वाले होते हैं।

मध्य एशिया और पश्चिम एशिया में ऋषभ को "बुल गॉड" कहा जाता था। सोवियत अरमोनिया में तैशव देव नाम से ऋषभदेव की अर्चना की जाती थी इत्यादि।

"जैन साहित्य के इतिहास" कृति की भूमिका में डॉ. बासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है- "यह सुविदित है कि जैन धर्म की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। भगवान् महावीर तो अंतिम तीर्थंकर थे। ..... भगवान् महावीर के पूर्व 23 तीर्थंकर हो चुके थे। उन्हीं में भगवान् ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे .....। जैन कला में उनका अंकन घोर तपश्चर्या की मुद्रा में मिलता है। ऋषभदेव के चरित्र का उल्लेख श्रीमद्भागवत में भी विस्तार से आता है....। भागवत में इस बात का भी उल्लेख है कि महायोगी भरत, ऋषभ के शतपुत्रों में ज्येष्ठ थे और उन्हीं से यह देश भारतवर्ष कहलाया।

ऋषभदेव के उपरांत 22 तीर्थंकर और हुए। अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी हुए। सभी तीर्थंकरों ने अपने युग की प्रासंगिक समस्याओं के अनुरूप जिन धर्म के सिद्धांतों की व्याख्याएँ कीं और जीवों के कल्याण का पथ प्रशस्त किया। जैन धर्म के मूल सिद्धांतों में कभी समझौते की कहीं गुंजाइश रही भी नहीं। भले ही संयम और तप का मार्ग कठिन होने से लोग इससे कम जुड़े, पर जितने जुड़ेंगे और जिन मार्ग पर चलेंगे उनका उद्धार होगा ही- 'जैनम् जयतु शासनम्'।

75, चित्रगुप्त नगर  
कोटरा सुल्तानाबाद, भीपाल

# जैन जीवनदर्शन और समाज

डॉ. प्रेमचन्द्र रावका

आत्मधर्म के लिये नीरोग शरीर और दूध के लिये जैसे शुद्ध पात्र की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानव के लिये स्वस्थ समाज का होना भी आवश्यक है। मनुष्य और समाज दोनों की अनुपूरकता के प्रसंग में दोनों का स्वस्थ और आचारवान् होना और भी आवश्यक है। व्यष्टि से समष्टि का निर्माण होता है। दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध है। शरीर में प्रत्येक अंग का अपना स्थान और महत्त्व है। शरीर का जो भी अंग विकृत होगा, शरीर उतने ही अंशों में विकृत माना जावेगा। उसी प्रकार समाज के जितने व्यक्ति सुधरे हुए होंगे तथा चारित्र, ज्ञान और अर्थ की दृष्टि से जितने पुष्ट होंगे, समाज उतना ही प्रबुद्ध, उन्नत और सशक्त होगा।

व्यक्तिगत एवं समष्टिगत कार्य की सफलता संकल्प, श्रम, एकता और संगठन में निहित है। एकाकी व्यक्ति आत्मधर्म का तो पालन कर सकता है, पर समाजधर्म के लिये संगठन अपेक्षित है। नीतिकार कहते हैं-असंगठित लोगों के जीवन में धर्म नहीं उतर सकता और न वे कभी जीवन में सुखी हो सकते हैं। किसी प्रकार का गौरव भी उन्हें प्राप्त नहीं हो सकता और न जीवन में उन्हें कभी शान्ति मिल सकती है।

न वै भिन्ना जातु-वरन्नीह धर्म,  
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः ॥  
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्नुवन्ति,  
न वै भिन्नाः प्रशमं रोचयन्ति ॥

वस्तुतः संगठित समाज ही शक्तिशाली होता है। अनन्त परमाणुओं से मिलकर ही सृष्टि का निर्माण होता है। कई ईंटे मिलकर महल खड़ा कर देती हैं। छोटे-छोटे तिनकों की रस्सी से बड़े से बड़े मदोन्मत्त हाथी को बाँधा जा सकता है। कमजोर और असंगठित समाज कभी जीवित नहीं रह सकता। प्रकृति भी उसी की सहायता करती है जो स्वयं अपनी सहायता करता है और अपने पैरों पर खड़ा होता है। संसार के इतिहास में ऐसी जातियाँ आज नाम शेष रह गयी हैं, जो असंगठित थीं। विश्व के मानचित्र पर उनका कहीं पता नहीं। अतः हमें जीवित रहने के लिये दो बातों की ओर ध्यान देना होगा और उन्हें अमल में लाना होगा। वे हैं- हमारे व्यक्तिगत जीवन में धर्म उतरे और सामाजिक जीवन में हम संगठित हों।

आचार में अहिंसा, विचारों में अनेकान्त, वाणी में स्याद्वाद और समाज में अपरिग्रह-इन्हीं चार मणिस्तम्भों पर जैन धर्म का सर्वोदयी प्रासाद अवस्थित है। अहिंसा, अनेकान्त, अस्तेय, अपरिग्रह, सत्य, ब्रह्मचर्य जैन धर्म के मूल आधार हैं। उत्तम

क्षमादि धर्म के दस अंग देवदर्शन, गुरुपासना, स्वाध्याय, संयम, तप, त्याग, श्रावक के षट्कर्म और अनित्य, अशरण आदि बारह भावनाएँ जैनत्व को परिपुष्ट करती हैं। ये सब धर्म के ऐसे महत्त्वपूर्ण एवं अपरिहार्य आंगोपांग हैं, जिनके आचरण से मनुष्यमात्र अपने इहलोक के साथ पारलौकिक मार्ग को भी प्रशस्त कर सकता है।

धर्म त्रिकालाबाधित शाश्वत होता है, पर समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। सामाजिक परम्पराएँ और मान्यताएँ युगानुसार बदलती रहती हैं। संसार और जीवनचक्र परिवर्तनशील हैं। जैन धर्म और उसके समाज का आधार अनेकान्तात्मक है। वह आग्रहवाद से बहुत परे है। यथासमय यथावश्यक परिवर्तन स्वीकार करने में वह कभी नहीं हिचकिचाता। पर उसी परिवर्तन को स्वीकारता है, जिससे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह में वृद्धि हो। जिस क्रिया के द्वारा हमारा जीवन ऊँचा उठ रहा हो, वह परिवर्तन और वह क्रिया अपनाने योग्य है। सामाजिक और वैयक्तिक उत्थान के लिये परिवर्तन स्वीकार किये जा सकते हैं। बस, शर्त यह है कि उस परिवर्तन से हमारे सम्यक्त्व को हानि न पहुँचे। हमारे आचार्यों ने अपेक्षित परिवर्तन के लिये अपने विवेक को ही निर्णायक माना है। 'यशस्तिलक चम्पू' के रचयिता आचार्य सोमदेव सूरि का कथन उल्लेखनीय है-

सर्व एव हि जैनानां प्रमाणं लौकिको विधिः ।

यत्र सम्यक्त्व हानि न यत्र नो व्रत दूषणम् ॥

जैनों को वे सभी लौकिक क्रियाएँ मान्य हैं, जिनसे सम्यक्त्व की हानि न हो और व्रतों को दोष न लगे। पुराणमित्येव न साधु सर्वम्- प्राचीन बातें सारी ही अच्छी हों, यह आवश्यक नहीं है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में -

प्राचीन हो कि नवीन छोड़ो, रूढियाँ जो हों बुरी।

बनकर विवेकी तुम दिखाओ, हंस जैसी चातुरी ॥

प्राचीन बातें ही भली हों, यह विचार अलीक है,

जैसी अवस्था हो जहाँ, वैसी व्यवस्था ठीक है ॥

जैन कोई जाति नहीं, वह तो धर्म है, जिसमें वर्ण, जाति के लिये कोई स्थान नहीं। यह तर्क और श्रद्धा पर आधारित वैज्ञानिक धर्म है, जिसमें अंधभक्ति के लिये कोई स्थान नहीं है। एक पाश्चात्य विद्वान ने जैन धर्म से प्रभावित होकर जो लिखा है, वह उल्लेखनीय है- 'Jainism does not ask you to have faith in any thing which can not be scientifically realised and based on reality.'

अवैज्ञानिक और अवास्तविक तथ्यों पर जैन धर्म विश्वास

करने को नहीं कहता। वास्तव में जैन धर्म जीवन-दर्शन है। किसी भी वर्ग-वर्ण का व्यक्ति उसका अनुयायी हो सकता है।

भगवान् महावीर ने सम्यग्दर्शन के आठ अंग बताये हैं। इनमें एक भी अंग की कमी होने पर जीवन में सम्यक्त्व नहीं उतर सकता। उनमें एक अंग 'वात्सल्य' महत्त्वपूर्ण है, अपने साधर्मि बन्धुओं के प्रति गोवत्सवत् प्रीति करना ही सच्चा वात्सल्य है। सम्यक्त्व के इस महत्त्वपूर्ण अंग की ओर हमारा कितना ध्यान है? यह विचारणीय है।

आज जैन समाज में एकता का अभाव है। न केवल दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरापंथी और स्थानकवासी आपस में लड़ते हैं, अपितु एक ही पंथ के और एक ही सम्प्रदाय के बन्धुओं में सामाजिक बन्धुत्व की भावना नहीं के बराबर है। आये दिन जैन पत्रों में पारस्परिक विवाद भरे रहते हैं। कुछ पत्र तो पंथ-पक्ष से व्यामोहित हैं। सामाजिक समरसता की उन्हें कोई चिन्ता नहीं। साधुओं, विद्वानों और नेताओं में मतैक्य नहीं है। ये एक मंच पर नहीं आ सकते। धर्म की आड़ में प्रदर्शन और आडम्बर बढ़ रहे हैं। महावीर के अनुयायी, महावीर के सिद्धान्तों पर नहीं चलते। आज का समाज इन विसंगतियों से भरा है।

जैन समाज के संगठन में जो बाधकतत्त्व हैं, वे ऐतिहासिक व आन्तरिक नहीं, सामाजिक और भौगोलिक नहीं, आर्थिक व सांस्कृतिक नहीं, वे बाहरी और ऊपरी हैं, जो पूरे समाज से सम्बन्धित नहीं हैं। वे खास लोगों की मनोवृत्ति, थोथी यशोलिप्सा और

प्रभुत्वकामना की पूर्ति भर करते हैं। जब समाज का नेतृत्व अपना तेज खो देता है तो वह अंधेरे में ही भटकता रहता है। आज का नेतृत्व वर्ग स्थिरमतिवाला नहीं है। अनेकान्त की बातें करने वाले आग्रह का दामन नहीं छोड़ते। अहिंसा की बातें करते हैं, पर हिंसा से बचते नहीं। अपरिग्रह की चर्चा करते हैं, पर संग्रहवृत्ति छोड़ते नहीं। इस ज्ञान और क्रिया में रात-दिन का अन्तर है। यह मनः स्थिति तब बनती है, जब समाज के नेतृत्व में जड़ता आ जाती है और चिन्तन कुण्ठित हो जाता है। हमारा समाज फूल और पत्तियों को देखने में ही उल्लास का अनुभव करता है जो शाश्वत खिलने वाली नहीं हैं। जड़ को सम्यक्त्व जल से सींचने की किसी को चिन्ता नहीं। वयोवृद्धों का अनुभव और युवकों की सक्रियता का समन्वय समाज की प्रगति का आधार होता है। "न सा सभा सन्ति न यत्र वृद्धाः।"

जैन सामाजिक संगठन के लिये हमें जैनत्व को समझना होगा। परस्पर प्रीति, भातृभाव/मैत्रीभाव बढ़ाना होगा। दूसरों के विचारों का आदर करना होगा। खण्डन से मण्डन और समन्वय की ओर चलना होगा। समाज की शक्तियाँ निर्माणकारी हों। सम्यक्त्व को दूषित किये बिना सबको साथ लेकर चलना होगा।

पूर्व प्रोफेसर  
राजकीय महाराजा संस्कृत कॉलेज,  
जयपुर (राज.)

## भोपाल में ग्रीष्मकालीन वाचना



मुनिश्री विशुद्धसागर जी



मुनिश्री विशल्यसागर जी



मुनिश्री विश्ववीरसागर जी



मुनिश्री विश्रान्तसागर जी

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, टिन शेड टी.टी. नगर भोपाल में दि. 17.5.2002 को परमपूज्य आचार्य श्री विरागसागर जी के परम तपस्वी शिष्य मुनि श्री विशुद्धसागर जी, मुनि श्री विशल्यसागर जी, मुनि श्री विश्ववीरसागर जी एवं मुनि श्री विश्रान्तसागर जी के मंगल सान्निध्य में ग्रीष्मकालीन सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक वाचना की स्थापना समारोहपूर्वक हुई, जिसमें पू. आचार्य श्री विरागसागर जी के चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन के साथ मंगल कलश की स्थापना की गई। वाचना 15.6.2002 श्रुतपंचमी तक चलेगी।

प्रतिदिन प्रातः 7 से 8 बजे द्रव्य संग्रह, 8 से 9 बारसाणुपेक्खा अपराह्न 3 से 4 परमात्मप्रकाश एवं अपराह्न 4 से 5 तत्त्वार्थवार्तिक का मंगल वाचन-विवेचन मुनि संघ द्वारा किया जा रहा है।

तत्त्वार्थवार्तिक ग्रन्थराज का वाचन प्रो. रतनचन्द्र जैन, भोपाल द्वारा किया जा रहा है। विवेचन मुनिश्री विशुद्धसागर जी महाराज अपनी अमृतवाणी के माध्यम से करते हैं। श्रोता साधर्मि बंधु बड़ी संख्या में लाभान्वित हो रहे हैं।

श्रीपाल जैन 'दिवा'

# पाउचों की सुन्दरता में मीठा जहर पान मसाला

श्रीपाल जैन 'दिवा'

यह बात बिल्कुल सत्य है कि जिन्दगी में मौत से ज्यादा सुनिश्चित बात और कोई दूसरी नहीं है, क्योंकि हमें यह जीवन मिला है तो मृत्यु भी मिलेगी। हमें जीवन में धन, संपत्ति और वैभव आदि मिले यह कोई नियम नहीं है, लेकिन मृत्यु हमें निश्चित मिलेगी। अब प्रश्न उठता है कि जब मौत निश्चित है तो उससे डरना क्यों? बिल्कुल सत्य है मौत से नहीं डरना, लेकिन अकाल मृत्यु से तो हमें डरना चाहिए। अकाल मृत्यु से हमारा आशय आयु कर्मों के निषेकों का अकाल खिराने से हैं। आयु कर्म से निषेकों को अकाल में खिराने के लिए बहुत से निमित्त कारण बन जाते हैं, उनमें व्यक्ति की बुरी आदत या लत भी अकाल मरण की ओर ले जाती है। बुरी आदत व्यक्ति के शान्तिमय जीवन में अशान्ति का वातावरण बना देती है। व्यक्ति की जिन्दगी अपनी जिन्दगी है, वह जैसा बनाना चाहे वैसा बना सकता है। कोई व्यक्ति यदि बुरी आदतों से ग्रसित है, वह यदि दुनिया के तमाम शास्त्रों को पढ़ डाले, सभी मजहबों एवं धर्मों के ग्रन्थों को पढ़ डाले, पर उस व्यक्ति को अपने जीवन का सत्य समझ में नहीं आ सकता।

वर्तमान में हमारे युवा भाइयों का वर्ग, लौकिक शिक्षण के क्षेत्र में तो बहुत विकास कर रहा है, लेकिन अपने शारीरिक और मानसिक धर्म के क्षेत्र में विकास से बहुत दूर होता जा रहा है। आज हमारे युवा वर्ग को गुमराह करने के लिए, उनके मन को लुभाने के लिये और उनको बुरी आदतों में फँसाने के लिए ऐसी वस्तुओं को बाजार में लाया जा रहा है, जिनके सेवन से हमारा युवा वर्ग अपना तन, मन और धन तीनों को बर्बाद करता जा रहा है।

मैं उन बुरी आदतों में से एक पान मसाले की आदत के बारे में कहना चाह रहा हूँ, जो सबसे अधिक मात्रा में हमारे देश का युवा वर्ग खाता है। इस पान मसालों की आदत ने एक 10 वर्ष के बच्चे से लेकर 60-70 वर्ष के दादाजी आदि को पकड़कर रखा है, लेकिन सबसे अधिक 16 वर्ष से 35 वर्ष तक के युवाओं में पान मसाला चबाने की आदत है। इसका दुष्परिणाम देखने को मिला नासिक एवं पूना के आसपास। इसके सेवन से कुछ व्यक्ति नपुंसकता जैसे रोग से ग्रसित हो गये और दिल्ली के एक परिवार के पिता ने अपनी बेटी को पान मसाला खाने को मना किया तो आत्महत्या जैसा दुष्कृत्य उस बेटी ने कर डाला। एक बार ऐसी आदतें व्यक्ति के जीवन में आ जाती हैं, तो व्यक्ति का मन ही दूषित कर देती है। इससे बचना आज बहुत जरूरी है।

**पान मसालों का इतिहास** - इन पान मसालों की

लोकप्रियता के इतिहास को जानें तो ज्ञात होता है कि यह संस्कृति 90 के दशक से देश में प्रारंभ हुई। पान मसालों को पाउच का रूप दिया, जो रखने और ले जाने में बहुत आसान हो गया। इसलिए आज किसी भी दुकान पर जाओ, चाहे वह पान की दुकान हो या किराने की दुकान, यहाँ तक की मेडिकल आदि की दुकानों पर भी पान मसालों के पाउच बड़ी सुगमता से मिल जाते हैं, क्योंकि इसका विज्ञापन ही ऐसा किया जाता है। हमारी फिल्मी दुनिया के जाने-माने कलाकार ऐसे जहर के विज्ञापनों को कर रहे हैं और हमारे युवा साथी उनकी बातों से गुमराह हो जाते हैं तथा पान मसालों की आदतों से ग्रसित हो जाते हैं। वे तो विज्ञापन करके पैसा कमा लेते हैं, लेकिन हमारे युवा वर्ग अपने पैसों की बर्बादी के साथ अपने शरीर को भी बर्बाद कर रहे हैं।

इन पान मसालों के बारे में मुम्बई के टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च के डॉ. श्री प्रकाशजी गुप्ता कहते हैं- देश भर में 'सबम्यूकस फाइब्रोसिस' तेजी से फैलता जा रहा है। डॉ. गुप्ता ने चेतावनी दी कि "पान मसाला सिगरेट की तुलना में अधिक घातक होता है। सिगरेट की तुलना में गुटकों से यानि पान मसालों से कैंसर आधे समय में ही हो जाता है। सिगरेट में तम्बाकू होता है, लेकिन पान मसाला बिना तम्बाकू वाले भी होते हैं, यानि बिना तम्बाकू वाले पाउच भी कैंसर के लिये कारण हैं।" 'सबम्यूकस फाइब्रोसिस' होने के पाँच से दस वर्ष के भीतर कभी भी कैंसर हो सकता है। अगर पान मसालों का प्रचार-प्रसार रोका नहीं गया तो डॉक्टरों को अंदेशा है कि इससे घातक बीमारियाँ दिन पर दिन फैलती ही जायेंगी। 'सबम्यूकस फाइब्रोसिस' की महामारी पान मसाले के खतरनाक स्तर तक उपभोग से सीधी जुड़ी है। डॉ. गुप्ता ने कहा- इस संबंध के निर्विवाद सबूत हैं कि पान मसालों को खतरनाक उत्पादन करार देना जरूरी है।

**वर्तमान परिवेश में पान मसाले** - आज पान मसालों की आवश्यकता इतनी बढ़ गई है कि अगर कोई भी आज पारिवारिक या सामाजिक कार्यक्रम हो, शादी, विवाह, सभा, गोष्ठी या पार्टी आदि कुछ भी हो, पहले पान मसाला स्वागत के रूप में आता है। पहले पान के माध्यम से मेहमानों का स्वागत किया जाता था, जिसे ताम्बूल या बीड़ा भी कहा जाता है। यह पान बड़े आदरसत्कार का प्रतीक हमारी भारतीय संस्कृति में माना गया है। आज पान तो समाप्त होते जा रहे हैं और पान मसालों का आधिपत्य होता जा रहा है। आज पान की जगह पान मसालों ने घुसपैठ कर ली, इसलिए पान खाना भूलकर पान मसाला चबाने लगे। यह खूबसूरत

पैकेटों में मिलने वाला पान मसाला स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करता है।

**पान मसालों का बढ़ता व्यापार** - आज देश में पान मसालों का उद्योग बढ़ता ही जा रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1992 में 200 करोड़ रुपयों का करोबार था, जो सन् 1997 में 1000 करोड़ से भी अधिक का हो गया था। इस प्रकार प्रतिवर्ष बढ़ता ही जा रहा है, घटने का नाम नहीं ले रहा है। आज देश में इसके उद्योग पर कोई रोक नहीं और न ही इनके विज्ञापनों पर रोक है और न ही इसकी बिक्री पर रोक है। आज राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकार का इस ओर ध्यान नहीं है, जबकि डॉक्टर स्वयं कहते हैं-यह मानव स्वास्थ्य को गंभीर खतरा उत्पन्न करने वाला है। इसके माध्यम से गले और मुँह के अत्यन्त हानिकारक कैंसर जैसे जानलेवा मर्जों का जन्म हो रहा है। तमाम स्वास्थ्य संगठनों की बार-बार चेतावनी देने पर भी वर्तमान सरकारें इस ओर ध्यान नहीं दे रही हैं। सुना था, गोवा की राज्य सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगाया था पर कितना असर? पान मसालों के उद्योग करने वालों पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा, उनका व्यापार यथावत् ही रहा और थोड़ी वृद्धि ही हुई है। आज खूबसूरत पाउचों में पान मसाला रूपी मीठा जहर भरकर बेचने वाले मौत के सौदागर शहरों तक सीमित नहीं रहे। देश के प्रत्येक शहर, नगर, गाँवों की गली, कूचों में फैल गये हैं। इन पर प्रतिबंध आज बहुत जरूरी है। आज देश में हजारों तरह के पान मसालों का प्रचलन है, परन्तु इसकी सबसे बड़ी मंडी उत्तर प्रदेश की औद्योगिक महानगरी कानपुर मानी जाती है, जहाँ पर सौ से भी अधिक किस्म के पान मसाले बनाये जाते हैं।

**पान मसालों में क्या?** - इन पान मसालों को कैसे बनाया जाता है? इनमें क्या-क्या मिलाया जाता है? इसके बनाने की प्रक्रिया बहुत सरल है। ये चूना, कत्था, चिकनी सुपारी, इलाइची, सेन्ट एवं पिपरमेन्ट से निर्मित होता है। आप बाजार में जाकर इस सामग्री आदि को खरीदने जायें और अच्छी सामग्री खरीदें एवं पूरी शुद्ध सामग्री मिलाकर पान मसाला तैयार करें तो करीब 400 से 450 रुपये प्रतिकिलो के भाव का पड़ेगा, परन्तु जो कम्पनियों द्वारा बनाये गये पान मसाले हैं, 150-160 रुपये प्रतिकिलो के भाव से मिल रहे हैं। इससे स्वयं सिद्ध होता है कि ये पान मसाले पूरी तरह शुद्ध नहीं हैं। इनमें कत्था को ही लें, इसकी जगह पर सिंथेटिक कत्था उपयोग किया जाता है।

**सिंथेटिक कत्था (नकली कत्था)** - दैनिक भास्कर, जबलपुर 27 नवम्बर 2000, पृष्ठ 5 पर - 'मिलावटी कत्थे से रचे जा रहे हैं आपके ओंठ' समाचार पढ़ा और पाया विगत कुछ माह पूर्व राज्य खाद्य प्रयोगशाला, भोपाल द्वारा किये गये कत्थे के नमूनों के परीक्षण में यह सिद्ध हो गया है कि कत्थे में मिलावट की जा रही है। शिकायत के आधार पर खाद्य विभाग के खाद्य निरीक्षक श्री एस.डी. दुबे ने इन कत्थों के नमूनों को शहर की विभिन्न क्षेत्रों

में संचालित की जा रही पान की दुकानों से एकत्रित किया था। ज्ञात हुआ कि कत्थे में सिंथेटिक और अन्य कलर जैसी कोई चीज मिलाई जाती है, जो खाने में प्राकृतिक रूप से पान-सुपारी के द्वारा होने वाली बीमारियों के अतिरिक्त एलर्जी, कैंसर जैसी बीमारियों को जन्म दे सकती है।

8 जुलाई 2000, के दैनिक भास्कर में पढ़ा था 'कैसे बनता है सिंथेटिक कत्था'। वह बात आश्चर्यचकित करने वाली थी जिसे पढ़कर लगा कि अब पान खाने वाले व्यक्ति सात्विकता से वंचित हो जायेंगे। जो पान स्वास्थ्य के लिए लाभकारी था, वह पान अब कैंसर जैसी बड़ी बीमारियों को सौगात देने का कारण बन रहा है। नकली कत्था असली कत्थे की कीमत से आधी कीमत में मिलता है। असली कत्था, खैर वृक्ष की छाल से बनाया जाता है, लेकिन नकली कत्थे को किसी अन्य वृक्ष की लकड़ी, मुलतानी मिट्टी, जानवरों का खून व बूट पॉलिश आदि का उपयोग करके बनाया जाता है। इसको सुगंधित बनाने के लिये अन्य रसायन मिलाये जाते हैं। यह नकली कत्था चोरी छुपे बिकता है। 75 रुपये से लेकर 150 रुपये किलो के हिसाब से बेचा जाता है। जब उच्चकोटि का असली कत्था लेने जायें तो 400-425 रुपये किलो के भाव से बाजार में मिलता है। इस नकली कत्थे के दुष्परिणाम उपभोगकर्ता की आँतों पर पड़ते हैं। इससे भूख नहीं लगती तथा कब्ज की शिकायत, गले की खराबी और चर्म रोग आदि बीमारियाँ होती है। यही कत्था पान-मसालों में मिलाया जाता है। आमतौर पर देखा जाये तो चूने व कत्थे का मिश्रण काला पड़ जाता है, परन्तु उस पान मसाले को गुलाबी बनाये रखने के लिये खड़िया स्टोन डस्ट और जानवरों को खिलाई जाने वाली खली को गेरु में रंगकर पान-मसाले का रूप दिया जाता है।

**पान मसाले से पथरी** - पान मसाले का प्रयोग जितना व्यापक होता जा रहा है, उतनी ही बीमारियाँ बढ़ती जा रही है। 5 अक्टूबर 1995, 'दैनिक विश्व परिवार', झाँसी में एक सर्वेक्षण आया था-आज पथरी के जितने ऑपरेशन हो रहे हैं, उनमें से आधे ऑपरेशनों से ज्ञात हुआ कि पथरी के लिये पान मसाले ही कारण हैं। पान मसालों को बनाने में प्रयोग किए गए विभिन्न प्रकार के पदार्थ पेट में जमा हो-होकर पथरी का निर्माण करते हैं। जिसके कारण अनेक भयंकर दुष्परिणाम देखने पड़ते हैं और ये पान मसाले दाँतों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। दाँतों पर काले-काले धब्बे पड़ जाते हैं। इसके सेवन से दाँत अपनी वास्तविक छवि को खो देते हैं और जीभ पर भी बुरा असर पड़ता है।

**पान मसाले में सूखी छिपकली का चूर्ण** - यह सच है कि जब से पान मसाला रूपी जहर एक रुपये के पाउचों में आया है, तभी से इसकी गुणवत्ता समाप्त हो गई है। अब तो खुले आम जहर बिकने लगा है और इन पाउचों में काँच, तार के टुकड़े, आलपिन इत्यादि निकलना तो आम बात हो गई है। दैनिक विश्व परिवार, झाँसी के 5 अक्टूबर 1995 के न्यूज पेपर की वह घटना

आश्चर्यजनक एवं सात्विक व्यक्ति की सात्विकता मिटाने वाली है—जब एक व्यक्ति के पान मसाले के पाउच में छिपकली का सिर भी निकला। यह घटना कानपुर की है और सारे शहर में यह बात आग की तरह फैल गई। इसके बाद पुलिस ने खोजबीन की और उस पान मसाले के निर्माता की फैक्ट्री से भारी मात्रा में सूखी छिपकलियाँ बरामद की और इसी तरह सन् 1992 में इन्दौर की एक पान मसाले की फैक्ट्री से एक छापे में बहुत मात्रा में सूखी छिपकलियाँ बरामद की गई थीं।

जून 1995 के माह में कानपुर के एक सब इंस्पेक्टर श्री सुरेन्द्रकुमार लौर ने अपने शहर में पान मसाले की एक ऐसी पुड़िया पकड़ी, जिसमें छिपकली के बच्चे का सिर निकला था। उक्त आधार पर जब सब इंस्पेक्टर श्री लौर ने उस पान मसाले की फैक्ट्री और घर पर छापा मारा तो वहाँ भारी मात्रा में आपत्तिजनक सामान और स्वास्थ्य विरोधी वस्तुएँ बरामद हुईं। अपनी गिरफ्तारी के बाद पान मसाला निर्माता ने स्वीकार किया कि वे अपने पान मसाले में कत्थे एवं चूने की जगह खड़िया मिट्टी, गेरु, जानवरों को खिलाई जाने वाली खली, सड़ी हुई सुपारी एवं तम्बाकू की पत्ती की जगह जहरीले मदार के पत्तों को पीसकर मिलाते थे। पान मसाले के निर्माता ने यह भी स्वीकार किया कि वह कभी-कभी अपने पान मसाले में अफीम की बोकली एवं मरी हुई छिपकली का चूर्ण मिलाता था, क्योंकि ऐसा करने से मसाले में तेजी एवं नशा बढ़ता है। इंस्पेक्टर श्री सुरेन्द्र कुमार लौर ने जहर के व्यापारी को धारा 169/93, 482/489/420 के अंतर्गत कानपुर जेल में भेज दिया और उस समय न्यायालय ने उसकी जमानत नामंजूर कर दी थी।

इंडियन अस्थमा केयर सोसाइटी के सचिव श्री धर्मवीर कटेवा ने बताया कि पानपराग एवं गुटखा में सीसा ही नहीं मिलाया जाता, वरन् मरी हुई छिपकलियों की हड्डियाँ भी पीसकर डाली जाती है ताकि इसको खाने वाला उसका आदी हो जाए। उन्होंने बताया कि कंपनियाँ दो तरह के गुटखों की बिक्री करती हैं, जिनमें से एक जर्दायुक्त एवं एक बिना जर्दा के, जिससे व्यक्ति बिना जर्दा का गुटखा खाते-खाते जर्दा वाला गुटखा भी खाने लग जाता है।

पान मसालों में मुटाजेन नामक घातक तत्त्व पाया जाता है, जिसके प्रयोग से मुँह खुलना और बंद होना, बंद हो जाता है और बोलने की शक्ति कम हो जाती है। लगातार पान मसालों के सेवन से मुख के भीतर का भाग (श्लेष्म पटल) लाल हो जाता है। उस पर फुंसियाँ आने लगती हैं, फिर धीरे-धीरे उनमें घाव बनते जाते हैं, जिससे रोगी को कालांतर में वहाँ पर सफेद चकते उभरने लगते हैं, जिन्हें 'ल्यूकोप्लोकिया' कहा जाता है तथा यहीं से प्रारंभ होती है मुँह के कैंसर की कहानी, जिससे बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

**पान मसाले से कैंसर : एक सर्वेक्षण -** नईदुनिया,

भोपाल 13 दिसम्बर 2000, बुधवार के 'नायिका' विशेषांक में एक सर्वेक्षण की बात पढ़ी—टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च ने एक सर्वेक्षण में यह जानकारी दी कि कैंसर के मरीजों में सत्तर (70%) प्रतिशत गुटखा खाने वाले हैं। गुटखे से मुख कैंसर होने की जानकारी नई जानकारी नहीं है, यह पुरानी बात हो गई और खाने वाले भी सब जानते हैं, लेकिन जानकर अनजान बने हुए हैं। जैसे कोई माँ बेटे को किसी कार्य करने को मना करती है, लेकिन बेटा चुपके-चुपके से वही कार्य करता है बाद में माँ से आकर कहता है—देखो 'मैंने वही काम किया और मुझे कुछ नहीं हुआ' इसी प्रकार की दशा पान मसाले का गुटखा खाने वालों की है।

आज पान मसालों के गुटखे का प्रचलन बढ़ाने के लिए विज्ञानियों की भरमार मची हुई है। लोगों को भ्रमित करने के लिए बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ मीडिया के माध्यम से लोगों को मोहित करने का उपक्रम कर रही हैं। आम लोगों की धारणा है कि केवल तम्बाकू वाले गुटखे से ही कैंसर होता है, तो ऐसा नहीं। कैंसर विशेषज्ञों का कहना है कि बगैर तम्बाकू के गुटखे भी खाये तो 'गेम्बियर' नामक रसायन चबाने वाले के मुँह को कैंसर से ग्रसित कर सकता है। ऐसे रोगियों का गाल खराब होने लगता है और जबड़ा पूरा नहीं खुल पाता है। एक महानगरीय शोध संस्थान 'यूनिवर्सिटी डिपार्टमेंट ऑफ केमिकल टेक्नालॉजी' के शोधार्थियों ने मार्केट में बिकने वाले बहुत तरह के गुटखों और पाउच में बिकने वाले पान मसालों का सर्वेक्षण किया। उन्होंने पाया कि सभी नमूनों में 'एफ्लेटॉक्सिन' नामक विष तत्त्व है, जिससे लीवर कैंसर, सिरोसिस एवं लीवर को गहरी क्षति पहुँचाने वाली अन्य बीमारियाँ हो सकती हैं। इन नमूनों में भारी मात्रा में विषैले जीवाणु भी पाये गये और ऐसी फफूँदियाँ भी जो 'एफ्लेटॉक्सिन' निर्मित करती हैं जबकि विकसित देशों में तो किसी भोज्यपदार्थ में मामूली मात्रा में भी 'एफ्लेटॉक्सिन' पाया जाए तो खाद्य पदार्थ को निरस्त कर दिया जाता है और आज भारत जैसे महान राष्ट्र में ऐसे पदार्थों की बिक्री पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इस जहर को जहररूप न जानकर हम खाते जा रहे हैं और खिलाते जा रहे हैं। हम क्या खा रहे हैं? कैसा खा रहे हैं? आज यह जानना आवश्यक है। इससे ही व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह अच्छे ढंग से कर सकता है। स्वयं स्वस्थ रहेगा, तो उसका परिवार भी स्वस्थ रहेगा।

**उपसंहार—** यह मनुष्यभूत बहुत दुर्लभ है, जिस व्यक्ति का आचरण और खानपान शुद्ध है, ऐसा व्यक्ति ही इस दुर्लभ मनुष्य जीवन का लाभ उठा पाता है। आज के व्यक्तियों की दृष्टि पैसे की ओर होने के कारण खानपान की ओर नहीं जा पाती है। इसी का दुष्परिणाम है रोगों का जन्म होना है, अगर देखा जाये तो मनुष्य के पास जैसा मस्तिष्क है, वैसा किसी के पास नहीं है। मनुष्य चाहे तो कर्मों की मजबूत श्रृंखला को तोड़ सकता है और अपनी बुरी आदतों को छोड़ना कोई मुश्किल काम नहीं है। एक चुटकी में

सब कुछ हो जाता है। जो हमारे तन, मन को खराब करें, ऐसे पदार्थों से मुक्ति पायें और जीवन को शुद्ध आचरण के माध्यम से स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाएँ, यही हमारे जीवन का सही पुरुषार्थ होगा।

### पान मसाला और चिकित्सकों के विचार -

अगली महामारी मुँह कैंसर के रूप में होगी, यदि पान मसालों पर रोक नहीं लगाई गई तो ....।

कैंसर विशेषज्ञ, डॉ. एस.एस. नैयारजी

अगर कोई सोचता है कि धूम्रपान बुरी बात है तो पान मसाला की आदत जानलेवा है।

दंत विशेषज्ञ, डॉ. सुचेतन प्रधान, मुम्बई

सिर्फ पान मसाला होता है जो ज्यादातर अज्ञात तत्त्वों का मिश्रण है। सुगंध पैदा करने वाले तत्व गोपनीय रखे जाते हैं। (पैकिट पर कुछ तत्त्वों के ही नाम होते हैं) पर बीमारी पैदा करने वाले दो तत्व तम्बाकू और सुपारी ही हैं।

डॉ. प्रो. बाबू मैथ्यू, मुम्बई

क्षेत्रीय कैंसर केन्द्र औकोलॉजी

इस संबंध में निर्विवाद सबूत है कि पान मसाले को खतरनाक उत्पाद करार देना जरूरी है।

डॉ. श्रीप्रकाश गुमा,

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुम्बई

गुटखा, पान मसाले एवं जर्दे के सेवन से लकवा, मुँह,

फेफड़ों का कैंसर, हार्ट अटैक, पेट का अल्सर, मूत्राशय का कैंसर और पैरों में वर्जर्स जैसी बीमारियाँ हो जाती है। पान मसाले से मुँह की माँसपेशियाँ कठोर हो जाती है, जिससे मुँह में सबम्यूकस फाईथोसिस बनना शुरू हो जाता है।

डॉ. नरेन्द्र लोढ़ा

नाक, कान, गला रोग विशेषज्ञ

जर्दा एवं पान मसालों को मुँह में ज्यादा देर रखने से मुँह में खिंचाव होने लग जाता है। आवाज में भारीपन आ जाता है। मुँह कम खुलने लगता है। गुटखा खाना जारी रहे तो मुँह का बिल्कुल खुलना बंद हो जाता है।

डॉ. डी.पी. गुमा

जर्दे वाले गुटखे का सेवन करने वाली गर्भवती महिलाओं के पेट में पल रहे बच्चे पर निकोटिन पदार्थ का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे बच्चे या तो विकलांग या फिर मंदबुद्धि हो जाते हैं।

डॉ. यू.एस. चौहान, चर्मरोग विशेषज्ञ

कैंसर वार्ड में 40% से अधिक रोगी जर्दा, गुटखा आदि की वजह से आते हैं। इसके सेवन से मुँह में सफेद घाव बनने लग जाते हैं, जो धीरे-धीरे कैंसर का रूप ले लेते हैं।

डॉ. यू.के. माथुर 'कैंसर इकाई'

## गुरुवर सुधासागर को मेरा

### शत-शत वन्दन

अशोक धानोल्या

उन्नत भाल है, जिनका समतामयी है वचन,  
'सिंह' की मानिंद करते हैं, जिन आगम का प्रवचन,  
माता शांतिदेवी के लाल, पिता रूपचन्द्र के नन्दन,  
ऐसे गुरुवर सुधासागर को मेरा शत-शत वन्दन।

तप से जिनका तन वज्र बना, मन से जो करुणाधारी हैं।  
जो इन्द्रियों पर संयम रखते, भोगों के नही भिखारी हैं ॥  
जो राग द्वेष को जीत रहे, संयम समता के द्वारा।  
उन पूज्य मुनि सुधासागर को, शत-शत नमन हमारा ॥

करते नित जो मंगल ध्यान,  
वैराग्य से ऊँचा जिनका नाम।  
ऐसे गुरुवर "सुधा सागर" को  
'अशोक' करता शत-शत प्रणाम ॥

श्री शान्तिनाथ जैन अतिशय क्षेत्र  
'सुदर्शनोदय' तीर्थ  
आंवा टोंक ( राज. ) 304802

## राजुल-गीत

श्रीपाल जैन 'दिवा'

सखी री चाहत मन की साध।  
सखी गुन चाहत मन की साध ।  
मन आतम के क्षितिज हुआ क्यों, उदय अस्त अपराध।  
पल दो पल की कौन कहे सँग, बिता न पल एकाध।  
फिर भी मन बहता उनके सँग, मन कैसा निर्बाध।  
निर्मोही पर हुआ बावला, भव-भव जलधि अगाध।  
मन ही मेरा हुआ पराया, निर्वश मन की साध।  
पल भर आ दर्शा जावें वे, मेरा क्या अपराध ?  
(2)

राजुल कर्पूरी है राग।  
सखी री कर्पूरी है राग।  
साध तुम्हारी चाहत है पर, चाहत वहाँ विराग।  
उदय अस्त की दिशा व दूरी, कैसे खेले फाग।  
अरुणाई द्वय भिन्न सार है, भेद ज्ञान से जाग।  
सम्यग्दर्शन ज्ञान हुआ सखि, उनके जागे भाग।  
संकल्पी अणुओं का कर्षण, पीता राग विराग।  
तेरा कर्षण रागाधारित, उनका धार विराग।

शाकाहार सदन,  
एल. 75, केशर कुंज, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल-3

# जिज्ञासा-समाधान

पं. रतनलाल बैनाड़ा

**जिज्ञासा** - आजकल बहुत से जैनी भाई, अन्य धर्मों के गुरुओं की भक्ति में रचे गये गुरु भक्ति के कैसेटों को बजाने लगे हैं। ये कैसेट मुनिमहाराजों के चातुर्मास में लगी हुई साहित्य की दुकानों पर मिलते हैं। क्या इनका बेचना या बजाना उचित माना जाये ?

समाधान - वर्तमान में जैनेतर धर्मों द्वारा अपने गुरुओं की भक्ति में बनाए गए कैसेटों की इन दुकानों में भरमार दिखाई देने लगी है। ये कैसेट "गुरुभक्ति" के नाम से उपलब्ध हैं। जैनी भाई इसके अच्छे संगीत और मीठी आवाज के कारण इनको खरीद लेते हैं, जबकि यदि ध्यान से सुना जाये तो ये जैन साधुओं की भक्ति के गीत नहीं हैं। दुख इस बात का है कि हम लोग कैसेट बजाना तो पसन्द करते हैं, पर उसके बोलों पर ध्यान नहीं देते। हमें केवल अच्छा म्यूजिक होने के कारण इनको बजाना पसन्द है, न कि गुरुभक्ति के कारण। कैसेट निर्माताओं ने इतनी चालाकी कर रखी है कि वे इस पर अपना नाम नहीं लिखते। वर्तमान में ऐसे बहुत से गुरुभक्ति के कैसेट उपर्युक्त दुकानों द्वारा समाज में बेचे जा रहे हैं। वास्तव में इनका बेचना और बजाना दोनों ही उचित नहीं है। जहाँ भी चातुर्मास हो, वहाँ के आयोजकों को चाहिए कि वे ऐसे कैसेटों की बिक्री पर रोक लगाएँ तथा इन धार्मिक पुस्तकों के स्टॉलों पर केवल दिगम्बर जैन साहित्य तथा केवल दिगम्बर जैन गुरुओं के कैसेट बिक्री होने दें।

पिछले दिनों श्वेताम्बरों द्वारा प्रचारित तथा अनुराधा पोडवाल द्वारा गाये गए "भक्तामर स्तोत्र" के कैसेट अपने समाज में बहुत प्रचलित हुए। गायिका की सुरीली आवाज के कारण इनको खरीद तो लिया, लेकिन यह ध्यान नहीं दिया कि कैसेट के प्रारंभ में जो मंगलाचरण है, उसमें पहले मंगलाचरण में "मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी, मंगलं स्थूलभद्राद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलं" यह मंगलाचरण दिया है तथा इसमें बजाय 48 काव्यों के मात्र 44 ही काव्य हैं, क्योंकि श्वेताम्बरों में 44 काव्यों की मान्यता है। अतः हमें गायिका की सुरीली आवाज को न देखते हुए ऐसे गलत कैसेटों को हटा देना चाहिए।

**जिज्ञासा** - चान्द्री चर्या किसे कहते हैं ?

समाधान - जैसे चन्द्रमा का प्रकाश किसी के घर आँगन आदि का भेद न करके सबके घर में फैलता है, उसी प्रकार दिगम्बर साधु भी राजा-रंक आदि का भेद न करके सभी श्रावकों के घर आहार के लिए चर्या करते हैं, उसे चान्द्री चर्या कहते हैं।

**जिज्ञासा** - क्या देवों के भावलेश्या के अनुसार द्रव्य लेश्या होती है ?

समाधान - श्री जीवकाण्ड गाथा 496 में इस प्रकार कहा

है -

गिरया किण्हा कप्पा, भावाणुगया हु तिसुरण तिरिये।

उत्तरदहे छक्कं भोगे रविचंदहरि दंगा ॥ 496 ॥

**अर्थ** - सम्पूर्ण नारकी कृष्णवर्ण ही है। कल्पवासी देवों की द्रव्यलेश्या (शरीर का वर्ण) भावलेश्या सदृश होती है। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी, मनुष्य, तिर्यच इनकी द्रव्यलेश्या छहों होती हैं तथा इन देवों की विक्रिया के द्वारा उत्पन्न होने वाले शरीर का वर्ण भी छह प्रकार में से किसी भी एक प्रकार का होता है। उत्तम भोग भूमि वाले मनुष्य तिर्यचों का शरीर सूर्य समान, मध्यम भोग भूमि वाले मनुष्य तिर्यचों का शरीर चन्द्र समान तथा जघन्य भोगभूमि वाले मनुष्य/तिर्यचों का शरीर हरितवर्ण होता है।

श्री तिलोयपण्णत्ति अधिकार-5, गाथा नं. 55 से 58 में इस प्रकार कहा है "सब किन्नर देव प्रियंगु सदृश देह वर्ण से, किम्पुरुष देव स्वर्ण सदृश देह वर्ण से, महोरग श्याम वर्ण वाले, गंधर्व स्वर्ण सदृश, यक्ष देव श्याम वर्ण से, राक्षस, भूत और समस्त पिशाच कृष्ण वर्ण के शरीर वाले होते हैं।"

श्री धवला पु.2, पृष्ठ 532-535 में इस प्रकार कहा है- "द्व्व लेस्सा णाम वण्ण णाम कम्मोदयादो भवदि, ण भाव लेस्सा दो। वण्णणाम कम्मोदयादो भवण वासियवाणवेंतरजोइसियाणं द्व्वदो छ लेस्साओं भवंति, उवरिम देवाणं तेउ-पम्मसुक्क लेस्साओ भवंति।"

**अर्थ**- द्रव्यलेश्या, वर्णनामा नामकर्म के उदय से होती है, भावलेश्या से नहीं। वर्णनामा नाम कर्म के उदय से भवनवासी, वाणव्यन्तर और ज्योतिषी देवों के द्रव्य की अपेक्षा छहों लेश्याएँ होती हैं तथा भवनत्रिक से ऊपर देवों के तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएँ होती हैं। श्री राजवार्तिक में भी इसी प्रकार लिखा है।

उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि भवनत्रिक देवों में भावलेश्या के अनुसार द्रव्यलेश्या का नियम नहीं है, जबकि सभी कल्पवासी देवों में भावलेश्या के अनुसार द्रव्यलेश्या होने का नियम है।

**जिज्ञासा** - शुभ लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि देव जब चयकर मनुष्य या तिर्यच बनते हैं, तब उनके शुभ लेश्या रहती है या नहीं ?

**समाधान** - उपर्युक्त प्रश्न के समाधान में श्री धवलपुस्तक 2, पृष्ठ, 656 पर इस प्रकार कहा है- "देव मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मा दिट्ठिणो तेउ-पम्मसुक्कलेस्सासु वट्टमाणा णट्टलेस्सा होऊण तिरिक्खमुणस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पणपढमसमए चव किण्हाणीलकाउलेस्साहि सह परिणमंति।"

**अर्थ** - तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याओं में वर्तमान मिथ्यादृष्टि



और सासादान सम्यग्दृष्टि देव, तिर्यच और मनुष्यों में उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या होकर अर्थात् अपनी-अपनी पूर्व की लेश्या को छोड़कर मनुष्यों और तिर्यचों में उत्पन्न होने के प्रथम समय कृष्ण, नील और कपोत लेश्या से परिणत हो जाते हैं।

उपर्युक्त प्रमाण से यह ज्ञात होता है कि शुभलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि तथा सासादन देवों की शुभलेश्याएँ मरण होते ही नष्ट हो जाती हैं और ये देव नियम से अशुभ लेश्याओं में चले जाते हैं। यह भी विशेष है कि सभी सम्यग्दृष्टि देव शुभ लेश्याओं में मरण करके मनुष्यों में उत्पन्न होते हुए अपनी-अपनी पीत-पद्म और शुक्ल लेश्याओं के साथ ही मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं।

(श्री धवला पु.2, पृष्ठ 511)

**जिज्ञासा** - सुदर्शनमेरु की चोटी से सौधर्म स्वर्ग के ऋजु विमान के बीच में उत्तम भोगभूमि के बालाग्र प्रमाण दूरी कही गई है, तो क्या अन्य भूमि के बाल इससे स्थूल होते हैं ?

**समाधान** - विभिन्न भोगभूमियाँ जीवों के बालों की मोटाई में, इस प्रकार अंतर कहा गया है

आठ उत्तम भोगभूमि के बालाग्र = एक मध्यम भोगभूमि का बालाग्र  
आठ मध्यम भोगभूमि के बालाग्र = एक जघन्य भोगभूमि का बालाग्र  
आठ जघन्य भूमि का बालाग्र = एक कर्मभूमि संबंधी बालाग्र

उपर्युक्त प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि उत्तम भोगभूमि का बालाग्र सबसे पतला होता है।

**जिज्ञासा** - क्या मानुषोत्तर के पर भाग से स्वयंप्रभ पर्वत तक जघन्य भोगभूमि में, केवल भोगभूमियाँ तिर्यच ही होते हैं या अन्य तिर्यच भी पाये जाते हैं ?

**समाधान** - सामान्यतः तो मानुषोत्तर के पर भाग से स्वयंप्रभ पर्वत तक जघन्य भोगभूमि होने से भोगभूमियाँ जीव ही पाये जाते हैं, परन्तु श्री धवला पु. 7, पृष्ठ 379 में इस प्रकार भी प्रमाण मिलता है- "अथवा सव्वेसुदीव-समुद्देसु पंचिन्द्रियतिरिक्ख अपज्जत्ता ह्येति। कुदो पुव्ववइरियदेवसंबंधेण कम्मभूमिपडिभागुप्पण्णपंचिन्द्रियतिरिक्खाणं एगबंधणबद्धछ्ज्जीवणिकाओगाढ ओरालिय देहाणं सव्वदीवसमुद्देसु पंचिन्द्रियतिरिक्खअपज्जत्ता ह्येति।" अथवा सभी द्वीप समुद्रों में पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव होते हैं, क्योंकि पूर्व के बैरी देवों के संबंध से एक बन्धन में बद्ध छह जीवनिकायों से व्याप्त औदारिक शरीर को धारण करने वाले कर्मभूमि प्रतिभाग में उत्पन्न हुए पंचेन्द्रिय तिर्यचों का सर्व समुद्रों में अवस्थान देखा जाता है।

भोगभूमि में मात्र एक से चार गुणस्थान पाये जाते हैं, क्योंकि संयमासंयम या संयम का धारण करना वहाँ संभव नहीं। अतः मानुषोत्तर के परभाग से स्वयंप्रभ पर्वत के पूर्वभाग तक भोगभूमियाँ तिर्यच ही होने से केवल 1 से 4 गुणस्थान ही वहाँ पाये जाते हैं, परन्तु धवला पु. 4, पृष्ठ 169 में इस प्रकार भी कहा है- **कथं संजदासंजदाणं सेसदीव-समुद्देसु संभवो। ण, पुव्ववेरियदेवेहि तत्थ धित्ताणं संभवं पडिविरोधाभावा। प्रश्र-**

मानुषोत्तर पर्वत से परभागवर्ती व स्वयंप्रभाचल से पूर्वभागवर्ती शेष द्वीप समुद्रों में संयतासंयत जीवों की संभावना कैसे है ? उत्तर- नहीं, क्योंकि पूर्व भव के बैरी देवों के द्वारा वहाँ ले जाये गये तिर्यच संयतासंयत जीवों की संभावना की अपेक्षा कोई विरोध नहीं है। अर्थात् बैरी देवों द्वारा कर्मभूमि से उठाकर फेंके गए पंचमगुणस्थानावर्ती तिर्यचों का उन जघन्य भोगभूमियों में भी सद्भाव पाया जाता है। यह भी ज्ञातव्य है कि यद्यपि भोगभूमियों में विकलत्रय जीव नहीं पाये जाते, परन्तु बैरी देवों के प्रयोग से भोगभूमि प्रतिभाग रूप द्वीप समुद्रों में पड़े हुए तिर्यच शरीरों में विकलेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है, ऐसा कहने वाले आचार्यों के अभिप्राय से मानुषोत्तर के परभागवर्ती द्वीप समुद्रों में विकलेन्द्रिय जीव भी पाये जाते हैं। (देखे श्री धवला पु. 6, पृष्ठ-426)

**जिज्ञासा** - श्री विष्णुकुमार महामुनि ने ब्राह्मण का वेष बनाया और विक्रिया ऋद्धि को प्रयोग में लिया। तो क्या मुनिराज को प्राप्त ऋद्धियाँ, सग्रंथ अवस्था में भी अपना प्रभाव रखती हैं ?

**समाधान** - उपर्युक्त प्रश्न के संबंध में हम दो तरह से विचार करेंगे। 700 मुनियों के उपसर्ग निवारण हेतु क्या विष्णुकुमार महामुनि ने वामन का रूप धारण किया था या नहीं ?

2. वामन की अवस्था में क्या विक्रियाऋद्धि का प्रयोग किया गया था और तब उनका गुणस्थान कौन सा था ? अब प्रथम प्रश्न पर विचार करते हैं-

1. श्री हरिवंशपुराण (ज्ञानपीठप्रकाशन, पृष्ठ 301-302) पर इस प्रकार लिखा है- राजा पद्म के ऐसा कहने पर विष्णुकुमार मुनि बलि के पास गये और बोले ... यदि शांति चाहते हो तो शीघ्र ही इस प्रकार जन्य उपसर्ग का संकोच करो। तदनन्तर बलि ने कहा कि यदि ये मेरे राज्य से चले जाते हैं तो उपसर्ग दूर हो सकता है, अन्यथा ज्यों का त्यों बना रहेगा। इसके उत्तर में विष्णुकुमार मुनि ने कहा कि ये सब आत्मध्यान में लीन हैं, इसलिए यहाँ से एक डग भी नहीं जा सकते।... इन मुनियों के ठहरने के निमित्त तुमसे तीन डग भूमि की याचना करता हूँ।... विष्णुकुमार मुनि की बात स्वीकृत करते हुए बलि ने कहा कि यदि ये उस सीमा के बाहर एक डग का भी उल्लंघन करेंगे तो दण्डनीय होंगे.....। तदन्तर बलि को वश में करने के लिए विष्णुकुमार मुनि उद्यत हुए... उन्होंने एक डग मेरु पर रखी, दूसरी मानुषोत्तर पर और तीसरी अवकाश न मिलने से आकाश में ही घूमती रही। (इस प्रमाण के अनुसार तो विष्णुकुमार महामुनि ने मुनि अवस्था में ही उपसर्ग निवारण किया था, उन्होंने वामन का रूप नहीं बनाया था)

2. श्री उत्तरपुराण (ज्ञानपीठ प्रकाशन) पृष्ठ 358 पर इस प्रकार कहा है- इतना कहकर वे महामुनि वामन (बौने) ब्राह्मण का रूप रखकर बलि के पास पहुँचे और आशीर्वाद देते हुए बोले ...।

3. श्री रत्नकरण्डश्रावकाचार (आ. प्रभाचन्द्र टीका-हिन्दी पं. पन्नालाल जी)- पृष्ठ-52 पर इस प्रकार कहा है तदनन्तर

विष्णुकुमार मुनि ने एक बौने ब्राह्मण का रूप बनाकर उत्तम शब्दों द्वारा वेदपाठ करना शुरू किया।

4. श्री महापुराण (पुष्पदन्त कवि विरचित, पृष्ठ-53) में इस प्रकार कहा है-यह सुनकर मुनि विष्णु तत्काल वहाँ से निकले-ऋचाएँ पढ़ते, ओंकारध्वनि करते हुए, आसन और कमण्डलु लिए हुए सफेद छत्री लगाये हुए, दूब और जपमाला से हाथ को अलंकृत कर, मीठी वाणी बोलते हुए, यज्ञोपवीत व विभूषित, गेरुये रंग का वस्त्र पहने हुए, उपदेशक के रूप में।

5. श्री पांडवपुराण (शुभचन्द्राचार्य विरचित-अनेकान्त विद्वत परिषद प्रकाशन, पृष्ठ 122) में इस प्रकार कहा है-“ऐसा बोलकर विष्णुकुमार मुनि वामन का रूप धारण करके यज्ञभूमि को चले गए। ब्राह्मण का रूप धारण कर वे धीरे विद्वान् मुनि बलि को इस प्रकार कहने लगे....।”

उपर्युक्त प्रमाण नं. 2 से 5 के अनुसार यह स्पष्ट है कि श्री विष्णुकुमार महामुनि ने वामन (ब्राह्मण) का रूप धारण करके उपसर्ग का निवारण किया था, जबकि उपर्युक्त प्रमाण नं. 1 के अनुसार उन्होंने मुनि अवस्था में रहते हुए उपसर्ग निवारण किया

था। अब दूसरे प्रश्न पर विचार करते हैं- श्री धवल पु.4, पृष्ठ 44 इस प्रकार कहा है- संजदासंजदाणं कथं वेउव्वियमुग्धादस्स संभवो। ण, ओरालियसरीरस्स विउव्वणप्पयस्स विण्हुकुमारादिसु दंसणादो। अर्थ - प्रश्न-संयतासंयतों के वैक्रियक समुद्घात कैसे संभव है। उत्तर-नहीं, क्योंकि विष्णुकुमार मुनि आदि में विक्रियात्मक औदारिक शरीर देखा जाता है। अर्थात् श्री धवलाकार के अनुसार श्री विष्णुकुमार महामुनि ने वस्त्र सहित वामन (ब्राह्मण) का रूप बनाया था। उस समय उनवे संयतासंयत नामक पाँचवाँ गुणस्थान था और निर्ग्रन्थ अवस्था में प्राप्त विक्रिया ऋद्धि का प्रयोग उन्होंने उस सवस्त्र ब्राह्मण अवस्था में पंचम गुणस्थान में किया था।

इस प्रकार निष्कर्ष यह निकलता है कि श्री हरिवंशपुराणकार के अनुसार तो उपसर्ग निवारण एवं ऋद्धि प्रयोग निर्ग्रन्थ अवस्था में ही हुआ, जबकि श्री धवलाकार एवं उपर्युक्त प्रमाण नं. 2 से 5 के अनुसार निर्ग्रन्थ अवस्था में प्राप्ति ऋद्धि का प्रयोग सग्रन्थ पंचम गुणस्थान में भी होता है।

1/205, प्रोफसर्स कॉलोनी,  
आगरा ( उ.प्र. )-282002

## ग्रन्थ समीक्षा

# “महायोगी महावीर” : कृति और कथ्य

कपूरचन्द्र जैन 'बंसल'

तीर्थंकर महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष के पावन अवसर पर महावीर स्वामी के जीवन और सिद्धांतों पर 'महायोगी महावीर' गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के साहित्य मनीषी शिष्य मुनि श्री समतासागर जी महाराज द्वारा रचित एक ऐसी तथ्यात्मक कृति है, जिसमें महावीर के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण घटना/संस्मरण और संदेशों को अत्यन्त सरल, सुबोध और सरस भाषा में प्रस्तुत किया गया है। कृतिकार ने अपनी असाधारण प्रतिभा के द्वारा आद्यन्त मौलिकता और कथा के अविरोध प्रवाह की जिस चिन्तन की गहराई के साथ बनाये रखा है, वह अत्यन्त प्रभावकारी है। मुनि श्री ने स्वयं ही अपनी लेखनी से कृति की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि सरल और सारगर्भित कृतियाँ समाज की समसामयिक आवश्यकता है। ऐसी कृतियों के पठन और पाठन से भाषा तथा भाव पाठक के अन्तर्मन में सहज ही उतर जाता है। भील से भगवान् बनने तक के पूर्व भव, भवान्तर, पंचकल्याणकों से सुशोभित वर्तमान जीवन, गणधर परमेष्ठी और उत्तरवर्ती परम्परा, समवशरण विहार से तत्कालीन नरेशों पर प्रभाव और चाँदनपुर के टीलेवाले बाबा का चमत्कार आदि

विषय कुछ इस तरह लिपिबद्ध किये गये हैं कि इतना लम्बा कथाक्रम भी चलचित्र की तरह पाठक के मानस पटल पर सहज ही अंकित हो जाता है। गागर में सागर सा सार समाहित करने वाली इस कृति को 'महावीर डिव्शनरी' भी कहा जा सकता है। श्रद्धालु और सुधीजन इस कृति को पढ़कर तीर्थंकर महावीर प्रभु को जानें, पहचानें और अपने जीवन में उसी ज्योति को जगायें, यही महावीर के प्रति मुनि श्री का भक्ति-अर्घ है। 166 पृष्ठों में लिखी गई आद्यन्त आकर्षक तथा सारगर्भित कव्हर पृष्ठ के साथ निर्दोष मुद्रित हुई है। म.प्र. शासन के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी ने इस कृति के प्रथम संस्करण का विमोचन रविवार 6 नवम्बर 2001 को विशाल धर्मसभा में टीकमगढ़ में किया। अल्प मूल्य में जनजन को उपलब्ध कराये जाने के साथ-साथ भगवान् महावीर स्वामी के 2600वें जन्म महोत्सव की प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय समिति के विशिष्ट सदस्यों को उपलब्ध कराने का प्रयास मुनि श्री के भव्य श्रद्धालुजन कर रहे हैं। कृति दर्शनीय, पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है।

श्री गोकुल सदन, जतारा  
जिला टीकमगढ़ ( म.प्र. ) 472118

जिस रोज मैंने भिलाई स्टील प्लाण्ट की नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने हेतु फार्म भरा, उसी रोज से मेरे मन में किसी राजनीतिक दल में घुस जाने की लालसा बलवती हो गई। इसके पहले किसी भी राजनीतिक दल से मेरा कभी कोई सरोकार नहीं रहा। कम से कम प्रत्यक्ष रूप से तो कदापि नहीं, क्योंकि एक सरकारी उपक्रम में अफसर होने के नाते मैं जिस आचार-संहिता में बँधा रहा, उसमें किसी भी राजनीतिक दल से किसी भी तरह का संबंध सर्वथा वर्जित था और मैं एक पतिव्रता नारी की तरह सामाजिक वर्जनाओं के प्रति परम्परागत रूप से सदैव समर्पित रहा। लेकिन अब, जबकि मैं दासता की बेड़ियाँ स्वतः काट कर उन्मुक्त आकाश में विचरण करने के लिए उद्यत था, अपनी एक दमित अभिलाषा को मूर्त रूप देने लालायित हो उठा, राजनीति के क्षेत्र में सर्वोच्च सफलता के सपने देखने लगा।

अपनी इस योजना से बच्चों को अवगत कराया तो वे फौरन मान गए। यह मेरे लिए अप्रत्याशित था। मुझे उम्मीद थी कि पूर्व की भाँति ही बच्चे मुझे नौकरी से ही लगे रहने की सलाह देंगे। यहाँ मैं यह बतला दूँ कि जिस कंपनी में मैं पिछले छत्तीस वर्षों से काम कर रहा था, वह पिछले पन्द्रह वर्षों से कर्मचारियों की संख्या कम करने के उद्देश्य से एक से एक लुभावनी स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजनाएँ लागू किए जा रही थी। पर कर्मचारी थे कि अपेक्षित संख्या में फँसते ही नहीं थे। कभी-कभी मेरा मन करता कि यदि और कोई आगे नहीं आता, तो क्यों न मैं ही कंपनी को उपकृत कर दूँ? बच्चों से अपनी मंशा बतलाता तो वे फौरन आड़े आ जाते। कहते “रिटायरमेंट लेकर करोगे क्या? बिना काम के घर में बैठोगे तो समय से पहले ही बुढ़ा जाओगे। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। समय काटे नहीं कटता।” और जो नहीं कहते वह था - “नौकरी छोड़कर घर में रहोगे तो चौबीसों घंटे हमारी मूड़ पर सवार रहोगे या गर्दन पर साँस छोड़ोगे (अंग्रेजी के ‘ब्रीदिंग ओवर दी नेक’ से साभार); हर काम में मीन-मेख निकालोगे। न खुद सुख से रहोगे, न हमें रहने दोगे। अभी दिन में दस-बारह घंटे घर से बाहर रहते हो, तो कुछ तो राहत रहती है, फिर तो हरदम हमारी जान साँसत में रहेगी। इससे तो बेहतर है कि जहाँ लगे हो, वहीं लगे रहो। वरना खुद को भी समय काटना दूभर होगा और हमें भी।”

समय काटना, हमारे देश में, सचमुच ही एक मुश्किल काम है। लोगों के पास इफ़रात समय है, जबकि करने को ज्यादा कुछ भी नहीं है। इसीलिये तो बेचारे सरकारी कर्मचारियों को ज्यादातर समय क्रिकेट कमेन्ट्री सुनते हुए व्यतीत करने को बाध्य होना पड़ता है या फिर बार-बार कुर्सी से उठकर चाय पीने जाना

पड़ता है। इतर लोग सिनेमा घरों के इर्द-गिर्द घूमते हुए “टाइम पास” करते हैं अथवा सड़क पर यों ही घूमते हुए। कुछ लोग शौकिया पढ़ने भी चले जाते हैं। ऊपर से मुसीबत यह कि मेडिकल साइन्स ने आदमी की औसत उमर बढ़ा कर समस्या और भी जटिल कर दी है। पहले जिस उम्र में “राम-नाम सत्य है” होने को होता था, अब उस उम्र में लोग शादी-ब्याह की चर्चा करने को सोच रहे होते हैं। संभवतः इसी के मद्देनजर, आदरणीय अटलजी ने रिटायरमेंट की उम्र अट्टावन से साठ कर दी, ताकि भैया लोग दो वर्ष और सरकारी कुर्सी से चिपके रहने का आनंद भोग सकें और संसार त्यागने की तिथि की प्रतीक्षा-अवधि कुछ कम हो सके।

लेकिन मैंने जो राजनीति में प्रवेश का निर्णय लिया, उसका उद्देश्य मात्र समय गुजारना तो निश्चित ही नहीं था। हालाँकि बच्चों की सोच कुछ अलग रही होगी, पर मैं जो राजनीति में जाने के लिए लालायित था, उसके पीछे मूलतः मेरे अनेक मित्रों का यह अनुरोध था कि चूँकि राजनीति में अच्छे लोगों का सर्वथा अभाव है, इसलिए मुझ जैसे लोगों को राजनीति में अवश्य जाना चाहिए। उनका कहना था कि उच्चशिक्षाप्राप्त, प्रखर वक्ता, कुशल प्रशासक, स्पष्ट सोचवाले और शत-प्रतिशत ईमानदार लोग राजनीति में दूर-दूर तक दृष्टिगोचर नहीं होते। इसीलिए तो देश को सही मार्ग-दर्शन नहीं मिल पाता। “इसी कमी को पूरा करने के लिए” वे कहते, “जैन साब, आपको राजनीति में जरूर जाना चाहिए।”

मैं मन ही मन मुदित होता। कुछ सकुचाते हुए कहता - “भैया अब मेरी उम्र हो गई है। साठ के नजदीक पहुँच गया हूँ। अब तो बाकी समय भगवद् भजन में बिताना ही श्रेयस्कर होगा। राजनीति में भला अब मैं क्या कर पाऊँगा?”

“कैसी बातें करते हो?” वह कहते-“राजनीति में प्रवेश की सही उम्र तो यही है। जवान-नौजवान जुलूस में नोरबाजी के लिए तो ठीक हैं, पर राजनीति की सही समझ तो उम्र के साथ ही आती है। अपना बस चले तो राजनीति में प्रवेश की न्यूनतम उम्र साठ वर्ष करवा दें। लोकसभा, विधानसभा में जितने ज्यादा बुजुर्ग पहुँचेंगे, जूते-चप्पल उतने ही कम चलेंगे। बाजुओं में माइक तोड़ने लायक जोर नहीं होगा, तो वाद-विवाद से ज्यादा काम लिया जावेगा और फिर आप तो भगवान की दया से वैसे ही हट्टे-कट्टे हो। बीस-पच्चीस साल तो राजनीति में सहज ही चल जाओगे।”

और इस तरह मैं एक काफी लम्बे असें से निरंतर उत्साहित होता चला आ रहा था। बस फिर क्या था? इधर मुझे सेवानिवृत्ति मिली, उधर मैंने राजनीति में प्रवेश का खुला ऐलान करते हुए

कहा- “बचना अय नेताओ..... लो मैं आ गया।” मानों कोई पहलवान लँगोटा घुमाते हुए अखाड़े में प्रवेश कर गया हो।

मुझे इस बात का पूरा भरोसा था कि नामी राजनीतिक दल, मेरे ऐलान के मद्देनजर, फौरन मुझसे सम्पर्क स्थापित कर मुझे अपने-अपने दल में सम्मिलित होने हेतु सहर्ष आमंत्रित करेंगे और मैं थोड़े नखरे दिखाने के बाद किसी तरह ठीक से दल में प्रवेश कर जाऊँगा। पर दिन, हफ्ते तो क्या, महीनों गुजर जाने के बाद भी किसी दल का कोई पदाधिकारी मुझ तक पहुँचना तो दूर, मेरे दरवाजे के सामने से भी नहीं गुजरा, समारोहों में दरी बिछाने वाले कार्यकर्ता के समकक्ष नेता तक नहीं। मेरे लिए यह घोर निराशा की स्थिति थी। पर मेरे दोस्तों ने मुझे पुनः उत्साहित किया। बोले-“यही तो विडम्बना है कि एक काबिल आदमी इच्छुक होते हुए भी राजनीति में नहीं घुस पाता। कारण कि वह स्वभाव से संकोची होता है। जब तक कोई उसे बुलाता नहीं, वह जाता नहीं। और जो राजनीति में होते हैं, वे काबिल को भला क्यों बुलाएँगे? अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारेंगे क्या? इसलिए जैन साब! आप संकोच त्यागें और अपने पसंदीदा राजनीतिक दल में प्रवेश करने हेतु स्वयं पहल करें।”

मेरे लिए किसी दल विशेष का चुनना निहायत ही मुश्किल काम था। मुझे तो सभी दल एक जैसे लगते थे। एक ही थैली के चट्टे-बट्टे। इसलिए मैंने, सर्वप्रथम, एक बहुत पुराने राजनीतिक दल में, जिसे दशाब्दियों तक राज करने का अनुभव था, प्रवेश करने के इरादे से उसके स्थानीय प्रमुख से भेंट की।

उक्त दल (जिसे मैं सुविधा के लिए ‘क’ दल कहूँगा) के प्रमुख ने, जो कि स्थानीय सब्जी मंडी के अध्यक्ष भी थे, मेरा चारों तरफ से मुआयना किया। फिर बोले- “आप कौन जात हो?” “मैं जैन हूँ,” मैंने कहा।

“वो तो ठीक है पर कौन से जैन हो? श्वेताम्बर हो या दिगम्बर? बीस पंथी हो या तेरा पंथी?”

यह मेरे लिए हल्थे से उखड़ जाने वाली बात थी। फिर भी नम्रता बनाए रखते हुए मैंने कहा-“इस बात से राजनीति का क्या सरोकार?”

“है। सरोकार है। संबंध है, जरूर है।” उन्होंने इतमीनान से कहा-“यह जानकारी बड़ी बारीकी से रखना होती है कि कौन आदमी किस जगह से कितने वोट निकलवा सकेगा? अर्थात् जिस जगह पर, जिस जाति के जितने वोट होते हैं, उसी हिसाब से उस स्थान पर उस जाति का नेता तैनात किया जाता है। इसके अलावा किसी कार्यकर्ता, किसी नेता की कोई अहमियत नहीं होती।”

“लेकिन यह तो सरासर फिरकापरस्ती है।” मैंने साश्चर्य कहा-“इसे तो राजनीति से हर हाल में दूर रखना चाहिए। इसी ने तो देश को बर्बाद कर रखा है। इसके विरुद्ध तो हमें सख्त कानून बना देना चाहिए।”

“वो कानून बनाइएगा तब, जब संसद में पहुँचिएगा। पर संसद में पहुँचने को होते हैं वोट दरकार, जो वैसे ही मिलते हैं जैसे हम कह रहे हैं। आगे आपकी मर्जी।”

इसके बाद जिस दल में घुसने की संभावना तलाशने का प्रयत्न मैंने किया, उसे मैं ‘ज’ दल कहूँगा। जदल के स्थानीय प्रधान को मैंने अपेक्षाकृत विनम्र पाया। उन्होंने न केवल मेरा स्वागत किया बल्कि जदल में सम्मिलित होने का विचार करने हेतु मुझे धन्यवाद भी दिया। कहा-“आप जैसे लोगों की हमारे दल में अत्यंत आवश्यकता है। आपकी सोच, आपकी समझ, आपके अनुभव से हमें निश्चय ही लाभ होगा। वैसे एक बात बतलाएँ मान्यवर! कि मंदिर को आप कितना आवश्यक मानते हैं?”

“बहुत आवश्यक स्थान मानता हूँ”, मैंने कहा-“आदमी के जीवन को सही दिशा देने में मंदिर का विशिष्ट योगदान होता है। प्रभु के दर्शन व आराधना से मन में शुद्ध विचारों का उदय होता है। आत्मा का कल्याण होता है।”

“वही तो हम कहते हैं”, मेरे प्रत्युत्तर से उत्साहित होते हुए उन्होंने कहा-“लेकिन हमारे विरोधी हैं कि हमारे मंदिर कहते ही भड़क उठते हैं। मानो हमने कोई अपशब्द कह दिया हो अथवा किसी साँड़ को लाल कपड़ा दिखा दिया हो। आप तो जैन साब! लोगों को मंदिर की महिमा समझाने में हमारी मदद कीजिए।”

“जरूर करूँगा।” मैंने उन्हें आश्चस्त किया-“लोगों को मंदिर का महत्त्व समझाऊँगा और मस्जिद का भी। गुरुद्वारा की महत्ता बतलाऊँगा और गिरजाघर की भी। धर्म की प्रभावना तो हर हाल में हितकारी होती है। हर धर्म की प्रभावना।”

मेरी बात सुनते ही प्रधान जी को सहसा अपने किसी अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य की याद आ गई और मुझे साक्षात्कार का परिणाम तत्काल स्पष्ट हो गया।

जाहिर है कि मेरे सत्प्रयत्नों के बावजूद किसी स्थापित राजनीतिक दल से मेरी पटरी नहीं बैठ पा रही थी, लेकिन इन थोड़े से दिनों में मेरे इर्द-गिर्द कुछ लोग एकत्रित होने लगे थे। सुबह-शाम घर पर कुछ लोग चाय-नाश्ते पर आने लगे थे। मेरे समर्थकों का एक गुट बन गया था। संयोग की बात कि इसी समय लोकसभा के चुनाव होने की घोषणा हो गई। मेरे मन में हूक उठी और मैं एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव में कूद पड़ा।

मेरे इस निर्णय की मिली-जुली प्रतिक्रिया हुई। परिवार वालों ने मुझे मना किया। बहुत समझाया कि मेरा लोकसभा का चुनाव लड़ना किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं है। जीतने का तो सवाल ही नहीं उठता था, जमानत बचा पाने की भी गुंजाइश नहीं थी। सेवानिवृत्ति पर मिली रकम का मटियामेट होना तय था। बुढ़ापे में मिट्टी-पलीद होना निश्चित थी। लेकिन मैं जो था पिछले कुछ महीनों से उत्साह से लबालब चल रहा था। देशप्रेम की भावना हिलोरें मार रही थी और मेरे समर्थक मुझे जिताने के लिए

कमर कस कर खड़े हो गए थे। वे हर कष्ट सहकर, हर कमी को बर्दाश्त कर, मेरे ऊपर न्यौछावर होने को उद्यत थे। उन्हें विश्वास था कि जीत हमारी ही होगी।

और हमने जोर-शोर से अपना चुनाव प्रचार प्रारंभ कर दिया। चुनाव प्रचार चला। जब तक ग्रेच्युटी की रकम हाथ में रही ठीक से चला। लेकिन ज्यों ही हाथ जरा तंग हुआ, मेरे समर्थकों का विश्वास डगमगा गया। उनका यह धंधे का टाइम था, इसलिए जहाँ से बेहतर 'आफर' मिला, चले गए। मैं अकेला रह गया। फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। धरती-पकड़ की माफिक अकेला ही आखिरी दिन तक चुनाव-प्रचार में व्यस्त रहा। चुनाव के दिन तो इतना व्यस्त था कि वोट डालने भी न जा सका, वरना एक वोट तो मुझे अवश्य ही मिल जाता।

वे नवम्बर के गुलाबी ठंड वाले दिन थे, जब लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित हुए थे। बहुत दिनों में घर से बाहर नहीं निकला। रोज देर तक सोता रहता। उठता, कुछ खाता-पीता, फिर

सो जाता था। बच्चों से वार्तालाप लगभग बंद था।

एक रोज खा-पीकर लेटा नहीं, बैठा रहा। पत्नी ने कहा- 'कुछ करते क्यों नहीं?'

"क्या करूँ"

वह अंदर से सब्जी की टोकनी उठा ले आई। बोली - "कल बाजार में मटर अच्छा मिल गया, सो दो किलो लेती आई। ये पुराना अखबार सामने रखो और बैठे-बैठे मटर ही छील डालो।"

मैं चुपचाप मटर छीलने में व्यस्त हो गया। बहुत दिनों बाद कुछ काम करते अच्छा लगा। साथ ही यह भी लगा कि राजनीति में घुसने से अच्छा तो यही था कि मैं बैठे-बैठे मटर ही छीलता!

प्लॉट : 7, ब्लॉक : 56-ए,  
मोतीलाल नेहरू नगर ( पश्चिम )  
भिलाई ( दुर्ग ) छत्तीसगढ़  
पिन-490020

## तुम जैसा ही बन जाऊँ

डॉ. भागचन्द्र जैन 'भास्कर'

प्राण नहीं पाये अब तक, शूल शूल नहीं दिख पाया।  
कांटों को ही फूल समझकर अपने को ही भरमाया ॥  
रोने का आदी बना रहा, नहीं सही धर्म को पहचाना।  
धूल चढ़ी बुद्धि पर हे प्रभु, जीवन जीवन नहीं जाना ॥  
वर्तमान भी चूक न जाये, सपनों में नहीं खो जाऊँ ॥  
ऐसा प्रभु बल दे दो मुझको, तुम जैसा ही बन जाऊँ ॥1 ॥

अपना ही मन्दिर गिरा रहा, अपनी प्रतिभा खण्डित करता।  
अपनी वीणा के तार तोड़, 'हृत्तन्त्री बज जाये' कहता ॥  
गीत नहीं क्यों जीवन में, मधुमास नहीं क्यों आ पाता।  
पतझड़ से तो प्रेम किया है, फिर बसन्त क्यों टिक पाता ॥  
पर बसन्त के लिए प्राण है, पतझड़ फिर क्यों पाऊँ ॥2 ॥

आये चमक हमारे जीवन में, भीतर का संगीत जगे।  
आनन्दित हो जाऊँ सच में, चिन्ता में नहीं मन उलझे ॥  
सोने की जंजीरों से ये पैर बँधे, कैसे तोड़ूँ।  
अहंकार को तृप्त किया, बस, बीता क्षण कैसे पकड़ूँ ॥  
प्राणों में अब भक्ति जगे, श्वासों में कीर्तन कर लूँ ॥3 ॥

जीवन का पुष्प प्रफुल्लित हो, बस लहर कूल तक आ जाये।  
पत्थर में भी देवत्व छिपा, यदि भीतर समझ जो आ जाये।  
जीवन में सोया दीप जले, प्राणों में गीत उभर आये।  
आस्तिकता के पंख फैल जा, चोट लगे अन्तर जागे ॥  
हे प्रभु ! अब दरवाजा खोलो, कुछ सुगन्ध पा जाऊँ ॥4 ॥

सदर, नागपुर-440001

## उड़ गई सोनचिरैया

लालचन्द्र जैन 'राकेश'

नौ दरवाजे बन्द करे पै, उड़ गई सोन चिरैया।  
पड़ा रहा सोने का पिंजरा, कोऊ नहीं पुछैया ॥

(1)

बड़े यत्नों से पाली पोषी, नौ मन तेल लगाया।  
देख-देख चमकीली चमड़ी, फूला नहीं समाया ॥  
आत्मतत्त्व को जान न पाये, काया के इतरैया।  
नौ दरवाजे..... ॥

(2)

माता-पिता, पुत्र-पत्नी सब, मिलकर डाला घेरा।  
बचा न पाये चेतन धन को, लै गऔ काल लुटेरा ॥  
नहीं लौटकर आये कोई, करे सैं रोवा-रैया ॥  
नौ दरवाजे... ॥

(3)

आँगन बैठी रोय अंगना, मरघट तक घरवारे।  
उतै की राख सिरा न पायी, होन लगे बटवारे ॥  
सबने लीपा-पोती कर लई, हो गई खा-खा खैया ॥  
नौ दरवाजे... ॥

(4)

जब तक हंसा, तब-तक रिश्ते, हो गइ खतम कहानी।  
बचपन गया खिलौनों के सँग, विषयन गई जवानी ॥  
अब 'राकेश' भजन कर प्रभु का, जो चाहे हित भैया।  
नौ दरवाजे बन्द करे पै, उड़ गई सोन चिरैया ॥

नेहरू चौक, गली नं. 4, गंजबसौदा, ( विदिशा ) म.प्र.

# स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य नाशक मोटापा

डॉ. रेखा जैन

समृद्ध एवं श्रमविरत समाज का विकृत आभूषण है-मोटापा। बेंटे-ठाले जीवन का दर्पण है-मोटापा। गलत आहार-विहार एवं चिन्तन के दुष्परिणाम स्वरूप प्रकृतिप्रदत्त दण्ड है-मोटापा। समृद्ध लोग बाहर तो जमाखोरी करते ही हैं, अपने शरीर के अंदर भी चर्बी के रूप में जमाखोरी करते हैं। आज का आदमी स्वास्थ्य को लक्ष्य मानकर नहीं खाता है, स्वाद के आकर्षण में बीमारी के लिए खाता है।

हमारे बड़े बुजुर्ग कहते थे कि-

**आमद कम और खर्चा ज्यादा, ये लक्षण मिट जाने के।**

**कूबत कम और गुस्सा ज्यादा, ये लक्षण पिट जाने के।।**

इसी प्रकार खाना महत्वपूर्ण नहीं है, पचाना महत्वपूर्ण है। खाना वही हितकर है जो पचकर हमारे शरीर में अवशोषित होकर रस में परिवर्तित हो, न कि चर्बी के रूप में जमा हो। क्या आप जानते हैं कि-

1. प्रतिदिन मात्र एक ग्लास दूध और 3 ब्रेड के स्लाइस अतिरिक्त लेने से प्रतिवर्ष 12 कि.ग्रा. अतिरिक्त वजन बढ़ जाता है। मोटापाग्रस्त लोगों में वजन बढ़ाना सरल होता है, लेकिन वजन घटना कठिन होता है। एक मोटे व्यक्ति को एक कि.ग्रा. वजन कम करने के लिए प्रतिदिन कम से कम 6000 कैलोरी शक्ति खर्च करनी पड़ती है।

2. 1 कि.ग्रा. वजन अतिरिक्त बढ़ने पर हृदय को 10 मील लंबी रक्त वाहिनियों में रक्त भेजना पड़ता है। इससे हृदय की कार्य क्षमता कम होने लगती है।

3. मोटे लोगों की रक्त वाहिनियों में कोलेस्ट्रॉल लाइपोप्रोटीन तथा अन्य तत्त्व जमकर उसे सँकरी बना देते हैं। फलतः स्थरी स्केलरोसिस, उच्च रक्तचाप तथा अन्य रक्त संचार संबंधी रोग उत्पन्न होते हैं।

4. मांसपेशियों पर चर्बी जमा होने के कारण डायफ्राम के कार्य में बाधा उत्पन्न होती है। फलतः श्वास संबंधी रोग होते हैं। रक्त में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।

5. मोटापे से 1. मधुमेह 2. उच्च रक्तचाप 3. विभिन्न हृदय रोग 4. फ्लेट फुट 5. घुटने-नितम्ब-कमर का अस्थि.संधिवात 6. गठिया 7. सायटिका 8. गाउट 9. रयूमेटिक दर्द 10. श्वास कष्ट 11. हार्निया 12. कोलाइटिस 13. पित्ताशय रोग 14. बेरिकोज वेन्स 15. गुर्दे के विभिन्न रोग 16. नपुंसकता 17. स्त्री संबंधी रोग 18. स्नायविक रोग 19. आयु का कम होना 20. सौंदर्य का नाश आदि विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं।

“जितनी मोटी कमर उतनी छोटी उमर”

**मोटापे के निम्न लक्षण हैं**

1. सामान्य से अधिक वजन हो जाता है।
2. श्रम का कार्य करने से श्वास फूल जाती है।
3. हिम्मत की कमी आती है और कुछ कर गुजरने की क्षमता का ह्रास हो जाता है।
4. तुरन्त सोचने की शक्ति कम हो जाती है। इस प्रकार तन और मन दोनों ही किसी परिश्रमसाध्य कार्य करने से डर जाते हैं।
5. आलस्य रहता है और अधिक निद्रा आती है।
6. मन पर संयम नहीं रहता, इस प्रकार सामान्य से अधिक खाया जाता है।
7. रक्तचाप का उच्च होना, मधुमेह, दमा तथा संधिवात जैसे रोग हो सकते हैं। इसके साथ-साथ चेहरे का सौन्दर्य भी चला जाता है।
8. शरीर बेडौल हो जाता है।

**कारण**

1. परिश्रम न करना
2. कार्बोहाइड्रेट, वसा एवं तला भुना भोजन सामान्य से अधिक मात्रा में खाने पर।
3. वंशानुगत कभी-कभी यह पीढ़ी दर पीढ़ी भी होता है।
4. Hormones और Metabolism की अव्यवस्था के कारण।
5. कब्ज के कारण कभी-कभी मोटापा, कब्ज के रोगियों को भी हो सकता है।
6. मदिरापान, फास्ट-फूड एवं मैदे से बने भोज्य पदार्थों से भी मोटापा आता है।
7. महिलाओं में मोटापा गर्भ निरोधक गोलियाँ लेने से भी आ जाता है।

**प्राकृतिक उपचार**

1. संपूर्ण शरीर का वाष्पस्नान सप्ताह में दो-तीन बार देकर ठंडे जल से स्नान करें।
2. दोनों समय प्रतिदिन ठंडा स्नान कराते हैं, फिर टहलने के लिए भेजते हैं।
3. प्रतिदिन आधा घंटा धूपस्नान, तदुपरांत ठंडे जल से स्नान।
4. सप्ताह में एक बार गीली चादर लपेट देकर सूखा घर्षण स्नान देते हैं।

5. प्रातः काल एनीमा, नीबू जल अथवा सादे गुनगुने जल से देते हैं।

6. सप्ताह में एक दिन संपूर्ण मिट्टीस्नान देते हैं।

7. प्रतिदिन दो बार पेट पर गर्म-ठंडे तौलिये से सेंक आधे घण्टे तक देते हैं।

8. सप्ताह में एक दिन बिना नमक के पानी से कुंजल क्रिया कराते हैं।

9. प्रतिदिन सुबह या शाम 3-5 कि.मी. अवश्य टहलना चाहिए।

10. परिश्रम युक्त कार्य अवश्य करने चाहिए।

11. सप्ताह में दो बार तेल मालिश तदुपरांत मिट्टी स्नान।

### योगासन एवं प्राणायाम

1. सूर्य नमस्कार, उदर शक्ति विकासक, पश्चिमोत्तानासन, वज्रासन, उष्ट्रासन, शशांकासन, योगमुद्रा, उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, सर्वांगासन, मत्स्यासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, शवासन।

2. अनुलोम-विलाम, सूर्यभेदी उड्यानबंध एवं भस्त्रिका प्राणायाम।

### भोजन तालिका

कैलोरी संतुलन बनायें। मोटापा कम करने के लिए भोजन का पूर्णतया परित्याग हानिकारक है। उपवास के बाद भोजन शुरू करने पर मोटे लोग ज्यादा खाकर वजन दो गुनी रफ्तार से बढ़ा लेते हैं। कुछ लोग गलत तरीके से डाइटिंग करके कुपोषणजन्य शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। डाइटिंग के विभिन्न तरीकों जैसे-वन डायमेन्शनल या मानोडायट विधि के अन्तर्गत जैसे फल ले रहे हैं तो सिर्फ फल लिया जाता है वह भी एक समय एक प्रकार का फल। इसके साथ अनाज वगैरह नहीं लिया जाता है। लगातार वन डायमेन्शनल डाइटिंग से मांसपेशियों में प्रोटीन की कमी से उनका क्षय होने लगता है। भूख, वोरियत तथा पेट संबंधी अन्य विकार उत्पन्न होते हैं। कम कार्बोहाइड्रेट, अधिक प्रोटीन या तरल प्रोटीन डायट डाइटिंग के अंतर्गत कार्बोहाइड्रेट तथा वसाहीन तथा अधिक प्रोटीन वाला आहार दिया जाता है। इसके दुष्प्रभाव से कुपोषण जन्य बीमारियाँ कमजोरी, मानसिक अस्थिरता तथा एकाग्रता की कमी आदि लक्षण दिखते हैं। हाइफाइबर डाइट डाइटिंग के अंतर्गत प्रचुर रेशे वाले खाद्य पदार्थ जैसे छेमी, फली, सब्जियों, फलों तथा अनाजों का सेवन कराया जाता है। इस प्रकार डाइटिंग काफी हद तक वैज्ञानिक एवं सुरक्षित है, परन्तु ज्यादा रेशेवाले खाद्यपदार्थ लेने से गैस तथा बदहजमी हो जाती है।

वसाजनित कम कैलोरी वाला कण्ट्रोल्ड डाइटिंग सर्वाधिक सुरक्षित एवं वैज्ञानिक प्रयोग है। इसे वर्षों तक निभाकर स्थाई रूप से वजन कम किया जा सकता है। इसमें सभी प्रकार के पोषक तत्व पाये जाते हैं, परन्तु कैलोरी 1200-1500 तक सीमित रखी

जाती है। यह आहार योजना 6-18 सप्ताह तक लगातार निभाने से मनोवांछित फल प्राप्त किया जाता है।

### 1200 कैलोरी वाली आहार योजना

मोटे लोग कार्बोहाइड्रेट तथा वसा वाले आहार कम से कम लें। इन्हें 60-100 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 40-50 ग्राम प्रोटीन तथा 10-15 ग्राम वसा वाले आहार लेने चाहिए। भोजन में दूध दही, या छाँछ अवश्य लें।

### आहार व्यवस्था इस प्रकार रखें

1. प्रातः काल खाली पेट 3 गिलास जल पीकर, शौच निवृत्ति हेतु जाएँ। आसन या सैर करने के पूर्व एक नीबू (25 ग्राम), एक गिलास गर्म पानी, 20 ग्राम गुड़ का शर्बत ले (16+64 = 80 कैलोरी) आसन तथा सैर के बाद नाश्ते में पपीता 250 ग्राम (80 कैलोरी) एक गिलास छाँछ (60 कैलोरी), मुनक्का 10 ग्राम (30 कैलोरी) = 170 कैलोरी लें।

2. दोपहर के भोजन में पालक के रस में दो घंटे पूर्व गूँधी हुई 30 ग्राम चोकर दाल, मोटे आटे की एक रोटी (105 कैलोरी), हाथ कुटा कणीयुक्त चावल का भात 3/4 कटोरी (70 कैलोरी), पत्ते वाली सब्जी एक कटोरी 200 ग्राम (90 कैलोरी), दही 3/4 कटोरी 100 ग्राम (60 कैलोरी) सलाद 200 ग्राम (80 कैलोरी), पकाने में घी आँवला, लहसुन तथा अंकुरित अनाज को पीस कर चटनी बनाए 50 ग्राम (60 कैलोरी) या तेल एक चम्मच 5 ग्राम (45 कैलोरी), अंकुरित अनाज 25 ग्राम (56 कैलोरी), नारियल, धनिया।

3. 3:00 बजे-मौसमानुसार संतरा 150 ग्राम (72 कैलोरी) टमाटर 300 ग्राम (60 कैलोरी) या अमरूद 150 ग्राम (77 कैलोरी) या अनार 250 ग्राम (98 कैलोरी) या सेव 150 ग्राम (90 कैलोरी) या आलूबुखारा 150 ग्राम (77 कैलोरी) या पपीता 200 ग्राम (64 कैलोरी)।

4. 4:30 बजे- सब्जियों का सूप (45 कैलोरी) अथवा 75 ग्राम दही में 125 ग्राम पानी मिलाकर 200 ग्राम छाँछ (45 कैलोरी) अथवा नारियल का पानी 200 मिली. (50 कैलोरी)।

5. सायंकालीन भोजन (6-7) बजे-एक रोटी 30 ग्राम (105 कैलोरी), सब्जी 200 ग्राम (80 कैलोरी), दही 100 ग्राम (60 कैलोरी), सब्जी 100 ग्राम (20 कैलोरी), पकाने के लिए घी या तेल एक चाय चम्मच 5 ग्राम (45 कैलोरी), चटनी 50 ग्राम (60 कैलोरी)

6. 9:30 बजे- एक कप दूध 150 मिली. (90 कैलोरी)।

भाग्योदय तीर्थ प्राकृति चिकित्सालय  
सागर ( म.प्र. )

# अतीत के झरोखे से

डी.सी.जैन, पूर्व मुख्य अभियन्ता

लगभग 30 वर्ष पूर्व मुझे सपत्नीक अमेरिका जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। हमारा जहाज देहली इन्टरनेशनल हवाई अड्डे से उड़ान भरकर क्वेट एवं लंदन होता हुआ लगभग 26 घंटों में न्यूयार्क के केनेडी हवाई अड्डे पर सकुशल उतरा। वहाँ मेरे छोटे भाई, जो कि वहाँ पर डाक्टर हैं लेने आ गये थे। कस्टम की प्रक्रिया के पश्चात् जब हम लोग न्यूयार्क शहर की ओर जाने लगे तो वहाँ की गगनचुम्बी इमारतों एवं चौड़ी सड़कों को देखकर आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। कुछ क्षण तो ऐसा लगा कि हम किसी देवलोक में आ गये हैं, वैसे मैं स्वयं एक सिविल इंजीनियर हूँ एवं उस समय मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग में कार्यपालन यंत्री के रूप में भवनों एवं सड़कों के निर्माण में संलग्न था।

मैं इस सोच में डूब गया कि मेरे जीवनकाल में इस उच्च स्तर के निर्माण कार्य कभी भारतवर्ष में हो भी पावेंगे? जिस देश का केवल दो सौ वर्ष का ही इतिहास हो एवं इतने कम समय में उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया हो, इसको देखकर मुझे जैन ग्रन्थ 'छहढाला' के रचयिता पं. दौलतराम जी की निम्न पंक्तियाँ याद आ गई—

दौल समझ सुन चेत सयाने काल वृथा मत खौवे।

यह नरभव फिर मिलन कठिन है जो सम्यक नहीं हवे॥

संभवतः पण्डित जी की उक्त पंक्तियों का मर्म अमेरिका के निवासियों ने समझ लिया था, जिन्होंने समय का सही उपयोग कर अपनी सम्यक् सूझबूझ, अथक परिश्रम एवं देश के प्रति समर्पित होकर उसे उन्नति के शिखर पर पहुँचाया। काश, हम भारतवासी पं. जी के द्वारा दिये गए सम्यक् बोध को कार्य रूप में परिणित कर सकें! उस समय अमेरिका में रहने वाले नागरिकों के बारे में हमारे देश में बड़ी गलत धारणा था कि वे तो मलेच्छ हैं एवं उनका जीवन निम्नकोटि का है। मैंने उनका आचरण इस धारणा के विपरीत पाया। वे अत्यधिक प्रगतिशील, अनुशासनप्रिय एवं ढँग से जीने की कला में माहिर होते हैं।

लगभग डेढ़ माह अमेरिका में रहने के पश्चात् मुझे कंडक्टेट टूर के माध्यम से अमेरिकन लोगों के साथ यूरोप के छह देशों की यात्रा पर जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

हमारा चार्टर्ड प्लेन न्यूयार्क से उड़कर हमारे ग्रुप के पहले

पूर्व निर्धारित पड़ाव पेरिस पहुँचा। वहाँ पर हमारा स्टे चार दिन का था। सायंकाल ग्रुप के सभी साथियों का वजन एवं ऊँचाई का नाप लिया गया। अंत में पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति का 25 डॉलर का प्रथम पुरस्कार मुझे मिला। रिजल्ट सुनकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वैसे इस ग्रुप में सबसे दुबला पतला व्यक्ति मैं ही था। मुझसे पूछा गया कि आप 6'-1'' लम्बे हैं एवं आपका वजन केवल 73 किलोग्राम ही है। यह आप कैसे कंट्रोल कर पाये। मैंने माईक पर उन भाई-बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि इसका मुख्य श्रेय मेरी पूर्ण शाकाहारी दिनचर्या को है। मैंने मांस एवं मदिरा के पूर्ण निषेध का आजीवन व्रत ले रखा है। मैं हल्का शाकाहारी भोजन लेता हूँ, जिसमें सभी प्रकार की सब्जियाँ, सलाद एवं फलों का समावेश होता है। रात्रि में भोजन नहीं करता हूँ। सायंकाल के बाद केवल एक ग्लास गरम दूध लेता हूँ। उन सब पर मेरे वार्तालाप का गहन असर हुआ एवं उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वे धीरे-धीरे मांसाहार का त्याग कर शाकाहार को अपनाने का प्रयत्न करेंगे। सूर्यास्त के पूर्व भोजन करने का प्रयोग भी करेंगे। बीस दिन उनके साथ रहकर उन्हें निकट से देखने एवं समझने का मुझे मौका मिला। इस बीच उनसे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप भी हुआ। भगवान् महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्त के सिद्धांतों को समझने में उन्होंने विशेष रुचि दिखाई। उनमें से एक बुजुर्ग ने यह भी कहा—आपके द्वारा बतलाया गया अनेकान्त सिद्धांत तो अलवर्ट आइंस्टीन की थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी के समकक्ष है। मैंने उनसे कहा कि आइंस्टीन जो आज कह रहे हैं, उसका प्रतिपादन तो भगवान् महावीर ने 2500 वर्ष पूर्व ही कर दिया था।

भगवान् राम की मर्यादा एवं कृष्ण के दर्शन से भी वे प्रभावित दिखे।

भारतीय संस्कृति से वे अत्यधिक प्रभावित हैं। विशेष रूप से महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा एवं स्वदेशी के सम्यक् प्रयोग से भारत वर्ष को स्वतंत्रता दिलाई, इसकी हार्दिक प्रशंसा करते हैं। ईसामसीह के बाद वे गाँधीजी को 'महामानव' संबोधित कर आदर प्रकट करते हैं।

ई-2/162, अरेरा कॉलोनी,  
भोपाल-462016



# वैराग्य भावना

पं. भूधरदासजी कृत 'पारस पुराण' से

बीज राख फल भोगवै, ज्यों किसान जग मांहि ।

त्यों चक्री नृप सुख करे, धर्म विसारै नाहिं ॥1॥

**शब्दार्थ** - राख-रख करके, फल-फसल का, नृप-राजा, विसारै-भूलना ।

**अर्थ** - जिस प्रकार किसान बीज को रख लेता है और शेष बची हुई फसल का भोग करता है, उसी प्रकार चक्रवर्ती राजा भी पंचेन्द्रिय विषय के सुख को भोगता हुआ भी धर्म को भूलता नहीं है ।

इहविधि राज करै नरनायक, भोगै पुण्य विशालो ।

सुख सागर में रमत निरंतर, जात न जान्यो कालो ॥

एक दिवस शुभ कर्म संजोगे, क्षेमंकर मुनि वंदे ।

देखि श्री गुरु के पद पंकज, लोचन अलि आनंदे ॥2॥

**शब्दार्थ** - विधि-प्रकार, नरनायक-चक्रवर्ती, रमत-रमण करता है, क्षेमंकर-क्षेमंकर नाम के मुनि, श्री गुरु-श्रीगुरु, पदपंकज-चरण कमल, लोचन-आँखों में, अलि-भौरा ।

**अर्थ** - उपर्युक्त प्रकार से धर्म को न भूलता हुआ वह चक्रवर्ती राज्य करता है एवं पुण्य के विशाल वैभव को भोगता है एवं पंचेन्द्रिय विषय रूप सुख में निरंतर रमण करता है । उसे मालूम ही नहीं हो पाता कि कितना काल बीत गया है । एक दिन उस चक्रवर्ती ने तीव्र पुण्य कर्म के संयोग से क्षेमंकर मुनि की वंदना की । श्री गुरु के चरण कमलों को देखकर उसकी आँखों में इतना आनंद हुआ, जितना एक भौरा को कमल की सुगंध से होता है ।

तीन प्रदक्षिण दे सिर नायो, कर पूजा थुति कीनी ।

साधु समीप विनय कर बैठयो, चरणन में दृष्टि दीनी ॥

गुरु उपदेश्यो धर्म शिरोमणि, सुन राजा वैरागे ।

राजरमा वनितादिक जे रस, ते रस बेरस लागे ॥3॥

**शब्दार्थ** - थुति-स्तुति, साधु-क्षेमंकर मुनि, समीप-पास में, रमा-लक्ष्मी, वनितादिक-स्त्री पुत्रादि, बेरस-बिना रस वाले ।

**अर्थ** - उस चक्रवर्ती ने क्षेमंकर मुनिराज की तीन प्रदक्षिणा व्रत नमस्कार करके पूजा, स्तुति की एवं उनके समीप विनयपूर्वक बैठ गया एवं अपनी दृष्टि साधु के चरणों की ओर कर ली । धर्म शिरोमणि उस चक्रवर्ती ने उन मुनिराज का उपदेश सुना एवं वैराग्य को प्राप्त हो गया । अब उसे राज, लक्ष्मी, स्त्री, पुत्रादि में जो आनंद प्राप्ता था, वह आनंद अब बेरस (बिना रस वाला) लगने लगा ।

मुनि सूरज कथनी किरणावलि, लगम भरम बुधि भागी ।

भव-तन-भोग स्वरूप विचार्यो, परम धरम अनुरागी ॥

इह संसार महावन भीतर, भरमत और ना आवै ।

जामन मरन जरा दव दाहै, जीव महा दुःख पावै ॥4॥

**शब्दार्थ** - कथनी-उपदेश, आवलि-पंक्ति, लगत-लगती है, भरम-भ्रम, बुधि-बुद्धि, भागी-दूर हो जाती है, तन-शरीर, विचार्यो-विचार किया, इह-इस, ओर-अन्त, दव-जंगल ।

**अर्थ** - जिस प्रकार सूरज के किरणों की पंक्ति से अंधकार दूर हो जाता है उसी प्रकार मुनिराज के उपदेश को सुनकर उस चक्रवर्ती की भ्रम रूपी बुद्धि दूर हो गयी एवं परम धर्म के प्रति अनुराग करते हुए उस चक्रवर्ती ने संसार, शरीर और भोगों के स्वरूप पर चिन्तन किया । इस संसार रूपी महाजंगल के भीतर भ्रमण करने का अंत नहीं है । इसमें जीव जन्म, मरण एवं बुढ़ापा रूपी जंगल की अग्नि में जल रहा है एवं भयंकर दुःखों को प्राप्त कर रहा है ।

कबहूँ जाय नरक थिति भुंजे, छेदन भेदन भारी ।

कबहूँ पशु परजाय धरै तहँ, बध बंधन भयकारी ॥

सुरगति में पर सम्पत्ति देखे, राग उदय दुःख होई ।

मानुष योनि अनेक विपत्तिमय, सर्वसुखी नहिं कोई ॥5॥

**शब्दार्थ** - थिति-आयु, भुंजे-भोगता है, धरै-धारण करता है, तहँ-वहाँ ।

**अर्थ** - कभी यह जीव नरक में जाकर आयुपर्यन्त छेदन-भेदन आदि के दुःखों को भोगता है । कभी तिर्यच पंचेन्द्रिय की पर्याय को प्राप्त करता है । वहाँ वध, बंधन, भय आदि के दुःखों को भोगता है । देवगति में भी दूसरों की संपत्ति को देखकर राग के उदय के कारण दुःखी होता है और मनुष्य पर्याय में भी अनेक प्रकार की विपत्तियों से सहित है । इस संसार में कोई भी सुखी नहीं है, सब दुःखी ही हैं ।

कोई इष्ट वियोगी विलखै, कोई अनिष्ट संयोगी ।

कोई दीन दरिद्री विलखै, कोई तन के रोगी ॥

किसही घर कलिहारी नारी, कै बैरी सम भाई ।

किसही के दुःख बाहिर दीखै, किसही उर दुचिताई ॥6॥

**शब्दार्थ** - इष्ट-प्रिय, विलखै-रोता है, दीन-गरीब, कलिहारी-झगड़ा करने वाली, कै-किसी के, दीखै-दिखते हैं, दुचिताई-स्थित रहते हैं/ छिपाये रहते हैं ।

**अर्थ** - इस मनुष्य पर्याय में कोई इष्ट पदार्थ के वियोग से, कोई अनिष्ट पदार्थों के संयोग से रोता है, कोई गरीबी के कारण, कोई दरिद्रता के कारण बिलखता है, कोई शरीर के रोगी होते हैं, किसी के घर में पत्नी झगड़ा करने वाली है! किसी का भाई दुश्मन के समान होता है । किसी के दुःख दिखाई देते हैं एवं कोई हृदय में ही छिपाये रहता है ।

कोई पुत्र बिना नित झूरे, होय मरे तब रोवै ।

खोटी संतति सो दुःख उपजै, क्यों प्राणी सुख सोबै ॥

पुण्य उदय जिनके तिनके भी, नहीं सदा सुख साता ॥

यह जगवास जधारथ दीखे, सब दीखै दुःख दाता ॥7 ॥

**शब्दार्थ**-नित-हमेशा, झुरै-सूखता है, संतति-संतान से, उपजै-उत्पन्न होता है, जधारथ-जैसे है वैसे/ यथार्थ में।

**अर्थ**- कोई पुत्र के बिना हमेशा सूखता है, किसी के पुत्र होकर मर जावे, तब रोता है एवं संतान खोटी हो तो उसके कारण दुःख उत्पन्न होता है। यह प्राणी कहाँ सुख प्राप्त कर सकता है? अर्थात् कहीं भी नहीं। जिनके हमेशा पुण्य का उदय चलता है उनके भी हमेशा सुखशांति नहीं होती है। इस संसार को जैसा है, वैसा देखा जावे तो सब ही जीव दुःख के देने वाले देखे जाते हैं।

जो संसार विषै सुख होता, तीर्थकर क्यों त्यागे।

काहे को शिव साधन करते, संयम सों अनुरागे ॥

देह अपावन अधिर घिनावन, यामे सार न कोई।

सागर के जल सो शुचि कीजे, तो भी शुद्ध ना होई ॥8 ॥

**शब्दार्थ**- विषै-में, अपावन-अपवित्र, यामें-इसमें, शुचि-पवित्र।

**अर्थ**- यदि संसार में सुख होता तो तीर्थकर घर का त्याग क्यों करते एवं मोक्ष के साधन स्वरूप संयम से अनुराग क्यों करते? इस प्रकार से संसार भावना का चिंतन करते हुए वह चक्रवर्ती शरीर की अपवित्रता का विचार करता है।

यह शरीर अपवित्र है, अस्थिर है, घिनावना है, इसमें कोई सार नहीं है। समुद्र के जल से भी इसे पवित्र किया जाये तो भी यह शरीर शुद्ध नहीं हो सकता है।

सात कुधातु भरी मल मूरत, चर्म लपेटी सोहै।

अंतर देखत या सम जग में, अवर अपावन को है ॥

नव मल द्वार स्रवे निशि वासर, नाम लिये घिन आवै।

व्याधि उपाधि अनेक जहाँ तहँ, कौन सुधी सुख पावै ॥9 ॥

**शब्दार्थ** - सात कुधातु-रस, रुधिर, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा, वीर्य। चर्म-चमड़ी, सोहै-अच्छा लगता है, यासम-इसके समान, अवर-दूसरा, नवमल द्वार-आँख दो, कान दो, मुख एक, मल एक, मूत्र एक, नाक दो, स्रवें-बह रहे हैं, निशि-रात्रि, वासर-दिन, सुधी-ज्ञानी जीव।

**अर्थ**-यह शरीर रस, रुधिरादि सात कुधातुओं से भरा हुआ है, मल की मूर्ति है, लेकिन बाहर चमड़ी के कारण अच्छा लगता है, यदि अंदर देखें तो इसके समान अपवित्र वस्तु संसार में दूसरी नहीं है। जिनका नाम लेने से ग्लानि-सी लगती है, ऐसे नव मल दिन-रात इस शरीर से बहते रहते हैं। और जहाँ अनेक प्रकार की शारीरिक बीमारियाँ एवं उपाधियाँ लगी हैं, वहाँ कौन बुद्धिमान सुख की प्राप्ति कर सकता है? अर्थात् कोई नहीं कर सकता है।

पोषत तो दुःख दोष करै अति, सोषत सुख उपजावै।

दुर्जन देह स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावै ॥

राचन जोग स्वरूप न याको, विरचन जोग सही है।

यह तन पाय महातप कीजे, यामें सार यही है ॥10 ॥

**शब्दार्थ** - पोषत-पोषण करने से, अति-अत्यन्त, सोषत-शोषण करने से, बराबर-समान, प्रीति-राग, राचन जोग-रचने पचने योग्य, विरचन जोग-दूर करने योग्य, यामें-इसमें।

**अर्थ**- पोषण करने से यह शरीर अत्यन्त दुःख और दोष को करने वाला है और इस शरीर का शोषण करने से सुख को उत्पन्न करने वाला है। ऐसे दुर्जन के समान इस शरीर से मूर्ख लोग ही राग को बढ़ाते हैं। रचने-पचने योग्य इस शरीर का स्वभाव नहीं है। इसका स्वभाव तो दूर करने योग्य है। इसीलिये इस शरीर को प्राप्त करके महान्-महान् तपों को करना चाहिये, इसमें यही सार है।

भोग बुरे भव रोग बढ़ावै, बैरी हैं जग जीके।

बेरस होय विपाक समय अति, सेवत लागें नीके ॥

वज्र अगिनि विष से विषधर से, ये अधिके दुःख दाईं।

धर्म रतन के चोर चपल अति, दुर्गति पंथ सहाई ॥11 ॥

**शब्दार्थ** - जीके-आत्मा के, विपाक-उदय, लागें-लगते हैं, नीके-अच्छे, अगिनि-अग्नि, विष-जहर, चपल-चंचल, पंथ-रास्ते में, सहाई-सहायता करते हैं।

**अर्थ**- संसार रूपी रोग को बढ़ाने वाले ये पंचेन्द्रिय के भोग संसारी प्राणियों के बैरी हैं। ये सेवन करते समय बहुत अच्छे लगते हैं, परन्तु इनका फल अत्यन्त बेरस है। ये भोग वज्र से, अग्नि से, विष से एवं विषधर से भी अधिक दुःख को देने वाले हैं। ये भोग धर्म रूपी रत्न को चुराने के लिए चोर हैं, अत्यन्त चंचल हैं और दुर्गति के रास्ते में ले जाने में सहायता करते हैं।

मोह उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जाने।

ज्यों कोई जन खाये धतूरा, सो सब कंचन माने ॥

ज्यों-ज्यों भोग संजोग मनोहर, मनवांछित जन पावें।

तृष्णा नागिन त्यों-त्यों डंके, लहर जहर की आवै ॥12 ॥

**शब्दार्थ** - भले कर-अच्छा करने वाले, धतूरा-बुद्धि को विकृत करने वाला पदार्थ, कंचन-स्वर्ण, जन-लोग, पावें-प्राप्त करते हैं, ज्यों-ज्यों-जैसे-जैसे, त्यों-त्यों-वैसे-वैसे, लहर-तरंग।

**अर्थ**- जिस प्रकार कोई जीव बुद्धि को विकृत करने वाला पदार्थ (धतूरा) सेवन करता है तो उसे सब संसार स्वर्ण सरीखा नजर आता है, उसी प्रकार अज्ञानी जीव मिथ्यात्व कर्म के उदय से पंचेन्द्रिय भोगों को भला करने वाला जानता है। जैसे-जैसे मन वांछित एवं मन को अच्छे लगनेवाले मनोहर भोगों का संयोग करता है, वैसे-वैसे तृष्णा रूपी नागिन डंक मारती है तो इस पर और जहर चढ़ता जाता है। अर्थात् इसके भोगों की चाह और बढ़ती जाती है।

अर्थकर्ता- ब्र. महेश  
श्रमण संस्कृति संस्थान  
सांगानेर, (जयपुर)

## सूरज की कोई परिपाटी

अशोक शर्मा

जिनके पीछे भीड़ निरन्तर चलती शीश झुकाए  
कोई एक अकेला उनसे कैसे होड़ लगाए ?

बिना सितारे चाँद गगन पर पाँव नहीं धरता  
ज्योत्सना के महाकाव्य का पाठ नहीं करता  
सूरज जिसकी किरण-किरण को अंगारों ने चूमा  
आत्मजयी है संघर्षों से कभी नहीं डरता

कोटर के सीमित चंदा का तारे साथ निभाते  
सम्मोहित हैं इसीलिए तो सारी रात निभाते  
ठंडी आग लुटाने वाला राज-मुकुट पहने  
वाह री दुनिया बाहरी दुनिया तेरे क्या कहने

व्यक्ति पूजा जहाँ लक्ष्य पर हावी हो जाए  
पथ भूले यात्री को कोई कैसे मोड़ दिखाए ?

सूरज या साधक सदियों विश्राम नहीं लेता  
श्रम ही जिसका धर्म सनातन दाम नहीं लेता  
अपने नीड़ तोड़कर जिसने उजड़े चमन बसाए  
उस अनाम राही को कोई नाम नहीं देता

जिनके पात्र स्वयं खाली हैं प्यास बुझाने आए  
होंठों पर मुरली को धर कर रास रचाने आए  
कैसी यह बीमार सदी है ठीक नहीं होती  
सूरज की कोई परिपाटी लीक नहीं होती

एक नहीं सौ-सौ भूलों के जिनने नीड़ बसाए  
उनके अपराधों का कोई कैसे जोड़ लगाए ?

अभ्युदय निवास  
36-बी, मैत्री निवास, सुपेला  
भिलाई ( जिला-दुर्ग )- 490023

प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा दस दिवसीय

## मोटापा निवारण शिविर

दस दिन में 5 से 7 किलो वजन कम करें।

प्रत्येक माह की 1 से 10 तारीख तक एवं 21 से 30 ता. तक ।

पंजीयन परामर्श- 29,30,31 तारीख

एवं 18, 19, 20 तारीख तक ।

संपर्क करें

भाग्योदय तीर्थ प्राकृतिक चिकित्सालय, सागर

फोन- 46071, 46671

बिना दवा, इंजेक्शन व साइड इफेक्ट्स के  
मात्र प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा

## मधुमेह निवारण शिविर

प्रत्येक माह की 11 ता. से 20 ता. तक ।

पंजीयन परामर्श-प्रत्येक माह 8-9-10 ता. तक ।

संपर्क करें

भाग्योदय तीर्थ प्राकृतिक चिकित्सालय, सागर,

फोन - 46071, 46671

## कल्पद्रुम महामंडल विधान संपन्न

खनियाधाना (शिवपुरी)। परमपूजनीया आर्यिका  
विशाश्री माताजी के ससंघ सन्निध्य में श्रमण संस्कृति संस्थान,  
साँगानेर से पधारे विधानाचार्य ब्र. संजीव भैया कटंगी एवं  
पं. सुधर्मचन्द्र शास्त्री के कुशल निर्देशन में कल्पद्रुम महामंडल  
प्रभावनापूर्वक संपन्न हुआ।

ब्र. संजीव भैया के रात्रिकालीन प्रवचनों ने जनता

का मन मोह लिया। जैन-जैनेतर सभी लोगों ने धर्म लाभ  
लिया। समापन कार्यक्रम पर ब्र. संजीव भैया ने कहा-  
अभी यह नगरी स्वर्णपुरी लग रही है, जिस क्षण यहाँ  
आचार्य विद्यासागरजी महाराज ससंघ आवेंगे, तब यह  
खनियाधाना नगर मोक्षपुरी लगेगी। सभी कार्यक्रम चौरासी  
समाज द्वारा संपन्न किये गए।

## दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति द्वारा शिविरों के आयोजन

देश और समाज जिस कदर अवनति और नैतिकता की ओर बढ़ रहा है, उससे समाज का दायित्व बढ़ जाता है कि वह अपने बच्चों को नैतिकता का ऐसा पाठ दे, जिससे बालक में आत्मविश्वास जाग्रत हो, बड़ों के प्रति आज्ञाकारी बने, राष्ट्रनिर्माण में सहयोग करे, अपने जीवन को स्वस्थ और दीर्घजीवी बनाए। दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति ने पिछले एक दशक से ऊपर लाखों बच्चों के चरित्र को सुधारा-सँवारा है। गर्मियों की छुट्टियों का वह भरपूर इस्तेमाल करती है। एक-एक सप्ताह के लिये प्रत्येक मन्दिर में छह हफ्तों तक ये शिविर लगाती हैं, जिसमें हजारों बच्चे भाग लेकर नैतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसी के साथ बच्चों को प्रातः उठते ही नौ बार णमोकार मंत्र, बड़ों का अभिवादन, पैर छूना, पानी छानकर पीना, देवदर्शन, संयम, स्वाध्याय, राष्ट्रनिर्माण के आवश्यक कर्तव्य आदि बातों को याद कराकर प्रेक्टिकल अभ्यास कराया जाता है। स्वास्थ्य के लिए नाखूनों की देखभाल, दोनों वक्त दाँत साफ रखना, रोज नहाना, साफ-सुथरे कपड़े पहनना आदि बातें सिखलाई जाती हैं। व्यवहारिक बातों में छुट्टियों के दिनों में विशेष रूप से माता-पिता के काम में हाथ बँटाना, कापी-पुस्तकों की देखभाल, गृहकार्य को सुव्यवस्थित तरीके से करने आदि कामों के साथ राष्ट्रनिर्माण में हम कैसे सहयोग दे सकते हैं, यह सिखाते हैं। इसके अतिरिक्त बिजली जलती न छोड़े, नल खुला न छोड़े, जीवन में काम करते समय ईमानदारी और सत्यता के आधार पर आदर्श लोकोपयोगी जीवन के साथ देश का सम्मान और इसकी सुरक्षा के लिए अपने को बलिदान कर देना चाहिए, आदि बातें सिखाई जाती हैं। एक सप्ताह के ये शिविर दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में लगाए जाते हैं। इस समिति के पास समाजसेवी कार्यकर्ताओं की एक टीम है, जो सब शिविरों का संचालन करती है। उसने एक पाठ्यक्रम तैयार किया है, जिसे पाँच भागों में विभाजित किया है। पहले भाग में बच्चों को णमोकार मंत्र, मंत्र का उच्चारण, तीर्थकर कैसे बनते हैं, तीर्थकर और भगवान में क्या अंतर है। चौबीस भगवान के नाम याद कराकर उनके चिह्नों की जानकारी बच्चे प्राप्त करते हैं, जीव-अजीव का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शिक्षावली के दूसरे भाग में पाँच पाप-हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह की परिभाषा एवं इन पापों से छूटने के उपाय बताये जाते हैं। गतियों की जानकारी देकर श्रेष्ठ गति कैसे प्राप्त करें, यह बताया जाता है इसी प्रकार काम, क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों की जानकारी और उनमें कैसे मन्दता लायें, यह बताया जाता है। पर्व हमारे जीवन में समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य जाग्रत करते हैं। तीसरे भाग में छह द्रव्य-जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल के बारे में तथा उससे आगे सात तत्त्वों-जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर,

निर्जरा, मोक्ष बताकर देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धान दृढ़ करते हैं। कुरीतियों और आडम्बर जैसे मिथ्यावादी बातों को छुड़ाया जाता है। चतुर्थ भाग में- अनुयोगों का महत्त्व, जीवन में उनकी उपयोगिता, श्रावक के कर्तव्य, बारह भावनाओं का चिन्तन-मनन, महापुरुषों के जीवनचरित्र, तीन लोक की जानकारी जैसे मुख्य विषय होते हैं। पाँचवाँ भाग तो शास्त्री के समकक्ष होता है, जिसमें चर्चा होती है- प्रतिमाओं की। 11 प्रतिमाओं को धारण करना मोक्ष के लिए क्यों जरूरी है, उनका पालन करने पर गुणस्थानों, कर्म, ध्यान जैसे विषयों पर जानकारी प्राप्त कराई जाती है।

शिविरों में पढ़ाई के लिए स्कूल, कॉलेजों की तरह कक्षाएँ लगती हैं। बहुत से शिविरों में संयोजक स्कूलों को ले लेते हैं और विधिपूर्वक कक्षाएँ लगाई जाती हैं। पढ़ाने वाले अध्यापक आते हैं, जरूरी संकेत बोर्ड पर लिखते हैं, विषय को खोलकर समझाते हैं।

हमारे देश में इस तरह की संस्थाएँ हैं ही नहीं। दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति अपने सीमित साधनों के बलबूते पर यह सब शिविरों का आयोजन कर रही है। इस वर्ष ये शिविर 19 मई 2002 से शुरू हो रहे हैं, जिनके लिए समिति ने मन्दिरों के अध्यक्षों और मंत्रियों से निवेदन किया है कि वे अपने शिविरों की तारीखें 7/9 दरियागंज, नई दिल्ली को भेज दें या फोन करें- 221236 (घर), 2155487(कार्या.)।

श्री किशोर जैन 'संयोजक शिविर'  
54 रशीद मार्केट, दिल्ली-51

## विशिष्ट अवसरों पर पशुवध गृह बन्द रखने का आदेश

मध्यप्रदेश के राज्यपाल के नाम तथा आदेशानुसार स्थानीय शासन विभाग के अपर सचिव के द्वारा क्रमांक - 936/69/मं./10-03/90, दि. 10.5.1981 के अनुसार "राज्य शासन आदेशित करता है कि नीचे दिए गए विशिष्ट अवसरों पर स्थानीय निकायों की सीमा में स्थित समस्त पशुवध गृह एवं मांस बिक्री की दुकानें बंद रखी जाएँ-

(1) गणतंत्र दिवस (2) गाँधी निर्वाण दिवस (3) महावीर जयंती (4) बुद्ध जयंती (5) स्वतंत्रता दिवस (6) जन्माष्टमी (7) रामनवमी (8) गाँधी जयंती (9) गणेश चतुर्थी (10) पर्यूषण पर्व का प्रथम दिवस (11) डोल ग्यारस (12) पर्यूषण पर्व का अंतिम दिन (13) अनन्त चतुर्दशी (14) पर्यूषण पर्व में संवत्सरी व उत्तमक्षमा (15) भगवान् महावीर निर्वाण दिवस (16) चैती चाँद (17) संत तारण-तरण जयंती।

अतः समस्त जिलाध्यक्ष एवं समस्त संभागीय उपसंचालक नगर प्रशासन अपने क्षेत्र में स्थित समस्त स्थानीय निकायों को तदनुसार उचित कार्यवाही के लिए निर्देशित करें।

इस परिपत्र के माध्यम से इस विभाग के द्वारा पहले के परिपत्र क्रमांक 5666/330/18/नगर/एक, दि. 16.8.1971 को

निरस्त किया जाता है।

राज्य शासन के इस आदेश को दृष्टिगत करके प्रदेश के अहिंसक एवं शाकाहारी समाज का प्रशासन एवं निकाय के प्रमुख अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने अधीनस्थ अधिकारियों को अविलम्ब आदेश प्रसारित करें, ताकि इस वर्ष इन अवसरों पर बूचड़खाने एवं मांस बिक्री की दुकानें बंद रखी जा सकें।

पी.के.जैन ( मोनू )

मेन रोड, छपारा-480 884 ( सिवनी ) ( म.प्र. )

## नारेली ग्राम को पेयजल हेतु गोद लिया

भगवान् महावीर के 2600वें जन्मजयंती वर्ष के उपलक्ष्य में दि. 22.4.2002 को ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी व दातारों की ओर से सरकार द्वारा अकाल पेयजल योजना के अन्तर्गत क्षेत्र कमेटी ने नारेली ग्राम को 3 पानी के टैंकर (लगभग 15,000 लीटर) जल प्रतिदिन देने के सहयोग का आश्वासन सरकार को दिया है व उसी क्रम में आज इस योजना का शुभारम्भ माननीय उपखण्ड अधिकारी व उप जिला मजिस्ट्रेट मुग्धा सिन्हा व प्रशासनिक अधिकारी एवं कमेटी के वरिष्ठ पदाधिकारी व समाजसेवियों एवं नारेली ग्राम के नागरिकों की उपस्थिति में उपखण्ड अधिकारी द्वारा पेयजल टैंकर को हरी झण्डी दिखाकर शुभारम्भ किया। यह व्यवस्था लगभग 3 माह तक जारी रहेगी।

भागचंद गदिया

## कर्मों ने जिन्हें बेसहारा किया, उन्हें सहारा दिया भाग्योदय ने

भाग्योदय तीर्थ विकलांग केन्द्र की स्थापना पू. गुरुदेव की कारुण्य कृपा से 20 अप्रैल 1996 में हुई थी, तब से अब तक हजारों विकलांगों को कृत्रिम हाथ/पैर एवं पोलियोग्रस्त मरीजों को कैलीपर्स लगाए गए हैं। इस केन्द्र द्वारा न केवल सागर में, वरन् मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों एवं गुजरात, राजस्थान प्रांतों में भी अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराई गई है। आचार्य श्री विद्यासागर जी के सान्निध्य में भी महुआ, नेमावर, अमरकंटक आदि स्थानों पर सेवाएँ प्रदान कीं। इस विभाग में गरीब एवं असहाय मरीजों का निःशुल्क तथा बाकी सक्षम मरीजों का सशुल्क उपचार किया जाता है। केन्द्र की विश्वसनीयता एवं कृत्रिम अंगों के उपकरणों की गुणवत्ता को देखते हुए सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठन शिविर लगाने के लिए आमंत्रित करते हैं।

व्ही.के.जैन  
कृत्रिम अंग विशेषज्ञ

## भाग्योदय तीर्थ विकलांग केन्द्र विद्यासागर मार्ग करीला, सागर ( म.प्र. )

जतारा (टीकमगढ़ म.प्र.)। सन्त शिरोमणि, प्रातः स्मरणीय परमपूज्य 108 आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद

एवं आचार्य श्री के परमप्रभावक शिष्य परमपूज्य मुनि श्री समतासागर, मुनि श्री प्रमाणसागर एवं ऐलक श्री निश्चयसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध जैन तीर्थ, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा जी (टीकमगढ़, म.प्र.) के प्रांगण में, इन्हीं परमपूज्य त्रय महाराजों के सान्निध्य में दयोदय सेवा केन्द्र (पशुशाला) का शिलान्यास दिनांक 9/12/2001 को इंजीनियर श्री विनोद कुमार जैन (बिलासपुर म.प्र.) के कर कमलों से एवं विधिवत उद्घाटन दिनांक 10 मार्च 2002 को मुख्य अतिथि नवभारत समाचार समूह के सम्पादक एवं राज्यसभा सदस्य माननीय श्री प्रफुल्ल कुमार जी माहेश्वरी एवं खजुराहो क्षेत्र के सांसद माननीय श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी जी के कर कमलों से किया गया। उक्त केन्द्र श्री दिगम्बर जैन समाज टीकमगढ़ (म.प्र.) के तत्त्वावधान में टीकमगढ़ जिले के समस्त जैन समाज के सहयोग से संचालित है। इस केन्द्र में वर्तमान में लगभग 500 गाय एवं बछड़े विद्यमान हैं। जिनमें अधिकांश गाय एवं बछड़े जतारा एवं टीकमगढ़ आदि स्थानों से कत्लखानों में कत्ल के लिये ले जाते समय कसाइयों से मुक्त कराये गए हैं।

केन्द्र की समुचित व्यवस्था के लिये एक कार्यकारिणी समिति का भी गठन हो गया है, जिसके अध्यक्ष श्री कल्याणचन्द्र, जैन नायक, उपाध्यक्ष श्री रतनचन्द्र जैन, श्री महेन्द्र जैन (बड़ागाँव) श्री इंजीनियर जयकुमार, महामंत्री श्री अभिनन्दन कुमार जैन गोइल मंत्री श्री अनिल जैन बड़कुल, संयुक्त मंत्री श्री हकुमचन्द्र जैन प्रचारमंत्री श्री सुरेश जैन मवाई, कोषाध्यक्ष श्री चक्रेश कुमार जैन टडैया एवं अनेक जैन बन्धु पदाधिकारी हैं।

केन्द्र एवं पशुओं की समुचित देखभाल एवं व्यवस्था के लिए अनेक कर्मचारी केन्द्र के लिए नियुक्त हो गए हैं। केन्द्र पर चारे और पानी की तथा पशुओं के रहने की समुचित व्यवस्था हो गई है। पशुओं की चिकित्सा एवं उनकी देखभाल के लिये पशु चिकित्सालय भी खोला गया है। जहाँ इस केन्द्र के लिये अनेकों महानुभावों ने लाखों रुपये दान देकर केन्द्र को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, वहीं जतारा (टीकमगढ़, म.प्र.) जैन समाज ने भी एक लाख साठ हजार रु. के लगभग इस केन्द्र को आर्थिक सहयोग एवं अनेक पशु प्रदान किए हैं। श्री पपौराजी, टीकमगढ़ (म.प्र.) से 5 कि.मी. पूर्व की ओर स्थित है।

कपूर चन्द्र जैन 'बंसल'  
गोकुल सदन,  
जतारा (टीकमगढ़)

## चाँदखेड़ी में चँदाप्रभु के चमत्कार का पखवाड़ा और महामेला समाप्त

चाँदखेड़ी, 7 अप्रैल। झालावाड़ जिले के खानपुर कस्बे में स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चाँदखेड़ी के भूगर्भ से निकालकर दर्शनार्थ रखी गई तीनों अलौकिक प्रतिमाओं को आज सायं मुनि सुधासागर महाराज ने वापस वहीं रखवा दिया, जहाँ से वे इन्हें लेकर आये थे। चँदाप्रभु, अरिहन्त प्रभु और

पार्श्वनाथ स्वामी की ये तीनों प्रतिमाएँ स्फटिकमणि की बनी हुई, अत्यंत मनमोहक और अतिप्राचीन (चौथे काल की) हैं। इन प्रतिमाओं को 24 मार्च 2002 रविवार को किसी अदृश्य शक्ति की प्रेरणा से मुनि सुधासागर महाराज और उनका संघ इसी मंदिर के भूगर्भ से निकालकर लाये थे तथा उसी समय अपार जनसमूह को बता भी दिया था कि ये प्रतिमाएँ 7 अप्रैल तक दर्शनार्थ बाहर रहेंगी, इनके रक्षक देवों को इतने ही दिन का कहकर लाया हूँ।

इसके बाद 24 मार्च से ही यहाँ इन मूर्तियों के दर्शन करने वालों का ताँता लगा रहा और कई घंटे कतारों में लगने के बाद भी दर्शन न होने की स्थिति बनने पर मुनिश्री के निर्देश पर 2 अप्रैल को दिन में 1 बजे मंदिर के प्रवेशद्वार पर खुले स्थान में विराजमान किया गया।

इस दिन यहाँ करीब 75 हजार दर्शनार्थी पहुँचे थे, कारण मध्यप्रदेश में उस दिन रंगपंचमी का त्यौहार होने से छुट्टी का दिन था। इसके साथ ही उसी दिन मंदिर में प्रवेश एकदम सीमित कर दिया गया और चाँदखेड़ी पहुँचे लोगों को चँदाप्रभु की दिव्य प्रतिमाओं के दर्शन तो हुए, लेकिन मूलनायक आदिनाथ भगवान की अतिशयकारी प्रतिमा के दर्शन का मलाल रहा।

इसके बाद भी आज दिव्य प्रतिमाओं को वापस भूगर्भ में स्थापित किए जाने तक यहाँ अपार जन सैलाब उमड़ा रहा। पूरे देश भर से लोग यहाँ आये और चँदाप्रभु के दर्शन करके अपने जीवन को धन्य माना।

इन 15 दिनों में यहाँ विराट मेले की स्थिति बनी रही। प्रबंध कमेटी ने अपनी पूरी क्षमता यात्रियों को दर्शन, भोजन-पानी की व्यवस्था में लगाई। झालावाड़ क्षेत्र के जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन ने भी चमत्कार भरे इस पखवाड़े में पूरा सहयोग दिया। आज सुबह मुनिश्री के मंगल प्रवचन के बाद उनके सान्निध्य में सम्मान समारोह सुशील मोदी (मोदी इंजीनियरिंग) के मुख्य आतिथ्य में हुआ, जिसमें प्रशासन पुलिस और पत्रकारों का सम्मान किया गया। मुंगावली सेवा दल, अशोक नगर के नवयुवक मंडल, कुम्भराज के विद्यासागर नवयुवक मण्डल, खानपुर के नवयुवक मण्डल और महिला मण्डल के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया गया।

इतनी बड़ी तादाद में आए यात्रियों की भोजन-व्यवस्था को संभालने वाले चेतन जैन (ज्योति प्रेस) के सम्मान के वक्त पूरा पंडाल तालियों से गूँज उठा और मुनिश्री ने चेतन को आत्मीय आशीर्वाद दिया। इंजीनियर सतीश जैन का भी सम्मान किया गया। इन 15 दिनों में यह प्रतिनिधि भी चार बार चाँदखेड़ी गया और झालावाड़ से खानपुर के 35 किलोमीटर लम्बे मार्ग पर वाहनों की चैनसी बनी हुई दिखी और लोग अचंभित से लगे। इस मार्ग पर कई सैकड़ों स्थान हैं, लेकिन सभी जगह पुलिस तैनाती से यातायात सुचारु बना रहा। रोडवेज के कोटा, बांरा, झालावाड़ डिपो ने भी बसों की भरपूर व्यवस्था कर लोगों को चाँदखेड़ी पहुँचाने में मदद की। रास्ते के गोलाना, मण्डावर, बाधेर के स्कूली

छात्रों के मंडलों ने स्वेच्छा से यात्रियों को भीषण गर्मी में शीतल जल की व्यवस्था की।

यह सारा चमत्कार परमपूज्य मुनि सुधासागर महाराज का था, जिन्होंने बरसों से आस कर रहे भक्तों को चँदाप्रभु के साक्षात् दर्शन करा दिये।

आज दोपहर 2 बजे शांति मण्डल विधान हुआ और इसके बाद पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति को कस्तूरचंद दोतडा वाले, अरिहन्त प्रभु की मूर्ति को सुशील मोदी और चँदाप्रभु प्रतिमा को अमोलकचंद चूना वाला ने यथास्थान (गुप्तस्थान) विराजमान किया। इस अवसर पर संपूर्ण चाँदखेड़ी चँदाप्रभु और मुनि सुधासागर के जयकारे से गूँज उठा।

चाँदखेड़ी प्रबंध कमेटी के महामंत्री महावीर प्रसाद जैन ने बताया कि चमत्कारी पखवाड़ा समाप्त हो गया है और लोग चँदाप्रभु की सूरत दिल में बिठाये लौटने लगे हैं।

महावीर प्रसाद जैन  
महामंत्री

## वाग्भारती पुरस्कार की घोषणा

युवा विद्वानों व नव प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने की मूल भावना से स्थापित वाग्भारती पुरस्कार की घोषणा कर दी गयी है। वर्ष 2002 का वाग्भारती पुरस्कार डॉ. श्रीमती उज्ज्वला सुरेश गोसवी (जैन), औरंगाबाद को तथा वर्ष 2001 का पुरस्कार पं. श्री पवन कुमार जैन 'दीवान' शास्त्री, मुर्ना को प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। पुरस्कार में 11,111/- रु. की राशि, प्रतीक चिह्न, अभिनन्दन वस्त्र आदि भेंट किया जाता है तथा इसकी स्थापना डॉ. सुशील जैन मैनपुरी, द्वारा वर्ष 98 में पू. मुनि श्री प्रज्ञा सागर जी, प्रसन्नसागर जी महाराज के सान्निध्य में की गयी थी। वर्ष 98 का पुरस्कार पं. शैलेन्द्र जैन, बीना; 99 का पुरस्कार डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती' बुरहानपुर को प्रदान किया गया था। डॉ. श्रीमती उज्ज्वला को यह पुरस्कार पू. मुनि श्री प्रज्ञासागर जी के सान्निध्य में श्रुतपंचमी पर्व पर राँची में तथा पं. पवन कुमार जी को यह पुरस्कार 1 सितम्बर को प्रदान किया जाएगा।

वर्ष 2002 के लिए नाम पुनः सादर आमंत्रित है। विद्वान की आयु 40 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए तथा वह पर्व पर प्रवचनार्थ अवश्य जाते हों।

डॉ. सौरभ जैन (मंत्री)  
वाग्भारती ट्रस्ट

## मेधावी छात्रा श्रद्धा जैन

कु. श्रद्धा जैन, मैनपुरी ने एम.एस.सी. (वनस्पति विज्ञान) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण कर गौरवशाली स्थान प्राप्त किया। कु. श्रद्धा जैन ने दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा से यह परीक्षा 76.3% अंकों से उत्तीर्ण की है। कु. श्रद्धा जैन, जैन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान एवं चिकित्सक डॉ. सुशील जैन की सुपुत्री हैं। इस शुभ अवसर पर डॉ. सुशील जैन के निवास पर आयोजित कार्यक्रम में अनेक लोगों ने उपस्थित होकर उनकी

इस सफलता पर बधाई देते हुए पुरस्कृत किया।

डॉ. सौरभ जैन,  
मैनपुरी

## डॉ. अनुपम जैन “जैन राष्ट्र गौरव” पदवी से अलंकृत

भगवान् महावीर के 2600वें जन्म जयन्ती महोत्सव वर्ष की समापन बेला पर कोलकाता में इन्दौर के विशिष्ट प्रतिभावान युवा विद्वान् होल्कर महाविद्यालय के गणित प्राध्यापक एवं कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के मानद् सचिव डॉ. अनुपम जैन को ‘जैन राष्ट्र गौरव’ की पदवी से अलंकृत किया गया।

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन प्रतिभा सम्मान समारोह समिति कोलकाता द्वारा विज्ञान नगरी सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में डॉ. अनुपम जैन को राष्ट्र एवं समाज निर्माण में जैन गणित की विधा में विशिष्ट उपलब्धि हेतु उक्त सम्मान प्रदान किया गया। इस हेतु उन्हें प्रतीक चिह्न (अष्ट धातु का मानस्तम्भ), काष्ठांकित प्रशस्ति पत्र तथा शाल, श्रीफल आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।

डॉ. जैन सहित संपूर्ण देश के कला, संस्कृति, पुरातत्त्व, विद्वान, पत्रकार, लेखक, कवि, गीत-संगीतकार, वैज्ञानिक, चिकित्सक व चित्रकार आदि विभिन्न विशिष्ट चयनित प्रतिभावान 26 जैन पुरुष/महिलाओं को भी सम्मानित किया गया।

समारोह के प्रमुख अतिथि पश्चिम बंगाल के पर्यटन व संस्कृति मंत्री श्री सुभाष चक्रवर्ती तथा विशिष्ट अतिथि झारखण्ड के जल संसाधन मंत्री श्री रामचन्द्र केसरी थे। समारोह में देश के शीर्षस्थ विद्वान व समाजसेवीगण बड़ी संख्या में सम्मिलित थे। सभा का संचालन संयोजक श्री चिरंजीलाल बगड़ा ने किया।

डॉ. जैन की इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर नगर के समाजसेवी पदाश्री बाबूलाल पाटौदी, श्री देवकुमारसिंह कासलीवाल, श्री हीरालाल झांझरी, श्री कैलाश वेद, श्री माणिकचन्द्र पाटनी, श्री कैलाशचन्द्र चौधरी, श्री प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल, श्री अशोक बड़जात्या, प्राचार्य श्री नरेन्द्र धाकड़, श्री जयसेन जैन व श्री रमेश कासलीवाल आदि ने हार्दिक बधाइयाँ दी हैं।

जयसेन जैन  
प्रचार सचिव

## डॉ. भागेन्दु “जैन राष्ट्र गौरव” अलंकरण से विभूषित

साइंस सिटी आडोटोरियम कोलकाता में सम्पन्न एक भव्य समारोह में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन प्रतिभा सम्मान समारोह समिति कोलकाता की ओर से रीठी (कटनी) में 2 अप्रैल 1937 को जन्मे प्रोफेसर डॉ. भागेन्दु जी (भागेन्दु) को सर्वश्रेष्ठ विद्वत्ता के लिए “जैन राष्ट्र गौरव” अलंकरण से विभूषित किया गया।

“जैन राष्ट्र गौरव” अलंकरण डॉ. भागेन्दु जी जैन को उनकी अतिविशिष्ट विद्वत्ता तथा राष्ट्र एवं समाज निर्माण में अग्रणी भूमिका का निर्वहण करने के उपलक्ष्य में समर्पित किया गया।

उन्हें चन्दन पर उत्कीर्ण प्रशस्तिपत्र तथा अष्टधातु से निर्मित मनमोहक ‘प्रतीक’ एवं सम्माननिधि समर्पित कर भगवान् महावीर स्वामी के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया है।

स्थानीय गणमान्य नागरिकों, शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों तथा विभिन्न संस्थाओं ने भी डॉ. जैन को इस अलंकरण से विभूषित किए जाने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए बधाइयाँ समर्पित कर अभिनन्दित किया है।

वीरन्द्र कुमार इटोरिया,  
अध्यक्ष, जैन पंचायत, दमोह

## कुण्डलपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

भगवान् महावीर स्वामी के 2600वें जन्म जयन्ती वर्ष एवं जैन मनीषी, मूर्धन्य विद्वान्, राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत स्व.पं.(डॉ.) पन्नालाल जैन साहित्याचार्य, सागर की प्रथम पुण्यतिथि के प्रसंग पर नवीन प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन सर्वोदय जैन विद्यापीठ, सागर के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर, दमोह में 28 एवं 29 मार्च 2002 को किया गया। इस संगोष्ठी में अनेक प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों, अतिथि एवं श्रोताओं ने इस संगोष्ठी से भरपूर लाभ लेते हुए इस प्रकार के आयोजनों की प्रति वर्ष योजना करने की माँग की।

संगोष्ठी का प्रथम एवं उद्घाटन सत्र दोपहर 2 बजे आरंभ हुआ। कुण्डलपुर के विद्याभवन नामक विशाल सभागार में भव्य साज-सज्जा से सुशोभित मंच पर जनाराध्य बड़े बाबा के साथ छोटे बाबा (आचार्य विद्यासागर जी महाराज) के भव्यचित्र प्रतिनियोजित किये गए थे। इसके साथ स्व. पं. पन्नालाल साहित्याचार्य की, अपनी लेखनी से जीवन्त करने वाली प्रतिच्छवि भी वहाँ स्थान पा रही थी।

सत्रारम्भ में वरिष्ठ समाजसेवी एवं विचारक श्री विजयकुमार मलैया, दमोह ने अध्यक्षता तथा प्रसिद्ध चिकित्सक एवं समाजसेवी व राजनेता डॉ. जीवनलाल जैन, सागर ने अतिथि का आसन ग्रहण किया। तदनन्तर सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. रतनचन्द्र जैन, भोपाल एवं डॉ. भागेन्द्र भागेन्दु, दमोह ने विषय-विशेषज्ञ के कार्यों का सम्पादन किया।

दीप प्रज्वलन एवं चित्रानावरण के अनन्तर डी.राकेश जैन सर्वोदय जैन विद्यापीठ एवं डॉ. पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य का परिचय देते हुए संगोष्ठी के विषय का प्रवर्तन किया। आपने बताया कि सर्वोदय जैन विद्यापीठ उच्चशिक्षा एवं सांस्कृतिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनाने के संकल्प के साथ उदित हुई है, जिसमें निरन्तर इस प्रकार की गतिविधियों का संचालन होता रहेगा। विषयप्रवर्तन में जैन संस्कृति एवं साहित्य की वर्तमान दशा एवं उसमें निहित अनन्त संभावनाओं को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि इन पर अनुसन्धान करने से जैन वाङ्मय के अवदान को

भारतीय संस्कृति के सम्पूर्ण क्षेत्रों में निर्धारित किया जा सकता है।

संगोष्ठी में जबलपुर से पधारे प्रथम वक्ता श्री सतीश जैन 'नवल' ने जैन संस्थाओं एवं तीर्थों की स्थिति के विषय में अपने आलेख का वाचन किया। प्रथम सत्र में 5 आलेखों का वाचन किया गया, जिनमें ब्र. धर्मेन्द्र जैन, उदयपुर (राजस्थान), कु. रजनी जैन, छतरपुर, श्रीमती डॉ. अल्पना जैन, ग्वालियर एवं डॉ. राजुल जैन, टीकमगढ़ ने आलेख वाचन किये। पठित पत्रों की समीक्षा डॉ. रतनचन्द्र जैन, भोपाल एवं डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु ने की। मुख्य अतिथि डॉ. जीवनलाल जैन ने अपने उद्बोधन में पं. पन्नालाल की 72 वर्षीय निःस्वार्थ साहित्यिक एवं शैक्षिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें रामायण के निःस्वार्थ सेवक हनुमान की उपमा दी।

29 मार्च को प्रातः 9 बजे से द्वितीय सत्र आयोजित किया गया। इसमें पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया, किशनगढ़ ने अध्यक्ष एवं कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी के वरिष्ठ सदस्य वीरेश सेठ ने अतिथि का आसन ग्रहण किया। इस सत्र में कु. श्वेता जैन छतरपुर, रजनीश शुक्ल उदयपुर, कु. अमिता जैन सागर, कु. शशिकिरण जैन पन्ना (शोधछात्रा) श्रीमती कल्पना जैन जबलपुर और डॉ. दीपक जैन टीकमगढ़ ने अपने आलेखों का वाचन किया।

दोपहर को अन्तिम (तृतीय) एवं समापन सत्र 2 बजे आरंभ हुआ। इसमें डॉ. नीलम जैन दमोह, डॉ. हेमलता जोहरापुरकर नागपुर, डॉ. संगीता मेहता इन्दौर, डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन टीकमगढ़, शोधछात्रा कु. रश्मि जैन बीना एवं डॉ. सत्येन्द्र जैन सागर ने आलेखों को प्रस्तुत किया। आलेख वाचन के बाद विनयांजलि सभा आरंभ हुई, जिसमें अनेक वक्ताओं ने श्रद्धेय पं. जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सिंघई संतोषकुमार जैन, पं. मूलचन्द्र लुहाड़िया, प्रकाशचन्द्र नैनधरा एवं चौधरी रूपचन्द्र आदि सभी उपस्थित सज्जनों ने सामूहिक रूप से पुण्यस्थल पर उपस्थित हो श्रद्धासुमन समर्पित किए।

कार्यक्रम का सुव्यवस्थित संयोजन डॉ. राकेश जैन, सागर एवं संचालन डॉ. अजितकुमार जैन, सागर ने किया। यद्यपि आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया, किन्तु उपस्थित महानुभावों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों ने ऐसे कार्यक्रम को प्रति वर्ष आयोजित करते रहने की आवश्यकता को महसूस किया।

## श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर द्वारा संचालित आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास का पंचवर्षीय युग समारोह सम्पन्न

जयपुर, 24 मार्च। सराकोद्वारक उपाध्यक्ष मुनिश्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज के ससंघ पावन सान्निध्य में संस्थान द्वारा संचालित आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास का पंचवर्षीय युग समारोह आयोजित किया गया।

समारोह का प्रारंभ छात्रावास के छात्रों द्वारा मंगलाचरण से

किया गया एवं भगवान् आदिनाथ स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन का कार्य समारोह के मुख्य अतिथि श्रेष्ठी श्री भँवरलाल जी सरावगी द्वारा सम्पन्न हुआ। संस्थान के अध्यक्ष श्री गणेश कुमार राणा द्वारा आगन्तुक सभी अतिथियों व उपस्थित महानुभावों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया गया। तत्पश्चात् अध्यक्ष श्री गणेश कुमार राणा, मानद मंत्री महावीर प्रसाद पहाड़िया एवं प्रबन्ध समिति के अन्य सदस्यों द्वारा समारोह के अध्यक्ष माननीय श्री रामदास जी अग्रवाल (भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं सांसद), मुख्य अतिथि श्रेष्ठी भी भँवरलाल जी सरावगी, विशिष्ट अतिथि जयपुर के सांसद श्री गिरधारी लाल भार्गव एवं अन्य विशिष्टजनों का तिलक, माल्यार्पण एवं शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

छात्रावास को अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ देने एवं उच्चस्तरीय विद्वान तैयार करने में अपना अमूल्य योगदान देने के लिये संस्थान द्वारा अधिष्ठाता श्री रतनलाल जी बैनाड़ा एवं संस्थान के निदेशक डॉ. शीतलचन्द्र जी जैन का तिलक, शाल, माला व चाँदी का प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मान किया गया।

संस्थान के 5 वर्ष के पाठ्यक्रम को पूरा कर जो छात्र श्रमण संस्कृति रक्षक विद्वान के रूप में तैयार हुए हैं, उन सबका भी संस्थान द्वारा चाँदी से निर्मित प्रशस्तिपत्र, शाल व प्रतीक चिह्न भेंट कर स्वागत किया गया। श्री उत्तमचन्द्र जी पांड्या द्वारा ग्रन्थ भेंट किए गए। विदा होने वाले छात्रों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले छात्रों को श्री चन्द्रकांत, हीराचन्द्र शाह बारामती द्वारा पुरस्कार देने की घोषणा की गई। सम्मान व अभिनन्दन समारोह के पश्चात् उपअधिष्ठाता श्री राजमल बेगस्या ने संस्थान का पंचवर्षीय युग प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें 5 वर्ष की संस्थान की सभी तरह की गतिविधियों का विस्तृत लेखा-जोखा दिया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा "पंचवर्षीय युग प्रतिवेदन" स्मारिका का विमोचन भी करवाया गया। मंचासीन अतिथिगणों द्वारा अपने उद्बोधन में संस्थान की प्रगति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई। विशिष्ट अतिथि श्री गिरधारी लाल जी भार्गव सांसद ने अपने कोटे से पूर्व में ही 6 लाख रुपये देकर संस्थान के सामने गन्दे नाले को पाटने की स्वीकृति प्रदान की थी। इस राशि में यह कार्य अधूरा रह जाने पर और धनराशि उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया। समारोह के अध्यक्ष श्री रामदास जी अग्रवाल संस्थान के उद्देश्यों से काफी प्रभावित हुए और इसे देश की अद्वितीय संस्था बताते हुए हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

दिगम्बर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने भी संस्थान के कार्यों की प्रशंसा की। मंच संचालन डॉ. शीतलचन्द्र जी जैन ने किया। अन्त में उपाध्यक्ष मुनिश्री 108 ज्ञानसागर महाराज ने अपने आशीर्चन में कहा कि सैंकड़ों प्रतिष्ठाएँ करवाने के बजाए एक विद्वान तैयार करने में अधिक पुण्य प्राप्त होता है। उन्होंने संस्थान द्वारा आयोजित इस पंचवर्षीय युग सम्पन्न



समारोह की सराहना करते हुए विद्वान छात्रों को कहा कि वे अपना आत्मसम्मान रखते हुए स्वाभिमान के साथ जिनवाणी की रक्षा व प्रचार-प्रसार करें।

इस संस्थान को आपने भूमण्डल की अमूल्य धरोहर बताया एवं छात्रों व उपस्थित समुदाय को अपना भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह में प्रमुख रूप से दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी, समाचार जगत के सम्पादक श्री राजेन्द्र कुमार जी गोधा, श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जी सेठी, शास्त्री परिषद् के महामंत्री डॉ. जयकुमार जी जैन, डॉ. प्रेमचन्द्र जी जैन 'सुमन्त', डॉ. विजय कुमार जी जैन व समाज के अन्य गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे। सभी आगन्तुक अतिथियों एवं उपस्थित सभी महानुभावों का मानद मंत्री श्री महावीर प्रसाद पहाड़िया ने धन्यवाद ज्ञापित किया व संस्थान को हमेशा सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया।

महावीर प्रसाद जैन  
मंत्री, श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान  
छात्रावास, सांगानेर (जयपुर)

## प.पू. गणिनी आर्यिका 105 सुपार्श्वमती माताजी का 74वाँ जन्म जयंती महोत्सव

दि. 23.3.2002 फाल्गुन शुदि 9 शनिवार श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र पालीताणा में धर्मध्यानपूर्वक उत्साह से प. पू. गणिनी आर्यिका 105 श्री सुपार्श्वमती माताजी का 74वाँ जन्म जयंती महोत्सव कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## शाजापुर नगर में जैन विद्या ( जैनोलॉजी ) में बी.ए./एम.ए./पी-एच.डी. डिग्री पाठ्यक्रमों के अध्ययन की सुविधा का सुअवसर

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के भूतपूर्व निदेशक, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन विद्वान डॉ. सागरमलजी सा. ने जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में अध्ययन-अध्यापन, शोधकार्य व ज्ञान-ध्यान साधना करने के लिये शाजापुर नगर की प्रदूषण रहित प्राकृतिक सुरम्य वातावरण वाली दुपाड़ा रोड पर प्राच्य विद्यापीठ की स्थापना की है, जिसका विशाल एवं सुंदर भवन तैयार हो गया है। इस विद्यापीठ को वर्ष 2002 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से भी मान्यता प्राप्त हो गई है। फलतः इस विद्यापीठ से शोधार्थी के रूप में जैन, बौद्ध व हिन्दू धर्म और दर्शन से संबंधित किसी भी विषय पर शोध प्रबन्ध तैयार कर उसे विक्रम विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की जा सकती है। इस भवन में 7 सुसज्जित अध्ययन-अध्यापन हॉल, किचन व स्टोर्स तथा प्रसाधन की समुचित व्यवस्था है। इस भवन में एक सुसज्जित पुस्तकालय है, जिसमें 10,000 के करीब पुस्तकें, पत्रिकाएँ एवं पुरानी पाण्डुलिपियाँ हैं, जिन पर शोध कार्य अपेक्षित है।

डॉ. सागरमलजी के शाजापुर नगर में निवासरत होने व इस विद्यापीठ की स्थापना के फलस्वरूप जैन विश्वभारती संस्थान लाडनू-राज. (मान्य विश्वविद्यालय) ने अपने द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रमों के लिये अध्ययन एवं परीक्षा केन्द्र के रूप में प्राच्य विद्यापीठ को मान्यता प्रदान की है, जो शाजापुर के नागरिकों के लिये बड़े सौभाग्य की बात है। यही कारण है कि अब शाजापुर नगर एवं उसके आसपास के स्थानों में रहने वाले नागरिकगण प्राच्य विद्यापीठ के पुस्तकालय का लाभ लेकर डॉ. सागरमलजी सा. के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में जैन विद्या में बी.ए./एम.ए. डिग्री पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होकर प्राच्य विद्यापीठ केन्द्र से परीक्षा दे सकते हैं। इन डिग्रियों का रोजगार इत्यादि की दृष्टि से वही उपयोग है, जो अन्य विषयों से संबंधित डिग्रियों का है। जैनविद्या में बी.ए./एम.ए. डिग्री पाठ्यक्रमों के आवेदन-पत्र जुलाई 2002 में भरे जा सकते हैं। इस संबंध में यदि आप कोई भी जानकारी प्राप्त करना चाहें तो डॉ. सागरमलजी सा. (फोन नं. 07364-27425) या डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन (फोन नं. 07364-26153) शाजापुर से प्रत्यक्ष रूप से या फोन पर संपर्क स्थापित कर सकते हैं। वर्तमान समय में विद्यापीठ के पुस्तकालय का लाभ लेकर डॉ. सा. के मार्गदर्शन में शाजापुर नगर में 2 छात्र/छात्रा जैन विद्या में एम.ए. पूर्वाह्न, 9 छात्र-छात्राएँ एम.ए. उत्तराह्न में अध्ययनरत हैं। इसके अतिरिक्त, तीन जैन साध्वियाँ जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू से पी-एच.डी. की उपाधि के लिये अपना शोध प्रबन्ध तैयार कर रही हैं तथा 2 छात्रों ने विक्रम विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की डिग्री हेतु पंजीयन कराने के लिये आवेदन किया है साथ ही विद्यापीठ में प्रति सप्ताह गुरुवार को रात्रि के 8:30 बजे डॉ. सागरमल जी के मंगल प्रवचन एवं ध्यान साधना का कार्यक्रम चल रहा है।

## विद्यावारिधि ( पी-एच.डी. ) उपाधि से अलंकृत

श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत् परिषद् के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली जैन समाज के लोकप्रिय युवा विद्वान श्री अशोक कुमार जैन (गोइल्ल) बंडा, जि. सागर (म.प्र.) को "आचार्य कुन्दकुन्द विरचित ग्रन्थों का सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली से 17 फरवरी 2002 को दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ. हरि गौतम जी के कर कमलों से विद्यावारिधि पी-एच.डी. की उपाधि से अलंकृत किया गया है। उन्होंने अपना शोधकार्य डॉ. सुदीप जैन के निर्देशन में भरपूर श्रम एवं निष्ठा के साथ गरिमापूर्वक सम्पन्न किया है। "हार्दिक बधाई"

डॉ. सत्यप्रकाश जैन, दिल्ली

## भगवान् महावीर पर अखिल भारतीय निबंध

### प्रतियोगिता 2002

परमपूज्य, गणिनी प्रमुख, आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती

माताजी की प्रेरणा से स्थापित तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ जम्बूद्वीप हस्तिनापुर द्वारा एक अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। निबंध प्रतियोगिता का विषय होगा - "भगवान् महावीर की जन्मस्थली कुण्डलपुर (नालंदा) या वैशाली ? दिगम्बर जैन आगम के परिप्रेक्ष्य में" निबंध प्रतियोगिता के नियम निम्नानुसार होंगे-

(1) प्रतियोगिता समस्त आयु वर्ग के बालक/बालिका अथवा महिला/पुरुषों के लिए खुली है। जैन या जैनेतर कोई भी सम्मिलित हो सकता है।

(2) निबंध कम से कम (फुल स्केप आकार के) 4 पृष्ठों में होना चाहिए।

(3) निबंध टंकित अथवा सुवाच्य अक्षरों में पृष्ठ के एक ओर ही लिखा जाना आवश्यक है।

(4) प्रस्तुत विषय पर अपना पक्ष ठोस आधार पर पुष्ट प्रमाणों सहित प्रतिपादित करने का प्रयास करें। समस्त सन्दर्भ लेख के अन्त में दें।

(5) निबंध भेजने की अंतिम तिथि 30 जून 2002 निश्चित की गई है। निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त होने वाले निबंध, प्रतियोगिता में सम्मिलित करना संभव नहीं होगा।

(6) प्राप्त निबंधों का मूल्यांकन प्रतिष्ठित विद्वानों के दल द्वारा किया जावेगा। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगीगणों को क्रमशः 5000/-, 3000/- व 2000/- रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। सांत्वना पुरस्कारों की भी व्यवस्था है।

(7) महासंघ द्वारा गठित निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

(8) प्रतियोगिता के विषय में नियमों को संशोधित/परिवर्तित/परिवर्द्धित करने अथवा स्थगित करने एवं अन्य समस्त विषयों में महासंघ का निर्णय अन्तिम एवं बन्धनकारी होगा।

(9) निबंध के मुखपृष्ठ पर प्रतियोगी का पूरा नाम एवं पता अंकित किया जाना चाहिए। निबंध संयोजक के पते पर इन्दौर ही भेजे जाने चाहिए।

**संयोजक द्वय :** 1. जयसेन जैन, 201, अमित अपार्टमेन्ट, 1/1, पारसी मोहल्ला, छावनी, इन्दौर-452 001, (म.प्र.), सम्पर्क: 0731-700020।

2. डॉ. अभय प्रकाश जैन N-14, चेतकपुरी, ग्वालियर-474009, सम्पर्क :- 0751-324392।

जयसेन जैन

## अ.भा.दिगम्बर जैन ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र

अजमेर, 4 मई 2002। संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज संसंध को श्री सिद्धकूट चैत्यालय सोनीजी की नसियां में होने वाले जीर्णोद्धार एवं यहाँ पर स्थित जैन विश्व के सबसे बड़े मानस्तम्भ के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

32 मई 2002 जिनभाषित

(महामस्तकाभिषेक) तथा इनके आशीर्वाद से नवनिर्मित दिगम्बर जैन ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र में पधारने हेतु श्रेष्ठी श्री निर्मलचंद सोनी, केन्द्रीय उपाध्यक्ष, महासभा एवं ट्रस्टी श्री सिद्धकूट चैत्यालय, युवा ट्रस्टी श्री प्रमोद चंद सोनी, भागचन्द गदिया अध्यक्ष ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र कमेटी, ज्ञानचंद जैन किरण बेटरी अध्यक्ष, जैसवाल जैन समाज के अलावा ब्यावर, मदनगंज, नसीराबाद, केकडी आदि अजमेर जिले के धर्मानुरागी बन्धुओं के एक शिष्टमंडल ने आचार्य श्री को नसुरल्लागंज (म.प्र.) में श्रीफल समर्पित किया एवं आचार्य श्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री संसंध में करीबन 45 पीच्छिकाएँ साथ में हैं।

इसी शिष्ट मण्डल ने चाँदखेड़ी में विराजित प.पू. मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज संसंध को भी उपर्युक्त कार्यों के लिये अजमेर पधारने एवं सान्निध्य प्रदान करने हेतु श्रीफल समर्पित किया। दिनांक 3 मई को प्रभात में मुनिश्री के पावन सान्निध्य में चाँदखेड़ी वाले बाबा भगवान आदिनाथ के मंगल कलश एवं मुनि श्री के श्रीमुख से वृहद् शान्तिधारा का सौभाग्य अर्जित किया। प्रथम कलश करने का सौभाग्य अजमेर के श्री दुलीचन्द कोहले भंडारी ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र ने अर्जित किया।

सहप्रचार प्रसार संयोजक हीराचन्द्र जैन ने बतलाया कि आचार्यश्री संसंध आज दिनांक 4 मई को सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर पहुँच गए हैं और ग्रीष्मकालीन वाचना हेतु करीब दो माह तक वहीं विराजित रहेंगे। बाहर से पधारने वालों के लिये आवास व भोजन की सुव्यवस्था वहीं पर उपलब्ध है।

हीराचन्द्र जैन

सहप्रचार प्रसार संयोजक

## अहिंसा रंगोली


भगवान् महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर लोक कला संस्थान के श्री संजय सेठी ने ऋषभदेव भगवान के सामने चित्ताकर्षक अहिंसा रंगोली में जैन दर्शन एवं भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को रेखांकित करने के लिये 25 दीपक, 206 काष्ठ के चम्मच, 2600 माचिस की तिलियाँ एवं 26000 चावल के दानों का इस्तेमाल किया गया। इस रंगोली को देखने के लिये अपार जनसमूह एकत्रित हुआ एवं सभी ने इसकी भारी प्रशंसा की।


हीराचन्द्र जैन


## मुहारा में भगवान् आदिनाथ जन्मोत्सव आयोजित

जतारा (टीकमगढ़ म.प्र.)। संत शिरोमणि, प्रातः स्मरणीय परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य परमपूज्य ऐलक श्री नम्रसागर जी महाराज के मंगलमय सान्निध्य में जतारा के निकट स्थित ग्राम मुहारा में दिनांक 6.4.2002 (चैत्र कृष्णा 9, शनिवार) को जैन जगत के प्रथम तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ का जन्म जयंती समारोह मुहारा जैन समाज के तत्त्वावधान में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया।

# खाद्य पदार्थों पर चिह्न बनाना अनिवार्य

केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा 'भारत के राजपत्र' (असाधारण, 20 दिसम्बर 2001) में सा. का. नि. 908 (अ) क्रमांक पर अधिसूचना प्रकाशित कराई गई है, जो 'खाद्य अपमिश्रण निवारण (नवां संशोधन) नियम, 2001' नामक नियम शाकाहारी खाद्य पदार्थों से संबंधित है। इसमें 'शाकाहारी खाद्य' को भी परिभाषित किया गया है। इसके अनुसार अब शाकाहारी खाद्य के प्रत्येक पैकेज पर खाद्य पदार्थ के नाम या ब्राण्ड नाम के बिल्कुल निकट मुख्य प्रदर्शन पैनल पर हरे रंग (ग्रीन कलर) से प्रतीक चिह्न बनाया जायेगा। वृत्त के व्यास से दुगने किनारे वाली हरे रंग (ग्रीन कलर) की बाह्य रेखा वाले वर्ग के भीतर हरे रंग से भरा हुआ वृत्त बनाया जाएगा, जिसके कारण वह खाद्य पदार्थ शाकाहारी खाद्य है, यह जाना-समझा जा सकेगा। 20 जून 2002 से प्रभावशाली होने वाले इस नियम में यह प्रतीक चिह्न  हरे (ग्रीन कलर) से बनाया जाएगा।

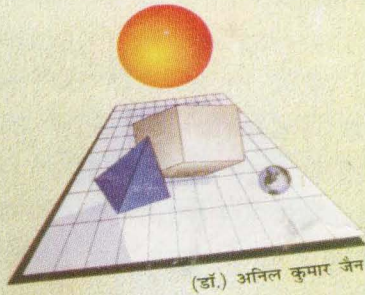
स्मरणीय है कि इससे पहले केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली ने 'भारत के राजपत्र' (असाधारण, 4 अप्रैल 2001) में सा. का. नि. 245 (अ) अधिसूचना प्रकाशित कराई थी। इस अधिसूचना में 'खाद्य अपमिश्रण निवारण (चौथा संशोधन) नियम, 2000' रूप में 'मांसाहारी खाद्य' पदार्थ को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया गया था कि "जिसमें एक संघटक के रूप में पक्षियों, ताजे जल अथवा समुद्री जीव-जन्तुओं अथवा अंडों सहित कोई समग्र जीव-जन्तु या उसका कोई भाग अथवा जीव-जन्तु मूल का कोई उत्पाद अन्तर्विष्ट होगा तो वह 'मांसाहारी खाद्य' माना जाएगा, किन्तु इसके अन्तर्गत दूध या दूध से बने हुए पदार्थों को मांसाहारी खाद्य नहीं माना जावेगा।" वह पदार्थ मांसाहारी खाद्य है, इस हेतु प्रत्येक पैकेज पर खाद्य पदार्थ के नाम या ब्राण्ड नाम के बिल्कुल नजदीक मुख्य प्रदर्शन पैनल पर वृत्त के व्यास से दुगने किनारे वाली बाह्य रेखा वाले वर्ग के भीतर एक वृत्त  होगा, जो भूरे रंग (ब्राउन कलर) का होगा।

ध्यातव्य है कि आम उपभोक्ता वर्ग को खाद्य पदार्थ खरीदते समय अब मांसाहारी खाद्य पदार्थ पर भूरे रंग (ब्राउन कलर) वाला तथा शाकाहारी खाद्य पदार्थ पर हरे रंग (ग्रीन कलर) वाला प्रतीक चिह्न देखकर खरीददारी करनी होगी। दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थों पर प्रतीक चिह्न  एक-सा ही बना होगा, मात्र भूरे रंग (ब्राउन कलर) एवं हरे रंग (ग्रीन कलर) की भिन्नता ही उनके मांसाहारी या शाकाहारी खाद्य होने का अंतर करा सकेगी।

मांसाहारी या शाकाहारी खाद्य पदार्थों में यह प्रतीक चिह्न मूल प्रदर्शन पैनल पर विषम पृष्ठभूमि वाले पैकेज पर तथा लेबलों, आधानों (कन्टेनर्स), पम्पलेट्स, इश्तहारों या किसी भी प्रकार के प्रचार माध्यम आदि के विज्ञापनों में उत्पाद के नाम अथवा ब्राण्ड नाम के बिल्कुल नजदीक प्रमुख रूप से प्रदर्शित करना होगा। विनिर्माता, पैककर्ता अथवा विक्रेता को प्रचार माध्यमों में 100 सें.मी. वर्ग तक 3 मि.मी. न्यूनतम व्यास आकार वाले; 100 से 500 सें.मी. वर्ग तक 4 मि.मी., 500 से 2500 सें.मी. वर्ग तक 6 मि.मी. एवं 2500 सें.मी. वर्ग से ऊपर मूल प्रदर्शन पैनल क्षेत्र वालों पर 8 मि.मी. न्यूनतम व्यास आकारवाले प्रतीक चिह्न का निर्माण उचित स्थान पर कराना होगा।

उपभोक्ता वर्ग से अपेक्षा की जाती है कि खाद्य पदार्थ खरीदते समय इस भूरे रंग (ब्राउन कलर) या हरे रंग (ग्रीन कलर) वाले प्रतीक चिह्नों को देखकर ही खाद्य पदार्थ खरीदें। जिन उत्पादकों आदि ने ये चिह्न अपने उत्पादों पर नहीं बनाये हों, उन्हें चेतावनी देवें तथा सक्षम अधिकारियों को भी अपनी शिकायत दर्ज कराकर अपने अधिकारों की सुरक्षा किये जाने की माँग प्रस्तुत करें। साथ ही केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, 150-ए, निर्माण भवन, नई दिल्ली के पते पर लिखकर मांसाहारी एवं शाकाहारी खाद्य पदार्थों पर रंगों की भिन्नता के बावजूद भी चिह्न की समानता होने से उपभोक्ता वर्ग के भ्रमित होने की संभावना का ज्ञान कराते हुए 'मांसाहारी खाद्य' (NON VEGETARIAN FOOD) या शाकाहारी खाद्य (VEGETARIAN FOOD) हिन्दी/अंग्रेजी में भी प्रतीक चिह्न के साथ ही अनिवार्य रूप से लिखे जाने की माँग प्रेषित करें।

## जीवन क्या है?



(डॉ.) अनिल कुमार जैन

## जीवन क्या है ?

जीव-विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने बहुत अधिक खोज की है। जैनेटिकल इंजीनियरिंग, क्लोनिंग तथा जैनोम जैसी नयी खोजों ने आज आम आदमी को आश्चर्य में डाल दिया है। इन सब के बावजूद भी अभी वैज्ञानिकों के सामने अनुत्तरित रहस्यों की कमी नहीं है। बुढ़ापा तथा मृत्यु क्यों आती है? पृथ्वी पर जीवन का प्रारम्भ कब और कैसे हुआ? जीवन कहां से आया? आखिर जीवन है क्या? आज कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका विज्ञान के पास कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि इन विषयों पर जैनदर्शन में काफी प्रकाश डाला गया है। डॉ. अनिल कुमार जैन ने अपनी पुस्तक “जीवन क्या है” में जैनदर्शन और आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भ में ऐसे ही कुछ अनुत्तरित प्रश्नों का समाधान तलाशने की कोशिश की है। इस पुस्तक से जीव-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को भी कुछ और नया चिंतन प्रस्तुत करने की प्रेरणा

किताब - जीवन क्या है ?

लेखक - डॉ. अनिल कुमार जैन

प्रकाशक - विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली

मूल्य - 30 रूपये मात्र

प्राप्ति स्थान - श्री एस.एल. जैन, संरक्षक, मैत्री समूह  
ई-2/161, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016.

## भक्ति गीत

इन दिनों जब भजनों के नाम पर फिल्मी धुनों पर बजते गीतों की भरमार है, ऐसे में “भक्ति गीत” एक अनूठा प्रयास है।

आचार्यश्री विद्यासागर के परम शिष्य मुनिश्री क्षमासागर जी की प्रेरणा से तैयार भजनों का कैसेट “भक्ति गीत” में आध्यात्मिक भजनों को शामिल किया गया है। यह कैसेट मैत्री समूह की विनम्र प्रस्तुति है। “भक्ति गीत” में भागचंदजी, भूधरदासजी, दौलतरामजी एवं भैयाजी के द्वारा रचित भजनों को लिया गया है। इन भजनों को अजय सारस्वत, डॉ. रवि भटनागर और प्रेरणा केशव ने स्वर दिये हैं। संगीत निर्देशन डॉ. रवि भटनागर ने किया है। सुगम संगीत की धारा में परम्परागत भजन “अब मेरे समकित सावन आयो”, “जो जो देखी वीतराग ने”, “भगवन्त भजन क्यों भूला रे”, “हम तो कबहुँ न निज घर आये” आदि मधुर प्रस्तुति हैं।

कैसेट - भक्ति गीत

प्रस्तुति - मैत्री समूह

मूल्य - 25 रूपये मात्र

प्राप्ति स्थान - पन्नालाल बैनाड़ा

1/205, प्रोफेसर कॉलोनी, आगरा - 282002

